❖ धर्म के गीत

❖ श्री धर्मेशमुनिजी म.सा

❖ प्रथम संस्करण : अप्रेल, 2010, 3100 प्रतियाँ

❖ मूल्य . 15/-

❖ अर्थ-सहयोगी :
श्री सुन्दरलालजी सिपाणी-बैंगलोर

❖ प्रकाशक :
श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर- 334005 (राज)
दूरभाष · 0151-2544867, 3292177, 2203150 (Fax)

❖ आवरण सज्जा व मुद्रक :
तिलोक प्रिंटिग प्रेस, बीकानेर
दूरभाष : 9314962475

प्रकाशकीय

सद्-शिक्षाओ का दौर गद्य-पद्य दोनो विधाओ मे चलता रहता है। वक्ता के लिए शिक्षा को पद्य मे ढालकर कहना चाहे दुरूह हो, पर उस शिक्षा को पद्य मे ग्रहण करना श्रोता के लिए रूचिकर, हृदयग्राही और सरल होता है।

स्रोतस्विनी का कलरव किसे पसन्द नहीं ? पानी का झरना जब बहता है तो क्या मनमुग्ध नहीं होता ? प्रचण्ड ग्रीष्म ऋतु मे सनसनाता शीतल सुगन्धित पवन वीतरागी मुनि के अलावा किसे मोहित नहीं करता ? बस, सगीत भी इसी का निर्मल प्रवाह है, झरने का कलरव है, शीतल सुगन्धित पवन है। आवश्यकता है इसे गुनगुनाकर भक्तिरस का आनन्द लेने की।

प्रवचन, कथा, काव्य एव तत्व आदि के माध्यम से सन्तजन शासन की भव्य प्रभावना करते आये है। शासन प्रभावक, आदर्श त्यागी, तपस्वी, विद्वान श्री धर्मेश मुनि जी म सा शासन प्रभावना मे सुदक्ष सन्त है। शादी के मात्र सात माह पश्चात् सपत्नी आचार्य श्री नानेश के श्री चरणो मे दीक्षित होकर ज्ञान दर्शन चारित्र मे निमग्न श्रमण द्वारा रचित "धर्म के गीत" सरस श्रेयस्कर रचना है।

ग्रन्थ मे "अरिष्ठनेमिजिन स्तुति" योग प्राणायाम पर आधारित है। यह स्तुति आत्म-साक्षात्कार के लिए एक वैज्ञानिक उपाय है। इसी प्रकार "स्वाध्याय वहीं हो जीवन में" साधमार्गी रे, ए पर्व पर्युषण आवियो आदि रचनाएँ पुस्तक को प्राणवान बनाती है।

मुनि श्री की इस कृति मे काव्य का माधुर्य, इतिहास की झलक, आत्म साक्षात्कार का पाथेय और भक्ति का संबल एक साथ समुपलब्ध होता है।

प्रस्तुत कृति के समीक्षण मे विद्वद्वर्य सेवाभावी श्री प्रशममुनिजी म सा का श्रम अभिनदनीय है।

"धर्म के गीत" के प्रकाशन मे उदारमना, धर्मनिष्ठ श्री सुन्दरलालजी सिपाणी-बैगलोर का सहयोग प्राप्त हुआ है तदर्थ हम उनके अत्यत आभारी है। विश्वास है कि सत्साहित्य के प्रकाशन मे आपका सदैव सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

राजमल चौरड़िया

सयोजक – साहित्य प्रकाशन समिति

श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर

अर्थ सहयोगी परिचय

अनुशासन और संयमित जीवन ये सफलता की सीढ़ी है जो व्यक्ति इन पर अमल करता है वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है ऐसे ही विरले व्यक्तित्व के धनी हैं समता मनीषी, सुश्रावकरत्न स्व. सेठ श्री सोहनलालजी सिपाणी के ज्येष्ठ पुत्र सरलमना, सहृदयी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी श्रीमान् सुन्दरलालजी सिपाणी।

ऐसे सरलमना श्री सुन्दरलालजी सिपाणी का जन्म उदयरामसर निवासी स्व. सेठ श्री सोहनलालजी सिपाणी की धर्मपत्नी श्रीमती जेठीदेवी सिपाणी की कुक्षि से 11.09 1946 को हुआ। आप बाल्यावस्था से ही मेधावी छात्र थे आपकी मातृ ने आपके जीवन में शुरू से ही संस्कारों का बीजारोपाण किया उसी के फलस्वरूप आपका जीवन उच्च है। आप सादा जीवन उच्चविचार के धनी है आपके व्यक्तित्व मे हरपल सरलता झलकती रहती है कभी भी ऐसा आभास नहीं होता है कि आप में अभिमान है। सरलता आपके जीवन में कूट-कूट कर भरी है। हँसमुख व्यक्तित्व, सौम्यता, सजगता, समय के सजगप्रहरी, उदारता, कार्य के प्रति कर्मठता, परिवार के पोषक ऐसे अनेक

गुणों से आप ओत-प्रोत है। आप अपने पिता के पदचिन्हो पर चलत्ते हुए प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय करते है। आप अपने पिता के आदर्शपुत्र रत्न है। आपकी धर्म सहायिका श्रीमती शांतिदेवी सिपाणी भी आपके आदर्शो का अनुसरण करते हुए परिवार मे संस्कारों का बीजारोपण कर रही है आपका व्यवसाय सिपाणी ग्रुप ऑफ कम्पनीज के नाम से पूरे भारतवर्ष में सुविख्यात है। आपका व्यवसाय बैंगलोर, कडूर एवं भोपाल में है।

आपके तीन भाई सर्व श्री राजकुमारजी सिपाणी, कमलचदजी सिपाणी, विमलचदजी सिपाणी, एक बहन सरला बेताला हैं आपके तीन पुत्र, तीन पौत्र, तीन पौत्रीयॉ है।

आपका भरा पुरा परिवार हुक्मगच्छ के अष्टम पट्टधर आचार्यश्री नानेश एवं आचार्यश्री रामेश का परमभक्त है। आप संघ के श्रद्धानिष्ठ श्रावक रत्न है। वर्तमान में आपश्री साधुमार्गी जैन संघ, बैंगलोर के कोषाध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे है।

आप धर्मनिष्ठ श्रद्धावान श्रावक रत्न है आप हमेशा दान शील, तप भाव से संघ समाज की सेवा करते हुए दीर्घायु हो यही मनोकामना है।

अनुक्रमणिका

1. मंगलाचरण

जय ऋषभ आदि महावीर पट्टधार,

आचार्य सुधर्मा स्वामी की।

हुक्म शिवोदय चौथ श्री धार,

जय जवाहर नामी की।।

शान्त क्रान्ति के जन्मदाता

जय गुरु गणेश जी।

नानेश गुरुचरणों में नम लो

राम नाम हमेश जी।।

विघ्न हरण मंगल करण, ऋषभादि महावीर।

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम हरो भव पीर।।

2. ऋषभ जिन स्तुति

तर्ज : मैं हूँ उस नगरी का भूप.

मेरा तुमसा है स्वरूप ऋषभ प्रभु फिर भी भरमाता।

फिर भी भरमाता नाथ कुछ समझ नहीं आता ।टेर।।

नाभिराय के तुम नन्दन हो, मरुदेवी है माता।

आदि नरपति तुम हो जग के, कर्मभूमि विधाता।।1।।

कर्मभूमि को धर्मभूमि में परिणत करके त्राता।
मुनि बन तप कर केवल पाया बने तीर्थ प्रणेता।।2।।

भव्यों के हित मुक्तिमार्ग के आप बने प्रदाता।
मोह मिथ्यात्व के उदय भाव से कष्ट यहाँ मैं पाता।।3।।

कस्तूरी मृगवत् अज्ञानी बन मैं दौड़ लगाता।
सुखाभास में गिंडोला सम फूला नहीं समाता।।4।।

अपनी बुद्धि और मेहनत पर रात-दिवस इठलाता।
सफल नहीं जब उसमें होता दोष आप पर मंडता।।5।।

या फिर कर्म की कठपुतली बन हाहाकार मचाता।
साधक-बाधक निमित को पा राग-द्वेष मैं करता।।6।।

अब तो अधतम दूर हटे यह सद्बुद्धि मैं चाहता।
''मुनि धर्मेश''पे महर करो प्रभु स्वरूप रमणता चाहता।।7।।

3. अजित जिन स्तुति

तर्ज : कलवार रुपइया चाँदी का.

प्रभु अजितनाथ का सुमिरन कर भवसागर से तिर जायें हम।
मिथ्यात्व दशा को तजकर के सम्यक्त्व की ज्योति जगायें हम।।टेर।।

जित शत्रु राजा विजयादे राणी के नन्दन है सुखकार।
इनके चरणों में वंदन करअजय शक्तिको पायें हम।।1।।

मिथ्यात्व दशा ने ही हमको सत्यों से दूर भगाया है।
करके क्षय क्षयोपशम इसका शुद्ध सत्य तथ्य को पायें हम।।2।।
जीव अजीव व धर्म-अधर्म साधु-असाधु का भेद समझ।
मोक्ष संसार व मुक्त अमुक्त का भेद-विज्ञान अब पायें हम।।3।।
अभिग्रहिक अनाभिग्रहिक अभिनिवेश वृद्धि को तज कर हम।
संशय व अनाभोगिक व लौकिक मिथ्यात्व हटायें हम।।4।।
लोकोत्तर कुप्रावचनिक रूपी अरूपी को जाने।
अविनय असातना अक्रिया न्यून अधिक छिटकायें हम।।5।।
इन पच्चीस दशा का आगम मे उल्लेख स्पष्ट है जो आया।
''धर्मेशमुनि''कहे चिंतन कर अज्ञान दशा छिटकायें हम।।6।।

4. संभव जिन स्तुति

तर्ज : मंगलिक शरणा चार-

नित उठने तू सुमरले रे चेतन संभव जिन सुखकार।
भव-भव दुर्लभ तू लहे रे चेतन समकित बोध रो सार।टेर।।
सेना दे रा लाडला रे चेतन जितारी अंग जात।
ध्याले अन्तर भाव सूं रे चेतन मिट जावे संताप।।1।।
भोग्या भोग संसार रा रे चेतन पायो नहीं कुछ सार।
अब तो अवसर आवियो रे चेतन कर ले धर्म विचार।।2।।

यथा प्रवृत्ति करण कर रे चेतन अपूर्व करण क्रिया धार।
अनिवृत्ति करण सूं रे चेतन ग्रन्थि देश संहार।।3।।
अनन्तानुबंधी चौकड़ी रे चेतन दर्शन त्रिक दुःखकार।
क्षय क्षयोपशम उपशम कर रे चेतन अन्तःकरण क्रिया धार।।4।।
शम संवेग निर्वेद गुण रे चेतन अनुकम्पा श्रद्धान।
ऐ समकित गुण प्रगटिया रे चेतन होवेला उत्थान।।5।।
षट् आगार ले ध्यान में रे चेतन रखो शुद्ध व्यवहार।
जिण सूं 'धर्म' प्रभावना रे चेतन होवेला सुखकार।।6।।

5. अभिनन्दन जिन स्तुति

तर्ज : श्री सुपार्श्व जिन वंदिये-

श्री अभिनन्दन नित नमो प्यारा प्राणाधार चेतन।
संवर नृप रा लाड़ला सिद्धारथा अंगजात चेतन।।टेर।।
खारो मार्ग वीतराग रो श्रवण करो हरषाय चेतन।
ज्ञान शक्ति विकसाय ने पावो अपूर्व विज्ञान चेतन।।1।।
ज्ञेय बुद्धि सुं जाणने हेय रा करो पच्चक्खाण चेतन।
संयम पथ ने धार ने आश्रव ने देवो रोक चेतन।।2।।
तप शक्ति विकसाय ने कर्मों ने करो चकचूर चेतन।
योग निरुंधन करने अक्रिया फल पाय चेतन।।3।।
सर्व कर्म उच्छेद ने शाश्वत सिद्ध बन जाय चेतन।
श्री जिन भाषित 'धर्म' सूं परमानन्द पद पाय चेतन।।4।।

6. सुमति जिन स्तुति
तर्ज : ख्याल-

श्री सुमति जिनेश्वर सुमति वतावो अन्तर्भाव में। ।टेर।।
मेघरथ नृप सुत सौभागी सुमंगला अंग जात।
तत्वबोध पाना मै चाहता महर करो अब नाथ जी।।1।।
जीव-अजीव पुण्य-पाप और आश्रव-संवर द्वार।
निर्जरा व बंध मोक्ष का जानूं नहीं कुछ सार जी।।2।।
कौन-सा कब है हेय उपादेय ज्ञेय बुद्धि नहीं जागी।
सापेक्ष कारण कार्य विवक्षा कर न सकूं हतभागी जी।।3।।
रूपी-अरूपी तत्व कौन से किसका क्या सहकार।
निश्चय और व्यवहार नय से कर न सकूं विचार जी।।4।।
सम्यक् तत्व बोध को पाकर काटूं कर्म की फांस।
करो कृपा अब मुझ पर प्रभुजी यही धर्म अरदास जी।।5।।

7. पद्मप्रभ जिन स्तुति
तर्ज : मनोरथ तीन उत्तम ये-

प्रभु पद्म जिनेश्वर को सश्रद्धा शीश झुकाता हूँ।
जगे सद्ज्ञान की ज्योति भावना एक भाता हूँ। ।टेर।।
श्रीधार नृप सुत प्यारे मात सुषमा नयन तारे।

अनादि कर्म रिपु सारे संयम लेकर के संहारे।।
बने सर्वज्ञ सवदर्शी महिमा आज गाता हूँ।।1।।
अनन्त धर्मात्मक वस्तु अनन्त ही ज्ञान से जानी।
दे के नयवाद की कुंजी मेट दी खेंचा और तानी।।
प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाणों से संशय दूर हटाता हूँ।।2।।
नैगम संग्रह और व्यवहार द्रव्यार्थिक नय बतलाये।
शब्द ऋजु सूत्र समभिरूढ़ एवंभूत फरमाये।।
पर्यायार्थिक नयचारों को समझ निज भ्रम मिटाता हूँ।।3।।
निश्चय व्यवहार मय मुक्ति के मार्ग को समझकर के।
तजूं एकान्त दृष्टि अनेकान्ती मैं बन करके।।
'मुनि धर्मेश' दुर्नय तज सुनय की दृष्टि चाहता हूँ।।4।।

8. सुपार्श्व जिन स्तुति

तर्ज : साता कीजो जी.

सुपार्श्व जिन प्यारा रे सुपार्श्व जिन प्यारा रे।
मुझ आत्म उन्नति का एक सहारा रे।।टेर।।
प्रतिष्ठित नृप की महारानी पृथ्वी सुत सुखदाई रे।
भव्य जीवों को मोक्ष प्राप्ति की राह बताई रे।।1।।
वस्तु सत्य का बोध हो ऐसी सुविधि समझाई रे।
नाम स्थापना द्रव्य भाव निपेक्ष जताई रे।।2।।

जाति व्यक्ति गुणवाचक यथार्थ अयथार्थ भेदो रे।
अर्थ शून्यता आदि नाम निपेक्ष प्रभेदो रे।।3।।
सद्-असद् भाव भेद दो स्थापना निपेक्ष के जानो रे।
आगमतः नो आगमतः द्रव्य भाव पहचानो रे।।4।।
ज्ञशरीर ज्ञभव्य तद् व्यतिरेक नो आगम भेदो रे।
लौकिक लोकोत्तर कुप्रावचनिक ज्ञभव्य व्यतिरेको रे।।5।।
भाव रहित तीनों निक्षेप ये अयथार्थ जानो रे।
'मुनि धर्मेश' यूं भाव निपेक्ष यथार्थ मानो रे।।6।।

9. चन्द्र प्रभ जिन स्तुति

तर्ज : यह गढ़ चित्तौड़ की.

श्री चंद्र प्रभु का ध्यान धरूं सुखकारी धरूं सुखकारी
कर सुमिरण उनका ज्योति जगाऊँ भारी-2।टेर।।
महासेन नृप माँ लक्ष्मणा के तुम जाया-2
मेटो तम मेरा अर्ज सुनो जिन राया।
पा ज्ञान लब्धि विकसाऊँ शक्तिप्यारी।।1।।

मति-श्रुत अवधि ज्ञान अति सुखकारा-2
मनःपर्यव केवल है यों पंच प्रकारा।
प्रत्यक्ष-परोक्ष से भेद बताये भारी।।2।।

इन्द्रिय नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष भेद दो जानो-2
पंच इन्द्रिय ज्ञान को इन्द्रिय-प्रत्यक्ष है मानो।
अवधि आदि नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष श्रेयकारी।।3।।

अवधिज्ञान भव गुण प्रत्यय बतलाया-2
नारक देवों का भव प्रत्यय सुहाया।
गुण प्रत्यय के षट् भेद बताये भारी।।4।।

अनुगामी अननुगामी वर्ध हीयमानो-2
प्रतिपाती अप्रतिपाती भेद यों जानो।
मनःपर्यय ऋजु विपुल मति लो धारी।।5।।

द्रव्य क्षेत्र काल व भाव से करी विवक्षा-2
केवलज्ञान की भी बतलाई समीक्षा।
भवस्थ सिद्ध यो भेद किये दो भारी।।6।।

सयोगी अयोगी भवस्थ भेद दो जानो-2
अनन्तर-परम्परा सिद्ध भेद दो मानो।
यों प्रत्यक्ष ज्ञान की करी विवक्षा सारी।।7।।

मति श्रुति को परोक्ष ज्ञान बतलाया-2
मिथ्यादृष्टि तो अज्ञानी कहलाया।
श्रुत अश्रुत निश्रित दो भेद किये सुखकारी।।8।।

अश्रुत निश्रित के भेद चार फरमाये-2
उत्पातिया विनया कम्मिया परिणामिया आये।

श्रुत निश्रित के भी भेद चार किये भारी।।9।।

अवग्रह ईहा अवाय धारणा जानो-2
दो छः छ· छः यों भेद क्रमशः मानो।
प्रभेद अनेकों होते हैं श्रेयकारी।।10।।

अक्षर सन्नी सम्यक्त्व गमिक व सादि-2
सपर्य वसित और अंग-सात इतरादि।
श्रुतज्ञान के चौदह भेद प्रभेद हैं भारी।।11।।

कर ज्ञानावरणीय का नाश ज्ञान विकसाऊँ-2
बन सिद्ध आप सम ज्योत में ज्योत समाऊँ।
'मुनि धर्मेश' की अर्ज करो स्वीकारी।।12।।

10. सुविधि जिन स्तुति

तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश-

प्रभो सुविधिनाथ जिन राज अर्ज मेरी आज नाथ स्वीकारो।
रुक जावे कर्मबन्ध सारो।।टेर।।

सुग्रीव नृप सुयशा सुत प्यारे आया अब तेरे मैं द्वारे।
तजना चाहता सब कर्मबन्ध विकारो।।1।।
प्रदोष निह्नव मत्सर वृत्ति रख ज्ञान मे अन्तराय बुद्धि।
करे ज्ञान-दर्शना वरण बंध दुःखकारो।।2।।

11. शीतल जिन स्तुति

तर्ज : धीरे चालो बिरज रा वासी.

नमो नमो रे शीतल जिनंदा।
कट जासी कर्म रा फंदा रे। टेर।।
दृढ़रथ नृप घर जाया। माँ नदा रा भाग्य सवाया रे।।1।।
ओ काल अनादि सूं आयो। क्रिया रो फंद दुख दायो रे।।2।।
कायिकी अधिकरणी पाउसिया। परितापनी पाणावतिया रे।।3।।
आरम्भ परिग्रह माया मिथ्या दिट्ठिया व पुट्ठिया रे।।14।।
अपच्चक्खानी पाडुच्चिया सामंतो पातिक स्वहतिया रे।।5।।
नेशस्त्रिकी आज्ञापनिया वैदारिणी अना भोगिया रे।।6।।
अणवकंख वतिया अणोपयोग सामुदानिया रे।।7।।
प्रेम व दोष वतिया सांपरायिक आदि क्रिया रे।।8।।
था समझ इण ने छिटकाओ कहे 'धर्म' मोक्ष ने पाओ रे।।9।।

12. श्रेयांस जिन स्तुति

तर्ज : चेतन रे तू ध्यान आवे.

जीव रे श्रेयांस जिनन्द सुमर रे शुद्ध अवलंब आदर रे। टेर।।
विष्णु राजा ने विष्णु राणी रा नन्दन सुखकर रे।
इण चरणा री सेवा करने भव सागर तू तर रे।।1।।

अष्टादश दूषण से दूषित देव सेवा ने तज रे।
द्वादश गुण संयुक्तदेवाधि-देव अरिहन्त ने भज रे।।2
आरम्भ परिग्रह धारी पासत्था आदि जो कुगुरु रे।
इनको तज भज जो सतावीस गुणधारी सुगुरु रे।।3।
हिंसादि आडम्बर वालों धर्म नहीं हैं भ्रम रे।
अहिंसा संयम तपमय मंगल श्रुत चारित्र धर्म रे।।4।।
निर्वद्य सेवा भक्ति इनकी शुद्ध चित्त सूं तू कर रे।
केवली प्ररुपित आगम वचनों ने तू चित्त में धार रे।।5।।
'मुनि धर्मेश' कहे तू जीवड़ा सोच समझ पग धार रे।
इण भव पर भव में सुख पासी बणसी तू अजर अमर रे।।6

13. वासु पूज्य जिन स्तुति

तर्ज : जाओ जाओ ए मेरे साधु-

भज ले भज ले रे चेतन प्यारे वासु पूज्य भगवान।।टेर।।
वासु पूज्य नृप राज दुलारे माता जया महान।
संयम ले सब कर्म खपाये पाया केवलज्ञान।।1।।
सुखाभिलाषी मानव जग में कर रहे खेंचातान।
कालवादी स्वभाववादी और कर्मवादी बलवान।।2
होनहार होकर रहता है नियतिवादी यों कहते।
पुरुषार्थवादी पुरुषार्थ की टेक पकड़कर रखते।।3।।

आपस में कर वाद विवाद दिन-रात लड़ते और झगड़ते।
देख हीनता इनकी प्रभुजी दया आप दिखलाते।।4।।
एकान्तवाद का खण्डन कर शुद्ध स्याद्वाद समझाया।
गौणता व प्रमुखता का मर्म खोल समझाया।।5।।
'मुनि धर्मेश' कहे भव्य प्राणी आत्मशान्ति जो चाहो।
एकान्तवाद को तज करके शुद्ध स्याद्वाद अपनाओ।।6।।

14. विमल जिन स्तुति

तर्ज : सासू लड़ मत-

चेतन विमल प्रभु ने तू तो आज भज ले।
क्रिया अव्रत री आज तू तो दूर कर ले।।टेर।।

राजा कृत वर्मा रा सुत प्यारा, माता श्यामा राणी रा है नन्द दुलारा।
वंदन चरणा में नित उठ कर ले।।1।। चेतन.. ...
अनादिकालीन क्रिया आत्मा रे लागी , मिथ्यात्व दशा में देह ममत्व री सागी।
निरर्थक क्रिया रो तू पाप तज ले।। 2।।
पॉच अणुव्रत तीन गुण व्रतधारी, शिक्षा व्रत चार ने भी सागे स्वीकारी।
श्रावक री ग्यारह पडिमा ने वर ले।।3।। चेतन.........
बारह भावना और तीन मनोरथ ध्याओ श्रावक रा इक्कीस ही गुण अपनाओ।
'मुनि धर्मेश' बेडा पार कर ले।।4।। चेतन. ..

15. अनन्त जिन स्तुति

तर्ज : उठ भोर भई-

प्रभो अनन्त नाथ का सुमिरण कर, अनन्त शक्ति विकसायेंहम।
संयम लेकर के जीवन में, भव सिंधु को तिर जावें हम।।टेर।।
लिया जन्म सिंह सेन नृपति घर, सुयशा मात मन हर्षाई।
पाकर के तुमको धन्य हुई, यश गाथा सुर नर गाये हम।।1।।
पंच महाव्रत को धारे और समिति गुप्ति को स्वीकारें।
भाव करण योग सत्य क्षमा वैराग्य वन्त बन जाये हम।।2।।
बन मन, वच, तन समाधारणीया रत्नत्रय से सम्पन्न बन।
मारणांतिक वेदनी कष्ट सहे गुण सत्तावीस अपनाये हम।।3।।
बावीस परीषह को जीतें और अनाचार बावन टालें।
तप बारह भेदे धारण कर संयम सतरह अपनाएं हम।।4।।
चार कषाय का छेदन कर और आर्त्तरौद्र कुध्यान को तज।
मनोरथ त्रय का चिंतन कर शुद्ध 'धर्म' ध्यान को ध्यायें हम।।5।।

16. धर्म जिन स्तुति

तर्ज : तीन मनोरथ धारी रे-

धर्मनाथ प्रभु धर्म उजागर, मोक्ष मार्ग प्रतिपादक रे।
पंचाचार जो शुद्ध आराधे, निकट भवी वो साधक रे।।टेर।।

भानु नृप सुव्रता घर में जन्मे धर्म जिनन्दा रे।
शुद्ध मन से जो ध्यावे उनका कटे कर्म का फंदा रे।।1।।
काल विनय बहुमान को चित्तधर कर उपधान आराधे रे।
व्यंजन अर्थ तदुभय शुद्धि निह्नवता तज साधे रे।।2।।
शंका कांक्षा विचिकित्सा मूढ़ दृष्टि निवारे रे।
उप बृंहन सुस्थिर बन वात्सल्यता को धारे रे।।3।।
कर प्रभावना ज्ञानाचार व दर्शनाचार ने साधो रे।
पॉच समिति तीन गुप्ति मय चारित्राचार आराधो रे।।4।।
अनशन ऊनोदरी भिक्षा रस परित्याग तप धारे रे।
काय क्लेश प्रतिसंलीनता बाह्य तप स्वीकारें रे।।5।।
प्रायश्चित्त विनय वैयावच्च स्वाध्याय ध्यान व्युत्सर्गोरे।
आभ्यंतर इस तपाचार ने धारे चित्त उमंगो रे।।6।।
उत्थान कर्म बल वीर्य संग में पुरुषार्थ ने फोड़े रे।
अप्रमत्त भाव से साधे 'धर्म' वे सहज मुक्ति को पावे रे।।7।।

17. शान्ति जिन स्तुति

तर्ज : तुमको लाखों प्रणाम-

श्री शान्तिनाथ भगवान तुमको लाखों प्रणाम।।टेर।।

विश्वसेन नृप अति हर्षाये माता अचला गर्भ में आये।
किया महामारी अवसान तुमको लाखों प्रणाम।।1।।

आर्त्त-रौद्र अपध्यान मिटाया, प्राणीमात्र अति आनन्द पाया।
मिटा दुःख तमाम तुमको लाखों प्रणाम।।2।।
अज्ञानी बन इसको ध्याते, इष्ट संयोगों में ललचाते।
दे संरक्षण हित जान तुमको लाखों प्रणाम।।3।।
अनिष्ट योग वियोग को चिंते, अश्रुपात वे हरदम करते।
करे आक्रंदन महान्, तुमको लाखों प्रणाम।।4।।
सत्ता सम्पत्ति खूब बढ़ाते, हिंसा झूठ चोरी अपनाते।
हरते कितने प्राण, तुमको लाखों प्रणाम।।5।।
आर्त्त रौद्र यह ध्यान है दुःखकर छूटे पिंड यह आशा दिलधर।
'धर्मेशमुनि' धारे ध्यान तुमको लाखों प्रणाम।।6।।

18. कुंथु जिन स्तुति

तर्ज : ओ वीतराग भगवान.

ओ कुंथु नाथ प्रभुजी यह प्रार्थना है मेरी।
जगे धर्म ध्यान ज्योति यह कामना है मेरी।।टेर।।

सुर राज गृह उजाले श्रीदेवी के हो नन्दा।
प्रमादता से प्रभुजी छुड़वा दो अब तो फंदा।।
करुणानिधि यह अर्जी सुन लेना प्रभु मेरी।।1।।
मद व विषय कषाय विकथा व देखो निन्द्रा।
बेसुध पडा हूँ इसमें टूटे नहीं यह तन्द्रा।।

आया शरण तुम्हारी तोडें प्रभु यह बेड़ी।।2।।
आज्ञा अपाय विपाक संस्थान और विचय।
हैं चार इसके पाये किंचित् न इसमें संशय।।
करता रहूँ मैं चिंतन प्रमाद को निवारी।।3।।
वाचन पृच्छण परियट्टण अनुप्रेक्षा धर्मकथा।
अवलंब इनका लेकर तज दू मै अन्य व्यथा।।
जगे आज्ञा निसर्ग सूत्र अवगाढ़ रुचि प्यारी।।4।।
संसार अनित्य अशरण एकत्व भाव जागे।
जिससे ये कर्म शत्रु मैदान छोड भागे।।
'धर्मेश' कहता प्रभुजी करना न अब देरी।।5।।

19. अरह जिन स्तुति

तर्ज : होवे धर्म प्रचार.

सब बोलो जय जयकार, अरह जिनेश्वर की।
तो होगा बेडा पार, अरह जिनेश्वर की। टेर।।
सुदर्शन नृपदेवी के जाये सयम पथ पर चरण बढाये।
पाने मोक्ष का द्वार।।1।। अरह ... ..
संयम ले प्रमाद निवारा मनःपर्यय ज्ञान पाया सुखकारा।
धर्म ध्यान को धार।।2।। अरह........

हास्य षट्क से निवृत्त होते, वेद त्रिक को नाश है करते।
ले शुक्लध्यान आधार।।3।। अरह........

सज्वलन चौक को भी क्षय करते, क्षपक श्रेणि को धारण करते।
करे घनघाती कर्म संहार।।4।। अरह........

केवलज्ञान व दर्शन पाते अरिहन्त वे जब बन जाते।
सामान्य रूप मझार।।5।। अरह.........

जिन नाम जो बन्धन करते, चौतीस अतिशय युक्त वे होते।
अष्ट प्रतिहार्य को धार।।6।। अरह. ....

उपशम श्रेणी जो भी करते, वापिस नीचे वो है गिरते।
मिथ्यात्व गुण ले धार।।7।। अरह.........

धर्मदेशना दे के सुखकर चार तीर्थ का स्थापन वे कर।
भेजे मोक्ष मझार।।8।। अरह.........

20. मल्लि जिन स्तुति

तर्ज : तावड़ो धीमो तो पड़जा रे.

मल्लि जिन मन म्हारे भाया रे–2
शुक्ल ध्यान ने ध्याकर प्रभुजी सिद्ध गति पाया रे।।टेर।।

पिता कुम्भ माँ प्रभावती री कुक्षि में आया।
मोह कर्म रा उदय भाव सूं नारी तन पाया रे।।1।।

पूर्व प्रीति सूं छः नृप मोहित बन परणन आया।
प्रतिबोधित कर संयम लीनो, शुक्ल ध्यान ध्याया रे।।2।।
पृथक्त्व वितर्क अविचारी बन, सब द्रव्य पर्याय ने देखे।
एकत्व वितर्क सविचारी बनकर एक विषय ने परखे रे।।3।।
अपाय अशुभ अनन्तर वृत्ति विपरिणामानुप्रेक्षा धारी।
खंती मुति आर्जव मार्दव अवलम्बन ने धारी रे।।4।।
अघाति कर्मों ने केवली समुद्‌घात से घाती।
आयुकर्म ने अल्प जाण बण्यां सूक्ष्म क्रियाऽप्रतिपाती रे।।5।।
बादर योग निरोध कर करी सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति।
शैलेषीकरण अवस्था धार वरी अविग्रह गति रे।।6।।
अष्ट कर्म क्षय करके आठों ही गुण प्रभु ने प्रगटाया।
एक समय में सिद्धशिला पर आसन जाय जमाया रे।।7।।
ऐसा शाश्वत सुख ने पावण री मन में हैं आशा।
'मुनि धर्मेश' ने दे दो प्रभुजी मुक्तिमहल का वासा रे।।8।।

21. मुनि सुव्रत जिन स्तुति

तर्ज : धर्म जिनेश्वर मुझ हिवड़े बसो-

श्री मुनि सुव्रत स्वामी ने नित नमूं वंदू शीष नमाय।
नृप सुमित्र रा सुत लाड़ला पद्‌मावती है मांय।।टेर।।

लक्ष चौरासी में भटकत पावियो दुर्लभ नरभव नाथ।
आर्य क्षेत्र उत्तम कुल पायो पायो निरोगी जी गात ।।1 ।।
पॉचों इन्द्रिया पूर्ण है पाई फिरभी नहीं कुछ सार।
श्री जिनधर्म ने नहीं श्रद्धियो पड़ियो मोह मझार ।।2 ।।
शुद्ध समकित व्रत नहीं मैं आदरियों नहीं श्रावक व्रत धार।
दान शील तप भाव न साधियोंसाध्यो विषय विकार ।।3 ।।
साधु बण संयम पथ भूल्यो ध्यायो बक वृत्ति ध्यान।
आरम्भ परिग्रह माही राचियो लज्जा खूंटी दी तान ।।4 ।।
शास्त्र विरुद्ध कर कर प्ररुपणा जन मन ने भरमाय।
नित नया विवाद छेड़िया खोटा चोज रचाय ।।5 ।।
नहीं कोई छानी है प्रभु आपसूं म्हारा मन री जी बात।
'धर्मेश' आयो है शरणे आपरे तारो जी दीनानाथ ।।6 ।।

22. नमि जिन स्तुति

तर्ज : चेतन चारों चरणा धार-

चेतन नेम प्रभु रा गुण तू नित उठ गायले रे।
आरे चरणां री भक्ति में चित्त रमाय ले रे।।टेर।।

विजय सेन नृप विप्रा राणी, कैसी उनकी थी पुनवानी।
जायो नेम नगीनो लाल, शुद्ध चित्त ध्याय ले रे।।1 ।।

गुण प्रतिमा प्रभु की सुखदाई, अनन्तज्ञान-दर्शन मय भाई।
श्रुत चारित्र धर्म चरणों में, चित्त रमाय ले रे।।2।।
संयम नीर सूं उठ न्हाले, सदाचार का वस्त्र सजा ले।
त्याग तप रा नेवज धार, भक्ति बजाय ले रे।।3।।
सम्यक्ज्ञान रो दीप जलाई, श्रद्धासुमन रो थाल सजाई।
मन मंदिर में गुण सौरभ महकाय ले रे।।4।।
छः काया री यतना धारी, भक्ति रा घुंघरू झणकारी।
शास्त्र श्रवण स्वाध्याय री धुन लगाय ले रे।।5।।
दान शील तप भाव आराधी संवर सामायिक पौषध साधी।
लेकर आत्मशुद्धि रो साज कर्म खपाय ले रे।।6।।
ऐसी निर्वध कर ले भक्ति पासी उणसूं निश्चय मुक्ति।
बात धर्म री मान, ध्यान लगाय ले रे।।7।।

23. अरिष्टनेमि जिन स्तुति

तर्ज : आज म्हारा संभव जिन का.

राज आज मैं तो अरिष्ट नेम रा हर्ष हर्ष गुण गास्यां।
हर्ष-हर्ष गुण गास्यां मैं तो परमानन्द ने पास्यां।।टेर।।
समुद्र विजय सुत सेवा दे रा नन्दन आज मनास्या।
मन मंदिर मे स्थापित करने आत्मज्योति जगास्यां।।1।।
इगला पिंगला ने वश करने सुषुम्ना सुर मिलास्यां।

आज्ञाचक्र ने सजग बना विशुद्धि चक्र घुमास्यां।।2।।
मूलाधार ने जागृत कर स्वाधीन चक्र चलास्यां।
मणिपूरक और सूर्य चक्र ने स्फुरित कर हर्षास्यां।।3।।
भ्रमर गुहा ने गुंजरित कर अनाहत चक्र चलास्यां।
जगा कुंडली मनस चक्र में प्रभु ने लाय बिठास्यां।।4।।
अध्यवसाय री अग्नि दीप्त कर, ज्ञान संदीप जलास्यां।
मिथ्या तम ने दूर भगा मैं, प्रभु रा दर्शन पास्यां।।5।।
दुग्ध घृत या पुष्प पराग वत एकमेक बण जास्यां।
आत्म परमात्मा री दूरी ने, मैं तो दूर भगास्यां।।6।।
कर्म मल ने नाश कर मैं, अजर-अमर बण जास्यां।
'मुनि धर्मेश' यों पायो नर तन, इण रो सार कमास्यां।।7।।

24. पार्श्व जिन स्तुति

तर्ज : मन डोले मेरा-

सब बोलो, अरे सब बोलो, सब बोलो जय जयकार रे।
चिंतामणि पारस प्रभुवर की-2।।टेर।।
अश्वसेन नृप के सुत प्यारे, वामांदे राज दुलारे।
लिया जन्म वाराणसी नगरी, तीन ज्ञान को धारे-2।।
खुशियाँ छाई, हर्ष बधाई, बंट रही घर घर द्वार रे।।1।।

बालक वय में भी प्रभुजी ने चमत्कार दिखलाया।
कमठ तापस को प्रतिबोध दे जलता नाग बचाया-2।।
मन्त्र श्रवण कर, आयु पूर्ण कर, हुए धरणेन्द्र सुखकार रे।।2।।
तीस वर्ष की वय में प्रभु ने संयम पथ स्वीकारा।
चौरासी वर्ष कर कठोर तपस्या केवलज्ञान वरा प्यारा-2।।
तीर्थ स्थापना कर, भविजन हितकर, दी देशना अति श्रेयकार रे।।3।।
कृष्ण नील कपोत तेजो व पद्म शुक्ल ये सारी।
कर्मबंध की हेतु भूत है लेश्या ये छः भारी।।
इनको तजकर, मुक्तिवर कर, पाओ सुख अपार रे।।4।।
द्रव्य भाव लेश्या के स्वरूप का, मर्म खोल समझाया।
शुद्धाशुद्ध लेश्या का भी तो, सारा भेद बताया-2।।
'धर्मेश' मन भाया, आनन्द आया तज अशुद्ध लेश्या व्यापार रे।।5।।

25. महावीर जिन स्तुति

तर्ज : पंथड़ो निहारो-

मार्ग किम पाऊँ प्रभु मैं आप रो रे वीर प्रभु भगवान।
मत-मत भेदे करी कल्पना रे, कर रह्या खींचातान।।टेर।।
माता त्रिशला रा थे तो लाड़ला रे, सिद्धार्थ अंगजात।
दशवां स्वर्ग सू चवि आविया रे कुंडनपुर विख्यात।।1।।
कर पणट्ठ अट्ठ कर्म ने रे, पायो पद अविकार।
ज्योत में ज्योत प्रभु विराज्यां रे, नही कांई रूप आकार।।2।

भक्तिकर रह्या भगत आज तो रे रच-रच विविध आकार।
आरंभ समारंभ वृत्ति में राचने रे माने आनन्द अपार।।3।।
नग्न मानी प्रभु कोई आपने रे फिरे नग्नत्व ने धार।
सावद्य योग तजी साधु हुआ रे कर रह्या सावद्य व्यापार।।4।।
कोई बतावे चूका आपने रे मार्ग थारो स्वीकार।
दया दान री भ्रमणा मांडने रे सेवे आश्रव द्वार।।5।।
कोई निश्चय पक्ष ने ताणने रे बतावे अशुद्ध व्यवहार।
कल्प मर्यादा ऊँची ठेल ने रे, कर रह्या धर्म प्रचार।।6।।
मैं तो चाहूँ हूँ प्रभुजी आवणो रे जल्दी सूं तुझ द्वार।
श्रुत चारित्र 'धर्म' धारियो रे साधुमार्ग श्रेयकार।।7।।

26. श्री इन्द्रभूतिजी स्तुति

तर्ज : साता कीजो जी.

वीर प्रभु रा गणधार जान इन्द्रभूतिजी रो धार ले ध्यान।।टेर।।

वसुभूति पृथ्वी रा नन्द गोबर गॉव में लियो जनम।
गौतम गौत्र ब्राह्मण महान इन्द्रभूति.......।।1।।

जीव अस्तित्व री शंका धार, आया वीर प्रभु चरणार।
पाँच सौ शिष्य ले गुणवान, इन्द्रभूति........।।2।।

प्रभुजी जाणी मन री बात संशय मेट लियो निज साथ।
बणग्या शिष्य प्रभु रा प्रधान इन्द्रभूति........।।3।।

पचास वर्ष में संयम धार, तीस वर्ष छद्मस्थ मझार।
वीर निर्वाण पायो केवलज्ञान, इन्द्रभूति.. .. ... ।।4।।
वर्ष बारह विचर्या सुखकार बाद में पहुॅच्या मोक्ष मझार।
बणग्या प्रभुजी रे समान, इन्द्रभूति. .. ... ।।5।।
आप कियो मोटो उपकार, रचकर आगम ज्ञान भंडार।
'मुनि धर्मेश' गावे गुण गान इन्द्रभूति. . ..... ।।6।।

27. श्री अग्निभूतिजी स्तुति

तर्ज : गाजे गाजे जेठ-

गावो गावो गावो गुण अग्निभूतिजी रा गावो रे।
कर्म खपाय ने जावो मोक्ष में। टेर।।

इन्द्रभूतिजी रा मझला भाई मन मे शंका लाई रे।
आया प्रभु रे चरणा मांय ने।।1।।
प्रभुजी मन री बात जाण बोल्या अग्निभूति रे।
कर्म अस्तित्व री शंका छोड़ दे।।2।।
वाणी सुण ने संशय मिटग्यो शिष्य प्रभु रा बणग्या रे।
शिष्य पॉच सौ भी तो साथ में।।3।।
वर्ष छियालीस वय में प्रभु सूं संयम आप लीनो रे।
बारह वर्ष में केवल पाविया।।4।।

चीमोत्तर वर्ष में आप, अनशन स्वीकार्यो रे।
एक मास सूं मोक्ष पधारिया।।5।।

प्रभु सूं पहला मुक्तिपाई सिद्ध बुद्ध ए बणग्या रे।
'मुनि धर्मेश' गुण गाविया।।6।।

28. श्री वायुभूतिजी स्तुति

तर्ज : जग में मंगल चार....

मैं वायुभूतिजी रा आज सब गुण गावां ला गावां ला।
मन में ध्यान लगाय शिव सुख पावां ला जी पावां ला।।टेर।।

गौतम प्रभु रा आप छोटा भाई था जी भाई था।
पाँच सौ शिष्य रा आप गुरु सुखदाई था सुख दाई था।।
पर मन में संशय जान अचरज पावां ला जी पावां ला।।1।।

वर्ष बयालीस माय संयम धारे है जी धारे है।
पॉच सौ शिष्य भी आप लाया लारे है जी लारे है।।
मैंअन्तर्श्रद्धा धारहृदय सूंध्यावांलाजी ध्यावांला।।2।
दस वर्षा रे बाद केवल पाया है जी पाया है।।3।।

वर्ष अठारह बाद मोक्ष सिधायां है जी सिधायां है।।
प्रभुजी सूं पहला आप 'धर्म 'यश गावां ला जी गावां ला।।3

29. श्री व्यक्त स्वामीजी स्तुति

तर्ज : जरा सामने तो आओ.

जरा व्यक्तस्वामी के गुण गाईये, गुण गाने में बड़ा सार है।
तिर जाती है इससे आत्मा, मिल जाता शाश्वत सुख द्वार है। टेर।।
कोल्लाग संनिवेश में आकर, ब्राह्मण कुल में जन्म लिया।
भारद्वाज गौत्र है बड़ा ही सुखकर, पाकर सबको हर्ष हुआ।
गावे घर-घर मंगलाचार है बटे बधाईयाँ सुखकार है।।1।।
माता वारुणी के थे जाये धनदत्त पिता गुण धार है।
पाँच सौ शिष्यों को वेद पढ़ाते देते पूरे संस्कार है।।
पर शंकित हृदय मझार है जब आते प्रभु चरणार है।।2।।
पंचभूत से आत्मा भिन्न है प्रभु ने जब उच्चार किया।
संशय निवृत्त होता मन का तत्क्षण शिष्यत्व धार लिया।।
करते संयम को स्वीकार है, हो गये पाँच सौ शिष्य भी लार है।।3।।
प्रभु ने त्रिपुटी देकर गणधर पद पर है प्रतिष्ठ किया।
बारह वर्ष छद्मस्थ रहे फिर, केवलज्ञान को वरण किया।।
होता वर्ष अठारह बाद निर्वाण है, अस्सी वर्ष में मोक्ष मझार है।।4।।
जन्म-मरण का सब दुःख छूटा, आत्मस्वरूप को प्राप्त किया।
प्रभु से पहले मुक्तिपाकर शाश्वत सुख को वरण किया।।
'मुनि धर्मेश' का यह विचार है पाऊँ मोक्ष का जल्दी द्वार है।।5।।

30. सुधर्मा स्वामी स्तुति

तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार की आई...

स्वामी सुधर्मा के गुण गाकर, भवसागर तिर जाये हम।
उनका ध्यान लगाकर मन में, उन जैसे बन जाये हम।।टेर।।

माँ भद्रा और पितु धम्मिल के, सुत ये मंगलकारी है।
अग्नि वेश्यायन ब्राह्मण कुल में जन्म लिया सुखकारी है।।
वीर प्रभु के प्रथम पाटवी को नित्य शीश झुकाये हमें।।1।

होनहार होकर के रहता, संशय मन में भारी था।
प्रभु ने जान के मेटा तत्क्षण, पाया बोध सुखकारी था।
पाँच सौ शिष्य से संयम लेते, गुण गाकर हर्षाये हम।।2।

पचास वर्ष में संयम धारा, बयालीस वर्ष छद्मस्थ रहे।
वीर प्रभु के बाद आचार्य, बन शासन संभाल रहे।।
बीस वर्ष के बाद प्रभु के, सिद्ध बने गुण गायें हम।।3।।

इनकी पाट परम्परा पर ही, गुरुवर नाना राज रहे।
कष्ठ उठाकर भी जो कैसी, शासनसेवा साज रहे।।
'मुनि धर्मेश' तो भाग्य सराहता, ऐसा शासन पायें हम।।4।

31. श्री मंडित पुत्र स्वामी स्तुति

तर्ज : ढ़ोला ढ़ोल मजीरा...

भाया मंडि पुत्र जी प्यारा रे प्यारा रे।
वीर प्रभु रा छठा गणधार है सुखकारा रे।।टेर।।

ऐ विजया माँ रा लाड़ला ऐ धनदेव सुत प्यारा।
वासव गोत्र ब्राह्मण कुल माहे जन्म लिया हितकारा।।
ऐ तो मोराक सन्निवेश वारां रे।।1।।

वीर प्रभु रा समवशरण में अहं भाव सूं आया।
साढ़े तीन सौ शिष्यों ने भी अपने साथ में लाया।।
मिट गया मन का संशय सारा रे।।2।।

कर्मबन्धन और मोक्ष स्वरूप को समझ शिष्यत्व धारा।
त्रेपन वर्ष में संयम ले छद्मस्थ चौदह रहे सारा।।
पाया मोक्ष बयासी में प्यारा रे।।3।।

'मुनि धर्मेश' कहे गुण गाओ जो थे मुक्ति चाहो।
संयम लेकर तप जप करके आतम ज्योति जगाओ।।
पाओ मुक्ति-महल श्रेयकारा रे।।4।।

32. श्री मौर्यपुत्र स्वामी स्तुति

तर्ज : बाजरां री पाणत.

मौर्यपुत्रजी वीर प्रभु रा गणधर प्यारा।
माता जयन्ति व मौर्यजी रा नयनतारा। ।टेर।।

कावस गौत्र ब्राह्मण कुल में जन्म लियो।
मौर्य सन्निवेश वाला रो तो हर्षियो हियो।।
शिष्य साढ़े तीन सौ थां ज्यां रे सारा।।1।।

देव अस्तित्व री शंका मन ले प्रभु चरणों में आवे।
शंका मिटता ही तो सारा शिष्य बण जावे।।
चौपन वर्ष की आयु में संयम धारा।।2।।

चौदह वर्ष बाद मे तो केवल पाया।
उम्र तेरासी वर्ष में तो मोक्ष सिधाया।।
'मुनि धर्मेश' गुण गावे आरां।।3।।

33. श्री अकंपित स्वामी स्तुति

तर्ज : तुमसे लागी लगन.

आओ आओ सज्जन, गाओ गुण हो मगन गणधर प्यारा।
स्वामी अकंपित सुखकारा।।टेर।।

माता नंदा के जो है जाये, पिता देवदत्त हर्षाये।
कोल्लाक सन्निवेश सुन्दर, गौतम गोत्र प्रियकर।।
ब्राह्मण कुल प्यारा।।1।। स्वामी.........

नरक अस्तित्व का संशयधारी आये प्रभु शरण मझारी।
संशय दूर हटा छटी कर्म घटा।।
शिष्यत्व धारा।।2।। स्वामी... .....

वर्ष अड़तालीस में संयम धारा शिष्य तीन सौ सह प्यारा।
नववर्ष में वर केवलज्ञान सुखाकर।।
मिटा अंधियारा।।3।। स्वामी. .. . ..

वर्ष इठत्तर मांही, वरे मोक्ष गति सुखदाई।
होते अजर अमर, 'धर्मेश' मोक्ष नगर।।
पाया प्यारा।।4।। स्वामी....... .

34. श्री अचल भ्रात स्तुति

तर्ज : धरती धोरां री-

गणधर अचल भ्रात गुण गा लो, जीवन अपनो धन्य बणा लो।
कर्म रो कचरो दूर हटा लो, प्रभु गुण गा लो सा हो....।।टेर।।

माता वारुणी रा जाया पिता वसुदत्त हर्षाया।
ब्राह्मण हरिवंश कुल पाया।।1।। प्रभु.........

चारों वेद पढ़्या सुखकार पर है शंका हृदय मंझार।
पुण्य पाप री बात बेकार।।2।। प्रभु.........

तीन सौ शिष्य ने ले लार, दिल में अहं भाव ने धार।
आया वीर प्रभु दरबार।।3।। प्रभु.........

प्रभुजी जाणी मन री बात मेट्यो संशय रो संताप।
ले ली दीक्षा शिष्यां रे साथ।।4।। प्रभु.........

वर्ष छियालीस में संयम धारा, बारह वर्ष में केवल प्यारा।
बहत्तर वर्ष में मोक्ष मझारा।।5।। प्रभु.........

'मुनि धर्मेश' की एक पिपासा, पूरो मन की यह अभिलाषा।
दे दो मोक्ष नगर में वासा।।5।। प्रभु.........

35. श्री मैतार्य स्वामी स्तुति

तर्ज : सोते सोते ही-

गणधर मैतार्य स्वामी जी रा गुण गाओ।
गुण गाओ रे भैया तिर जाओ।।टेर।।

मॉ देवी रा जाया ऐ तो पिता दत्त मन भाया।
बच्छ भूमि में जन्म लिया कौडिल्य ब्राह्मण कुल पाया।।
ए तो वेद पढ़िया चार।।1।। भैया... .....

पुनर्जन्म री शंका मन में खटक रही थी खास।
शिष्य तीन सौ लेकर आया वीर प्रभु रे पास।।
मिटग्यो मन रो सब संताप।।2।। भैया.........

छत्तीस वर्ष में संयम ले दस वर्ष में केवल पाया।
तरेसठ वर्ष में मोक्ष पधार्‌या अजर अमर पद पाया।।
''धर्मेश' चाहे उद्धार।।3।। भैया. ...

36. श्री प्रभास स्वामीजी स्तुति

तर्ज : धीरे-धीरे बोल कोई सुन-

गुण गाओ रे भाई गुण गाओ प्रभास गणधर रा गुण गाओ।
तिर जाओ रे भाई तिर जाओ भवसागर मे तिर जाओ।
फिर जन्म-मरण का दुःख नहीं और शाश्वत सुख का अंत नहीं। टेर।।

माता अतिभद्रा के जो है लाल, पिता बलजी हो गये थे निहाल।
गौत्र कौडिन्य था। गौत्र कौडिन्य था ब्राह्मण कुल मे तिलक यही।।1।।

राजगृही के वेदान्तिक थे खास, तीन सौ शिष्य पढ़ते जिनके पास।
क्या मोक्ष सही मे है या नही था संशय मन मे एक यही।।2।।

प्रभु चरणों में आते है उसवार संशय निवृत्त होता तब सुखकार।
ले संयम को पाने केवल को समझ मोक्ष का सार सही।।3।।

सोलह वर्ष की उमर थी उसवार, आठ वर्ष रहे छद्मस्थ मंझार।
वर्ष चालीस में गए मुक्ति में 'मुनि धर्मेश' की है अभिलाष यही।।4।।

37. श्री जम्बू स्वामी स्तुति

तर्ज : सिद्ध अरिहन्त में मन.

जम्बू स्वामी के सब गुण गाते चलो।
उनके पथ पर कदम बढ़ाते चलो।।टेर।।
राजगृही में जन्म लिया सुखकारी।
माता धारिणी की जावे बलिहारी।।
पिता धनदत्त सुत गुण गाते चलो।।1।।
आठ कन्याओं से जिनकी शादी रचाई।
क्रोड़ निन्नाणु प्रीति दान सुखदाई।।
पर बनते विरक्तयश गाते चलो।।2।।
धन हरण अभिलाषा मन ले आया।
प्रभव पाॅच सौ चोर संग हर्षाया।।
पर बन जाता विरक्त वो बात सुन लो।।3।।
मिल सुधर्मा स्वामी चरणों में आते।
पाॅच सौ सत्तावीस सब मिल होते।
लेते संयम सब महिमा गाते चलो।।4।।
आचार्य बनकर केवल पाया।
दस बोल विच्छेद हुए दुःखदाया।।
अन्तिम केवली शीश नवाते चलो।।5।।
'मुनि धर्मेश' का मन हर्षाया।
जम्बू स्तुति कर आनन्द पाया।।
मोक्ष पथ पर चरण बढाते चलो।।6।।

38. श्री सीमंधर स्वामी स्तुति

तर्ज : चिरमी रा डाला चार.

म्हाने दर्शन री लगी आश सीमंधर स्वामी।
म्हारी पूर्ण करो अरदास सीमंधर स्वामी।।टेर।।

जम्बूद्वीप में मेरु सुदर्शन, पूर्व विदेह में खास।।1।
आठवीं पुष्कलावती विजय री पुंडरिकिणी मझार।।2।।
श्री श्रेयांस घर जन्मिया, कोई सत्य की माॅ रा लाल।।3।।
वृषभ लांछन तन शोभता बण्यां रुक्मणी रा भरतार।।4।।
आप विराजो महाविदेह मे, मै इण भरत मझार।।5।।
किण विध दूरी पार कर मै पहुॅचूं तव चरणार।।6।।
पुण्य उदय सूं पावियो, ओ साधुमार्ग श्रेयकार।।7।।
इण सूं आशा पूरसी, तुझ दर्शन री अविकार।।8।।
आहि 'धर्मेश' री आस्था गुरु नाना संबल धार।।9।।

39. श्री युग मंधिर जिन स्तुति

तर्ज : जीवन सफल बनाना-2.

दर्शन मुझको दिलाना दिलाना प्रभु युग मंधिर जिनराज।
तुझ मुझ दूरी हटाना हटाना प्रभु युग मंधिर जिनराज।।टेर।।

जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह में, विप्रा विजय जन्म माना-2।।1।।
विजया नगरी के सुदृढ़ नृप घर, सुतारा सुत सयाना-2।।2।।
प्रियंगमा थी राणी तुम्हारी, छाग लक्षण सुहाना-2।।3।।
संयम लेकर केवल पाया, मोक्ष मार्ग दिखाना-2।।4।।
बीच भंवर में नैया फंसी है, प्रभुवर पार लगाना-2।।5।।
हटूं नही मैं कभी भी पीछे, बदले चाहे जमाना-2।।6।।
'मुनि धर्मेश' की अर्जी सुनकर, शीघ्र ही पास बुलाना-2।।7।।

40. श्री बाहु स्वामी स्तुति

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की.

जय बोलो बाहु जिनवर की।
सुग्रीव नृप विजया सुत धर की।।टेर।।
जम्बूद्वीप पूर्व विदेह मांही।
है वत्स विजय वहाँ सुखदाई।।
महिमा है सुषमा नगर की।।1।।
जहाँ प्रभु ने आकर जन्म लिया।
मोहना राणी को वरण किया।।
मृग लंछन शोभित तन पर की।।2।।
संयम ले प्रभु केवल पाये।
तीर्थ स्थापन कर हर्षाये।।
वरसे जिनवाणी प्रभुवर की।।3।।

सुन-सुन भव्य प्राणी जाग रहे।
मोह ममता को सब त्याग रहे।।
करे मौज पहुँचकर शिवपुर की।।4।।

'धर्मेश' करणी का फल पावे।
सीधा महाविदेह में जावे।।
पावे सेवा वहाँ जिनवर की।।5।।

41. श्री सुबाहु स्वामी स्तुति

तर्ज : घर आया मेरा परदेशी-

सुबाहू जिन भज प्राणी, सफल बनेगी जिन्दगानी।टेर।।

जम्बू पश्चिम विदेह मांही नलिनावती विजय सुखदाई।
वीतशोका तस रजधानी सफल बनेगी जिन्दगानी।।1।।
निषध राज घर जन्म लिया माता विजया का हर्षा हिया।
किंपूर्या जिनकी रानी सफल बनेगी जिन्दगानी।।2।।
कपि लांछन तन पर भारी, तज कर संयम स्वीकारी।
बने आप केवलज्ञानी, सफल बनेगी जिन्दगानी।।3।।
धन्य वहाँ के नर-नारी, पाते दर्शन सुखकारी।
श्रवण करे श्री जिनवाणी, सफल बनेगी जिन्दगानी।।4।।
'मुनि धर्मेश' भी यही चाहता, दर्शन का दिल उमड़ाता।
आशा दिल में यह ठानी, सफल बनेगी जिन्दगानी।।5।।

42. श्री सुजात स्वामी स्तुति

तर्ज : इक परदेशी मेरा.

सुजात प्रभु के जो भी गुण गायेगा।
जीवन में अलौकिक आनन्द पायेगा। टेर।।

पूर्व धात की पश्चिम विदेह में राजती।
आठवीं पुष्कलावती विजय है बाजती।।
पुंडरीकिणी नगरी का यश गायेगा।।1।।

देव सेन नृप और देव सेना रानी थी।
ऐसा पुत्र जाया जागी महापुण्यवानी थी।।
सूर्य लक्षण तन पर दर्श पायेगा।।2।।

जय सेना रानी प्यारी ममता को मारी थी।
संयम लेके केवलज्ञान ज्योति वरी प्यारी थी।।
चार तीर्थ स्थापन किये शरण पायेगा।।3।।

'मुनि धर्मेश' की भी यह अन्तर यह कामना।
चरण सेवा पाऊँ ऐसी मन की हैं भावना।।
जीवन में मौका ऐसा कब आयेगा।।4।।

43. श्री स्वयंप्रभ स्वामी स्तुति

तर्ज : डगमग डगमग नाथ मझधार है.

स्वयंप्रभ जिनवर तेरा ही आधार है।
करना बेड़ा पार है जी करना बेड़ा पार है। टेर।।

पूर्व घातकी के पश्चिम विदेह में सुखकार।
पच्चीसवीं विप्रा विजय में जन्मधार।।
विजयानगरी में छाया आनन्द अपार है।।1।।

माता सुमंगला के नन्द सवाये हो।
पिता मित्र त्रिभुवन के लाल कहाये हो।।
चन्द्र लक्षण तन पर शोभा अपरम्पार है।।2।।

वीर सेना रानी की ममता को मार कर।
संयम ले के घनघाती कर्मों का नाश कर।।
चार तीर्थ स्थापित कर किया उद्धार है।।3।।

'मुनि धर्मेश' ने भी यही लक्ष धारा है।
गुरुवर नाना का बस लिया एक सहारा है।।
साधुमार्गी संघ ही जीवन आधार है।।4।।

44. श्री ऋषभानन जिन स्तुति

तर्ज : मूंदड़ी-

श्री ऋषभाननजी जिनराय अर्ज सुन लीजिये जी।
करके कृपा मुझ पर आप शरण में लीजिये जी।।टेर।।

पूर्व घातकी के पूर्व विदेह में, नवमीं वत्स विजय है जिसमें।
सुषमा नगरी है सुखकार, अर्ज सुन लीजिये जी।।1।।

कीर्ति नृप वीर सेना राणी। सिंह केशरी तन पे निशानी।।
जयवंती है पट नार अर्ज सुन लीजिये जी।।2।।
ममता मार के संयम धारा, घातीकर्म का किया संहारा।
पाया केवलज्ञान अर्ज सुन लीजिये जी।।3।।
'मुनि धर्मेश' की यही भावना, पाके दर्शन करुं उपासना।
पाऊँ मोक्ष का द्वार, अर्ज सुन लीजिये जी।।4।।

45. श्री अनन्त वीर्य स्वामी की स्तुति

तर्ज : वीर जिनेश्वर सोयी दुनिया जगाई तूने.

अनन्त वीर्य जिनेश्वर अर्ज सुन लेना मेरी।
भव-भव में भटकत पाया, चरण शरण अब तेरी।।टेर।।
पूर्व घात की पश्चिम विदेह में विजया प्यारी।
चौबीसवीं नलिनावती वीतशोका नगरी भारी।।
मेघरथ नृप पिता मंगलावती माता तेरी।।1।।
छाग लक्षण तन पर अति सोहे।
विजया पटरानी मन अति मोहे।।
फिर भी संयम लेके काटी कर्मों की बेड़ी।।2।।
सर्वज्ञ आप बनके तीर्थ स्थापन करके।
भव्यों पर करुणा दिल में धार के।।
देते धर्म उपदेश सुन काटे भव चक्कर फेरी।।3।।

46. श्री सूरप्रभ स्वामी स्तुति

तर्ज : पणिहारी-

सूरप्रभ मेरी विनती सुनो जिनवरजी सुनो जिनवरजी।
ले लो चरण मझार जिनवरजी। टेर।।

पश्चिम घातकी खण्ड में सुनो जिनवर जी-2
पूर्व विदेह मझार जिनवरजी।।1।।

पुष्कलावती विजय शोभती सुनो जिवरजी-2
पुंडरिकिनी नगरी सुखकार जिनवरजी।।2।।

नागराज नृप है पिता सुनो जिनवरजी-2
भद्रा आपरी मात जिनवरजी।।3।।

सूर्य लक्षण तन शोभते सुनो जिनवरजी-2
विमला राणी पटनार जिनवरजी।।4।।

सबरी ममता मार ने सुनो जिनवरजी-2
लीनो संयम भार जिनवरजी।।5।।

केवलज्ञान ने पाय ने सुनो जिनवरजी-2
तीर्थ थाप्या चार जिनवरजी।।6।।

'मुनि धर्मेश' री कामना सुनो जिनवरजी-2
शीघ्र बुलावो पास जिनवरजी।।7।।

47. श्री विशालधर स्वामी स्तुति

तर्ज : नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे.

विशालधर जिनवर के गुण सब गाओ मिलकर आज रे।
इनकी चरण शरण है प्यारी तिरण तारण की जहाज रे।।टेर।।
पश्चिम धातकी पश्चिम विदेह में विप्रा विजय सुखकार रे।
विजया नगरी के विजय राजा विजया राणी गुणधार रे।।
उनके कुल में जन्म लिया है जिनका सबको नाज रे।।1।।

नन्द सेना पटरानी जिनकी चन्द्र-लक्षण तन शोभता।
उनको तज के संयम लेते कर्म कलिमल सोखता।।
केवलज्ञान पाकर के देते, मोक्षमार्ग का साज रे।।2।।

चौथा आरा शाश्वत जहाँ पर, चार तीर्थ सुखकारी रे।
करणी करके जाते मोक्ष में अब भी वहाँ नर-नारी रे।।
'मुनि धर्मेश' की यही कामना पाऊँ शिव सुख राज रे।।3।।

48. श्री वज्रधर स्वामी स्तुति

तर्ज : दिल के अरमां.

वज्रधर प्रभु को हृदय से ध्याईये।
जिन्दगी अनमोल लाभ उठाईये।।टेर।।

पश्चिम धातकी पूर्व विदेह में दीपती।
वत्स विजया सुषमा नगरी यश गाईये।।1।।

पद्मरथ नृप है पिता माँ सरस्वती।
वृषभ लांछन तन की शोभा पाईये।।2।।

विजयादेवी पटराणी जिनकी शोभती।
पुत्र द्वादश जान आनन्द पाईये।।3।।

ममता तज कर आपने संयम लिया।
पाया केवलज्ञान नित्य गुण गाईये।।4।।

भरत क्षेत्र में नहीं यहाँ जिनराज है।
धर्म करणी करके शरण जाईये।।5।।

49. श्री चन्द्रानन स्वामी स्तुति

तर्ज : तू तो राम सुमर-

तू तो चंद्रानन जिन भज ले रे-3 रे जीवड़ा
जीवन सफल तू कर ले रे।।टेर।।

पश्चिम धातकी पश्चिम विदेह में।
नलिनावती विजय रे जीवड़ा।।1।।

वीतशोका नगरी जहाँ प्यारी।
चौथा आरा वर्ते रे जीवड़ा।।2।।

वाल्मिकी नृप की महारानी।
पद्मावती चित धार ले रे जीवड़ा।।3।
उनके घर में जन्मे प्रभुजी।
वृषभ लांछन तन लख ले रे जीवड़ा।।4।।
मोह ममता तज संयम ले के।
केवलज्ञान को वर ले रे जीवड़ा।।5।।
'धर्म' देशना सुनकर प्यारी।
भविजन भव जल तरते रे जीवड़ा।।6।।

50. श्री चंद्रबाहु स्तुति

तर्ज : ब्याव बीनणी.

रे चेतन तू चन्द्रबाहु रो सुमिरण कर ले घड़ी-घड़ी।
आरो ध्यान धरता थारी कट जासी आ कर्म लड़ी।।टेर।।

पूर्व पुष्करार्ध के पूर्व विदेह में पुष्कलावती विजय प्यारी।
पुंडरिकिणी नगरी के राजा देवकर रेणुका नारी।।
तस सुत आप कमल लांछन युत, सुन्दरा राणी सूं विवाह करी।।1

भोग-रोग से मुक्ति पाकर, योग मार्ग है अपनायो।
घनघाति कर्मों ने क्षय कर, केवलज्ञान है शुभ पायो।।
देशना दे रह्या भव्य जीवां ने, मोक्ष मार्ग री खरी-खरी।।2।

धन्य-धन्य है भव्य प्राणी जो, प्रभु सेवा रो लाभ वरे।
तप संयम आराधन करके, भवसागर ने पार करें।
'मुनि धर्मेश' री एक भावना, दर्शन पाऊँ शुभ घड़ी।।3।।

51. श्री भुजंगदेव स्तुति

तर्ज : लेके पहला-पहला प्यार.

करलो-करलो सब गुणगान, ध्यालो भुजंग प्रभु भगवान।
भवसागर से तुम तिर जाओगे।।टेर।।

पूर्व पुष्करार्ध के पूर्व विदेह में, सुषमा नगरी वत्स विजय में।
माता महिमा महान् पिता महाबल गुणवान।।1।।

पद्म लक्षण है तन पर भारी गर्वसेना महारानी प्यारी।
राजवैभव का कर त्याग, लेते संयम महाभाग।।2।।

उत्कृष्ट तप कर केवल पाया, सच्चे सुख का मार्ग बताया।
ज्ञान दर्शन मय सुखकार, तप संयममय को धार।।3।।

पुण्योदय हम सबका आया, दुर्लभ बोलो का योग सवाया।
'मुनि धर्मेश' पुरुषार्थ को धार, पहुँचो महाविदेह मझार।।4।।

52. श्री ईश्वर स्वामी स्तुति

तर्ज : अंबाजी के सामने.

ईश्वर की भक्ति प्यारी करो सभी नर-नारी।
शिव सुख दातारी रे करो नर-नारी रे।।टेर।।

पूर्व पुष्करार्ध के पश्चिम विदेह में, विप्रा विजय की विजय नगरी में।
जन्मे सुखकारी रे करो नर-नारी रे।।1।।

पिता कुलसेन प्यारे, यशोज्ज्वल के नयन सितारे।
चन्द्र लांछन धारी रे करो नर-नारी रे।।2।।

भद्रावती महारानी अनासक्ति दिल आनी।
संयम लेवे धारी रे करो नर-नारी रे।।3।।

तप कर केवल पाते, मुक्ति का संदेश सुनाते।
भव्यों के हितकारी रे करो नर-नारी रे।।4।।

'धर्मेश' करके पुरुषार्थ होवो भव जाल से पार।
जाओ मोक्ष मझारी रे, करो नर-नारी रे।।5।।

53. श्री नेमप्रभ स्तुति

तर्ज : कद आवोला सांवरिया.

धर ले धर ले रे चेतन तू ध्यान नेमप्रभ स्वामी रो।
पासी-पासी रे तू सुख रो निधान नेमप्रभ स्वामी रो।।टेर।।

पूर्व पुष्करार्ध के पश्चिम विदेह में नलिनावती विजय जान।
वीतशोका नगरी के राजा वीरसेन गुणवान।।
सेना राणी सुत रवि रो निशान।।1।। नेम ... .

राणी मोहना प्यारी जारी छोड़ी ममता सारी।
संयम लेकर कर्म खपाया घनघाति दुःखकारी।।
पायो पायो रे वे केवलज्ञान।।2।। नेम... ....

प्रभु ध्यान रे दर्पण मांहि अपनो रूप निरख लें।
वाही शक्तिधारा में है जागृत उणने कर ले।।
कर ले कर ले रे तू 'धर्म' ध्यान।।3।। नेम..... ...

54. श्री वीरसेन स्वामी स्तुति

तर्ज : म्हारी हथेल्यां रे बीच-

श्री वीरसेन स्वामी रा गुण गाले रे चेतनिया-2।
तू शिव सुख पासी रे तू मोक्ष में जासी रे।।टेर।।

पश्चिम पुष्करार्ध के पश्चिम विदेह में।
पुष्कलावती विजय भारी रे चेतनिया।।1।।

पुंडरीकिरणी नगरी के भूमिपाल पिता तो,
भानुमति माता ज्यांरी रे चेतनिया।।2।।

वृषभ लांछन ज्यारे तन पर सोहे तो,
राजसेना ज्यांरी पटरानी रे चेतनिया।।3।।

राज सुख त्याग ओ तो संयम धार्यो तो,
कर्म खपाय केवल पायो रे चेतनिया।।4।।

चार तीर्थ स्थापन कर देशना है दे रह्या।
ऐ तो मार्ग बतावे सीधो मोक्ष रो चेतनिया।।5।।

तू भी 'धर्म' करणी कर चरण सेवा पाय ले।
तो मोक्ष पाय सिद्ध बण जासी रे चेतनिया।।6।।

55. श्री महाभद्र स्वामी स्तुति

तर्ज : थारी मोह माया ने छोड़.

तू महाभद्र जिनराज प्रभु ने भज रे प्रभु ने भज रे।
थारो होसी बेड़ो पार चेतन तू सुन रे।।टेर।।

पश्चिम पुष्करार्ध में पश्चिम विदेह सुखकर रे-2
है विप्रा विजय में विजया नगरी सुन रे।।1।।

पिता देवसेन उमा माता रा सुत रे-2
है सूर्यकान्ता पटराणी गज लंक्षण से युत रे।।2।।

तज मोह ममता को संयम लिया शुभ कर रे-2
पा केवल वहाँ पे विचर रहे भू पर रे।।3।।

सुन देशना जिनकी भव्य प्राणी सुखकर रे-2
भवसागर से पार होय बने सिद्ध रे।।4।।

'धर्मेश' भी चाहता दर्शन अति शुभकर रे-2
वह दिवस धन्य कब होवेगा हितकर।।5।।

56. श्री देवसेन स्वामी स्तुति

तर्ज : उड़ते पंछी नील गगन में.

देवसेन प्रभु का सुमिरण जो नित उठ करता जाए।
वह मोक्ष गति को पाए।
उनके पावन चरण कमल में नित उठ शीष झुकाए।
वह मोक्ष गति को पाए। ।टेर।।

पश्चिम पुष्करार्ध के पूर्व विदेह में वत्स विजय सुखकारी।
सुसीमा नगरी के सर्वानुभूति नृप गंगा राणी प्यारी।।
उनकी कुक्षी से जन्म लिया शशि लक्षण तन पे सुहाए।।1।।

पद्मावती पटरानी जिनकी मन की ममता मारी।
संयम लेकर कर्म क्षय कर केवलज्ञान पाया भारी।।
चार तीर्थ स्थापन कर उनको मोक्ष मार्ग बतलाए।।2।।

मोक्ष मार्ग आराधा के भविजन भवसागर तिरते है।
सेवा करके प्रत्यक्ष प्रभु की धन्य जीवन करते हैं।।
'मुनि धर्मेश' की यही भावना ऐसा अवसर पाएं।3।।

57. श्री अजित वीर्य स्वामी स्तुति

तर्ज : रेशमी सलवार-

श्री अजित वीर्य जिनराज मंगलकारी है।
जप लो इनका नाम आनन्दकारी है।।टेर।।

है पश्चिम पुष्करार्ध में पश्चिम विदेह सुखकारी।
नलिनावती विजय में वीतशोका नगरी प्यारी।।
महिमा न्यारी है।।1।। श्री.......

है राज्यपाल महाराया कननी महारानी प्यारी।
उनकी कुक्षि से जन्मे स्वस्तिक लक्षण तन धारी।।
महिमा उपकारी है।।2।। श्री.........

थी रत्नमाला महारानी पर विरक्तभाव दिल आनी।
संयम ले कर्म खपा के प्रभु बन गये केवलज्ञानी।।
तीर्थ पति भारी है।।3।। श्री.. .. ....

है देशना अति प्रियकारी सुनकर के सब नर-नारी।
संयम ले कर्म खपा के मुक्तिवरे सुखकारी।।
भव दुःख हारी है।।4।। श्री.........

'धर्मेश' यही तो चाहे, गर करणी का फल पावे।
चल महाविदेह में जाये और प्रभु का दर्शन पावे।।
भावना भारी है।।5।। श्री ....

58. श्री स्थूलिभद्र स्तुति

तर्ज : यह गढ़ चित्तौड़ की कथा.

धन्य स्थूलिभद्र अणगार हुए यशधारी-2
जो चौदह पूर्व धार अन्तिम सुखकारी। टेर।।

नन्द राज्यमंत्री शकडाल पुत्र थे प्यारे-2
यौवन वय में फंस गये वैश्या के द्वारे।
कोशा जिसका नाम थी कामणगारी।।1।।

जब पिता मृत्यु समाचार आपने पाया-2
हो लज्जित संयम पथ को जा अपनाया
फिर करके वहीं चातुर्मास बोध दिया भारी।।2।।

बना श्राविका उसको 'धर्म' यश बहु पाया-2
दिगम्बर श्वेताम्बर भेद तभी से विकसाया।
श्वेताम्बर परम्परा गाती गुण उपकारी।।3।।

59. देवर्धिगणी क्षमा श्रमण

तर्ज : रेशमी सलवार.

देवर्धिगणी क्षमाश्रमण उपकारी है।
जिनशासन में आज महिमा भारी है। टेर।।
बेरावल पट्टण मांही शुभ जन्म आपने पाया।
पिता कामर्धि माँ कलावती का था मन हर्षाया मंगलकारी है।।1।।

देव गुप्त गणी पे संयम ले एक पूर्व का ज्ञान है पाया।
दख प्रतिभा इनकी आचार्य पद बिठलाया फैला यश भारी है।।2।।
निज हाथ में रखी औषध नहीं भूल से जब ले पाये।
जब याद रात्रि में आई पश्चात्ताप मन लाये हृदय मझारी है।।3।।
कमजोर स्मृति उत्तरोत्तर हो रही कैसी भारी।
श्रुतज्ञान टिकेगा कैसे यह चिंता हृदय मझारी छाई भारी है।।4।।
तब सम्मेलन बुलवाकर वाचना की सुखकारी।
फिर ताड़पत्र भोजपत्र पर लिखकर की हुशियारी महाउपकारी है।।5।।
जो आज श्रवण हम करते जिनवाणी श्रेयस्कारी।
उन्हीं की कृपा का प्रसाद है यह मंगलकारी महाउपकारी है।।6।।
'धर्मेश' सदा गुण गाता और अपना भाग्य सराहता।
पा आगमवाणी गुरुवर से जीवन प्रशस्त बनाता श्रेयस्कारी है।।7।।

60. क्रियोद्धारक जीवराजगणी

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की-

जय बोलो क्रियोद्धारक की।
पूज्य जीवराज महासाधक की।।टेर।।

माता केशर के जाये थे।
पिता वीर जी मन हर्षाये थे।।
सूरत में जन्म शुभ धारक की।।1।।

संयम जगयति से लेकर।
गहन शास्त्रों का अध्ययन कर।।
पाया गूढ़ तत्त्व उन पाठक की।।2।।

क्रियोद्धार मन भाया था।
तब लोकागच्छ छिटकाया था।।
शुद्ध संयम व्रत के धारक जी।।3।।

मुँहपत्ति बाँधना शास्त्रसम्मत।
बत्तीस आगम आधारित मत।
सावद्य जड़ पूजा निवारक की।।4।।

'धर्मेश' सदा गुण गाता है।
कर सुमिरण आनन्द पाता है।।
उस साधु मार्ग संरक्षक की।।5।।

61. क्रियोद्धारक धर्मसिंहजी

तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेस-

हुए धर्मसिंह महाराज, धर्म की जहाज, महात्मा भारी।
गुण गावो नर और नारी।।टेर।।

जामनगर में था जन्म लिया, जिनदास शिवा बहन धन्य हुवा।
पाया ऐसा पुत्ररत्न श्रेयकारी।।1।। गुण.........

शिवजी यति से संयम धारा लख शिथिलाचार मन विचारा।
क्रियोद्धारक का निर्णय लीना भारी।।2।। गुण. ....
गुरु परीक्षा हेतु कहते तुम दरिया पीर यदि जा रहते।
एक रात्रि यदि तो आज्ञा दूँ हितकारी।।3।। गुण.........
झट शीष नमाकर वहाँ जाते कर दरिया पीर वश जब आते।
तब धन्य-धन्य सब बोल उठे नर-नारी।।4।। गुण.... ....
हाथ-पैर चारों से लिख लेते सत्ताईस सूत्र पे टब्बा रचते।
'धर्मेश' जावे उन चरणों में बलिहारी।।5।। गुण....... .

62. क्रियोद्धारक धर्मदासजी

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की.

हुए धर्मदास पूज्य उपकारी।
खिल रही जिनकी यह फुलवारी।।टेर।।

पिता जीवनदास बड़भागी थे।
माता हीरा बहन सौभागी थे।।
सरखेज जन्म लिया शुभकारी।।1।।

यति केशव के शिष्य बने।
कर विनय शास्त्र सब खूब भणे।।
हुआ देख आचरण दुख भारी।।2।।

क्रियोद्धार मन में भाया।
शुद्ध साधु मार्ग को अपनाया।।
लिये पुनः शुद्ध महाव्रतधारी।।3।।

निन्नाणु शिष्य दीक्षित होते।
बाईस समूह में वे बंटते।।
करे धर्म प्रचार वे महाउपकारी।।4।।

संथारा शिष्य ने जब धारा।
लख विचलित खुद ले संथारा।।
'धर्मेश' गौरव उन पर भारी।।5।।

63. क्रियोद्धारक लवजी ऋषि

तर्ज : अम्बाजी के सामने-

लवजी ऋषि महाराज, जैनो के हैं सिरताज।
क्रियोद्धारक भारी रे, महिमा अपारी रे।।टेर।।

सूरत गोपीपुरा प्यारा, माँ फूलां का नयन सितारा।
प्रतिभा थी भारी रे, महिमा अपारी रे।।1।।

सामायिक प्रतिक्रमण पाठ, माताजी के सुन याद।
किये सुखकारी रे, महिमा अपारी रे।।2।।

बजरंग यति से लेके दीक्षा, आगमज्ञान खूब सीखा।
मन में विचारी रे, महिमा अपारी रे।।3।।

आगम प्रतिकूल आचार, छाया पूरा शिथिलाचार।
तजे उस वारी रे, महिमा अपारी रे।।4।।

शुद्ध महाव्रत धार, करके क्रियोद्धार।
बने शुद्धाचारी रे महिमा अपारी रे।।5।।

उपसर्ग परीषह जीत, तोड़ी कर्मो की भीत।
यश छाया भारी रे, महिमा अपारी रे।।6।।

'धर्मेश' गुण गाता, मन में अति आनन्द पाता।
मंगलकारी रे, महिमा अपारी रे।।7।।

64. क्रियोद्धारक हरजी स्वामी

तर्ज : खम्मा-खम्मा

खम्मा खम्मा ओ कोटा गच्छ रा थे धणिया,
हरजी स्वामी मोटा गुण दरियां।।टेर।।

लोकागच्छ में संयम लेकर, तेजराज गुरु धार्‌या ओ।
आगम अध्ययन करके गुरुवर मन में आप विचारया ओ।।
शिथिलाचार देख मन में डरिया।।1।।

कोटा शहर में क्रियोद्धार रो शंख गुंजायो हो।
गोधाजी और फरसरामजी रो मिल्यो योग सवायो हो।।
कोटा गच्छ रा नाथ प्रसिद्ध बणिया।।2।।

लोकमनजी पाट विराज्या महाराम सुखकारी हो।
दौलतरामजी पाट आपरे होग्या महागुणधारी हो।।
अजरामर ज्ञान पाया जेठ मुनि हर्षाया।।3।।

लालचंदजी शिष्य आपरा होग्या महाउपकारी हो।
पूज्य हूक्मचंदजी सयम लेयने नाम दीपायो भारी हो।।
हु शि उ चौ श्री ज ग नाना राम आया पाट दीपाया।।4।।

'मुनि धर्मेश' दास चरणां रो, गुण गाय हर्षावे ओ।
कोटा सम्प्रदाय रो जग में यश फैलतो जावे हो।।
ओहिज मन में भाव जगियां, सब रे मन बसग्या।।5।।

65. पूज्य हुक्म स्तुति

तर्ज : नखराली देवरियो.

क्रियोद्धारक जग मांय, हुक्म पूज्य हितकारी।
ज्यांरो नित उठ जप लो जाप, जाप मंगलकारी।।टेर।।

टोडारायसिहं जन्म लियो, मॉ मोती री पुण्याई।
पिता रतनचंदजी रे मन, भारी खुशियॉ छाई।।
चपलोत रो कुलदीपक, चमकियो श्रेयकारी।।1।।

मात-पिता तो यौवन वय में शादी करणो चावे।
लाल गुरु उपदेश श्रवण कर आप विरक्त बन जावे।
बूंदी में संयम लेय ज्ञान घट भरे भारी।।2।।

कथनी करनी री देख भिन्नता, क्रियोद्धार मन भावे।
गुरु संग ने तज आप अकेला जावद चलकर आवे।।
दृढ़ संयम पालन रो व्रत लियो दिलधारी।।3।।

बेले-बेले करे पारणा, एक चादर तन धारें
तली और मिष्ठान तज सब, तेरह द्रव्य रखे सारे।।
दो सहस्त्र शक्रस्तव सूं जिन स्तुति करे प्यारी।।4।।

पा संयम सुवास दयाल मुनि चरणों में आ जावे।
वीरभानजी रा शिष्य मोती मुनि आप साथ निभावे।।
सती रंगूनंद खेताजी साथ देवे मिल भारी।।5।।

रामपुरा में सती सुन्दर की हथकड़ी बेड़ी टूटी।
चित्तौड़ में देखो कुष्ठी री बीमारी तन सूं छूटी।।
नाथद्वारा रूपियॉ री वर्षा हुई चमत्कारी।।6।।

जिण दिश पड़े चरण आपरा, आनन्द मंगल छावे।
परदेशी बाबा रा सुणने चमत्कार हर्षावे।।
शुद्ध समकित धारण कर संयम लेवे नर-नारी।।7।।

मालव और मेवाड़ पावन कर, बीकाणे में आवे।
पॉच दीक्षा दे शिव मुनि को संघ रो भार भोलावे।।
जावद में आकर के संथारो लियो धारी।।8।।

उन्नीसौ सतरे वैशाख सुद पांचम स्वर्ग सिधाया।
एकसौ चौतीसवीं पुण्यतिथि पर टोडारायसिंह आया।
'धर्मेशमुनि' ने तब गुण गाये मंगलकारी।।9।।

66. पूज्य शिव स्तुति

तर्ज : सब बोलो जय-जयकार-

थे शिव सुख के दातार, शिवगणी सुखकारी।
तुम ध्याओ सब नर-नार, शिवगणी सुखकारी।।टेर।।

गॉव धामनिया मालवा मांही, बोड़ावत कुल है सुखदायी।
लिया जहॉ अवतार, शिवगणी सुखकारी।।1।।
टीकमदास पिता बडभागी, माता कुन्दन थी सौभागी।
पाया पुत्र सुखकार, शिवगणी सुखकारी।।2।।
भोलाराम लक्ष्मीचंद प्यारे, लघु भ्राता थे दो सुखकारी।
जिनका बहु परिवार, शिवगणी सुखकारी।।3।।
रत्नपुरी में संयम धारा, दयालचंद गुरु सुखकारा।
पाया आनन्द अपार, शिवगणी सुखकारी।।4।।
गुरु वियोग हुआ दुःखकारी, रहते हुक्म शरण मझारी।
विनीत भाव दिलदार, शिवगणी सुखकारी।।5।।
पूज्य हुक्म का मन हर्षाया, संघ अधिकार इन्हें सम्भलाया।
बीकानेर मझार, शिवगणी सुखकारी।।6।।
तैंतीस वर्ष एकान्तर ठाया, जिनशासन को खूब दीपाया।
जावद संथारा धार, शिवगणी सुखकारी।।7।।
'मुनि धर्मेश' धामनिये आया, गुरुभक्तिमें गीत बनाया।
गाया सभा मझार, शिवगणी सुखकारी।8।।

67. पूज्य जवाहर स्तुति

तर्ज : प्यासे पंछी नील गगन में-

जैन जवाहर ज्योतिर्धर रा, गुण सब मिलने गावां।
मैं श्रद्धासुमन चढ़ावां।।
महापुरुषा री यशगाथा सूं जीवन धन्य बनावां।
मैं श्रद्धासुमन चढ़ावां।।टेर।।

शस्य श्यामला मालव भू में शहर थांदला नामी।
जीवराजजी नाथीबाई री जागी पुण्यवानी।।
कवाड़ कुल दीपक रो यश, सुण मन में अति हर्षावां।।1।। मैं....

चार वर्ष री लघु वय मांही, माय बाप विरलायां।
बारह वर्ष में मामाजी री उठ गई छत्रछाया।।
पुण्यवानी रो देख नजारो, मन में अचरज पावां।।2।। मैं. ..

मगनमुनि रा दर्शन कर, विरक्तभाव उमड़ायो।
संयम लेता छः महीना में, वियोग गुरु रो छायो।।
मुनि मोती सेवा रो ओ सुफल सब ही पावां।।3।। मैं....

अल्पकाल में बढ़ती प्रतिभा, देख सभी हर्षाया।
राजा राणा और नेता सब, दौड-दौड़ ने आया।।
क्रान्तिकारी विचारां ने पढ़-सुण ने सब हर्षावां।।4।। मै.. ..

अनुकम्पा री ढाला ने रच, थलियॉ रो भ्रम मिटायो।
सद्धर्म मण्डल री शक्ति सूं, भ्रम विध्वंस करायो।।
ज्यांरी किरणावलियॉ सूं, सद्‌बोध सदा ही पावां।।5।। मै...

स्वदेशी आन्दोलन साथ में अल्पारम्भ री व्याख्या।
जिणने सुण-सुण ने सगलाई, निज मन मांही चमक्या।।
संयम दृढ़ता सुण ने बांरी गौरव मन में लावां।।6।। मै...

सुसंगठन रा नियम बांध, नींवा रा पत्थर जड़ग्या।
पूज्य गणेशी उणरे ऊपर, सुन्दर महल एक चुणग्या।।
साधुमार्गी संघ महल में, आज सभी सुख पावां।।7।। मैं. ...

नाना गुरु है संघ सेवरो, चहुँदिश माहे चमके।
आज्ञाकारी संघ चतुर्विध मन माहे अति हरखे।।
'मुनि धर्मेश' कहे भव-भव में शरणो संघ रो पावां।।8।। मैं. ...

68. पूज्य गणेश स्तुति

तर्ज : हीरा मिसरी का.

गणनायक गणेश तुम्हारी जय-जय हो।
जिनशासन प्राणेश तुम्हारी जय-जय हो।।टेर।।

इन्द्रा मॉ का भाग्य सवाया, श्रेष्ठी सायब मन हर्षाया।
मारु कुल राकेश तुम्हारी जय-जय हो।।1।। गण.......

मात-पिता, पत्नी विरलाई, मन में विरक्त भावना आई।
बन गये तुम योगेश, तुम्हारी जय-जय हो।।2।। गण.......

गुरु जवाहर से तुम पाये, आत्मगुण अद्भुत विकसाये।
बन गये तुम शासनेश, तुम्हारी जय-जय हो।।3।। गण.......

श्रमण संघ के नाथ कहाये, ममत्व भाव किंचित् नहीं लाये
था एक ही तव आदेश, तुम्हारी जय-जय हो।।4।। गण......

अनुशासनबद्ध संयम प्यारा, जिस साधक ने लक्ष यह धारा
रखी कृपा विशेष, तुम्हारी जय-जय हो।।5।। गण.........

चतुर्विध संघ की लख व्यथा, निज हाथों से करी व्यवस्था
स्थापित किया पाटेश, तुम्हारी जय-जय हो।।6।। गण.......

अन्तिम समय निकट जब आया, संथारा कर स्वर्ग सिधाया।
बन गये तुम स्वर्गेश, तुम्हारी जय-जय हो।।7।। गण. ....

गुरु नाना अनुशासन पाकर, मन में अति प्रमुदित होकर।
गुण गाता 'धर्मेश' तुम्हारी जय-जय हो।।8।। गण........

69. पूज्य नानेश स्तुति

(69वीं जयन्ती दांता गॉव में)

तर्ज : खम्मा खम्मा खम्मा.

इण धरती सूं म्हांने घणो प्यार हो, घणो अनुराग ओ।
अठे जन्मियां म्हारा गुरुवर सा.।।टेर।।

इण धरती पर जन्म लियो म्हारा नाना गुरु गुण धारी हो।
जेठ सुदी इण बीज ने छाई, घर-घर खुशियाँ भारी हो।।
पोखरना कुल रो ओ भाग जाग्यो, सबने व्हालो लाग्यो।।अठे.....

मोड़ीलालजी मोद मनाया श्रृंगारा हर्षाई हो।
गोवर्धन तो नाम दियो पण केवे लोग लुगाई हो।।
नाना नाम सूं जग में खूब चमक्यो चमत्कार बणग्यो।।अठे.....

जो भी सांचा मन सु ध्याया, संकट सब विरलाया हो।
आंधा री तो आंख्या खुल गई, रोग्यां रा रोग नशाया हो।।
इण नाम सूं मझधार तिरग्या बेड़ा पार करग्या।।अठे. ...

बड़ा-बड़ा शहरां रो गौरव, इण रे सामे फीको हो।
एक रतन ओ ऐसो जन्म्यों नाम होग्यो नीको हो।।
इण रो गौरव तो आज जग छायो, सब रे मन भायो।।अठे....

आया जन्म दिवस मनावा, जन्मभूमि रे माही हो।
'मुनि धर्मेश' चेतावे थानै, सुन लो भाई बाई ओ।
देवो नानेश नगर नाम प्यारो, खुलसी भाग थारो।।अठे.....

70. पूज्य राम स्तुति

(देशाणे रो टाबरिया)

तर्ज : नखराली देवरिया -

देशाणे रो टाबरियो साधना रे शिखर चढ़ग्यो।
शिखर चढ़ग्यो भावी शासक बणग्यो।।टेर।।

नेमीचंदजी रो लाड़लो ओ गवरां बाई रो जायो।
भूरा कुल रो देखो जग में नाम हुयो सवायो।।
जिनशासन क्षितिज में, आशा रो दीप जलग्यो ।।देशाणे...
संयम लेकर गुरु चरणों में, तन मन अर्पण कीनो।।
सेवा करके ज्ञान सौरभ सुं जीवन सुरभित कीनो।
गुरुवर री कसौटी पर, खारो श्रीराम उतरग्यो। ।देशाणे...
बीकाणे रे राज प्रांगण में, महोत्सव हुयो सवायो।
गुरुवर नाना निज चादर दे, युवाचार्य बणायो।।
चतुर्विध संघ सारो, हर्ष विभोर बणग्यो ।देशाणे....
गुण गौरव गा आज म्हे तो मन में आनन्द पावां।।
रामराज्य आदर्श बणे ओ धर्म भावना भावां।
जैनागम सद्ज्ञान सूं हृदय घट पूरो भरग्यो।।

71. ओ नाना पूज्य हमारो

तर्ज : प्यासे पंछी-

ओ जैन धर्म नो दिव्य सितारो चमक्यो जग में सारो।
ओ नाना पूज्य हमारो।।
एनो पाट महोत्सव आजे, आव्यो छे सुखकारो।
ओ नाना पूज्य हमारो। ।टेर।।

श्रेष्ठी मोडी माँ श्रृंगारा नी पुण्याई भारी।
एहवो पुत्ररत्न ने जायो, श्रीसंघ है आभारी।।
पोखरना कुल दीपक छे ओ दाता गाँव नो प्यारो।। ओ........
भर यौवन में संयम लीधो, गुरु गणेश गुणधारी।
ज्ञान ध्यान तप संयम थी आ महकी जीवन क्यारी।।
साधक थी शासक पद पायो, आचारज श्रेयकारो।। ओ.. ..
चौबीस वर्ष ना शासनकाल मां, वृद्धि थई अति भारी।
बेसो पच्चीस थी ऊपर थई दीक्षा मंगलकारी।।
धर्मपाल समाज नी रचना नो छः भव्य नजारो।। ओ.. .... .
एकज दीक्षा एकज शिक्षा एकज छे समाचारी।
एकज नेतृत्व मां चाले सहू मिल ममत्व भाव निवारी।।
अनुशासनबद्ध संघ चतुर्विध केवो छे सुखकारो।। ओ.. ......
ध्यान-समीक्षण समता-दर्शन देन गुरु नी भारी।
मनमोहक मुख मुद्रा थी, झर-झर झरतो अमृत वारी।।
सांभलता मन मुद्रित बने छे, श्रोता नो दल सारो।। ओ.........
नेत्रहीन ना नेत्र खुल्या ने रोगी ना रोग नसाया।
सांचा मन थी जे ध्याया ते, परचा सारा पाया।।
चरण रज मां पण आ शक्ति अजमावी ने निहारो।। ओ... .....
रजत महोत्सव आज मनावां, श्रद्धा दिल मां धारी।
मुम्बई घाटकोपर स्थानक मां, हर्षित छे नर-नारी।।
युग-युग जीवो 'मुनि धर्मेश' ने एकज शरणो थारो।। ओ.....

72. भरत क्षेत्र में भावी जिन

तर्ज : जाओ जाओ ए मेरे-

होंगे-होंगे इस भरत क्षेत्र में भावी जिन सुखकार। टेर।।

श्रेणिक पद्मनाभ सुपारस सुरदेव जिनराज।
उदाई सुपार्श्व जिन और पोटिल स्वयंप्रंभ ताज।।1।।

दृढ़ युद्ध सर्वानुभूति जिन कार्तिक देव श्रुति जान।
शंख श्रावक उदयनाथजी आनन्द पेढ़ाल जी मान।।2।।

सुनन्द श्रावक पोटिल जिन, पोखलीजी शतक महान्।
देवकी मुनिव्रतजी स्वामी और कृष्ण अमम ला जान।।3।।

सत्य रुद्र निष्कषाय होंगे बलभद्रजी निष्पुलाक।
सुलसाजी निर्मम जिन और रोहिणी चित्रगुप्त भाख।।4।।

रेवती समाधिनाथ प्रभुजी शत तिलक संवर स्वाम।
कर्ण विजय जिन द्वीपायन ऋषि यशोधर सुखधाम।।5।।

मल्ल नारद मलदेव बनेंगे अन्य श्रावक देवचंद।
अमर अनन्त वीर्य शतक जी श्री भद्रंकर सुखकंद।।6।।

बीस स्थान आराधन करके गौत्र तीर्थंकर बांध।
'मुनि धर्मेश' कहे अवसर्पिणी मे मुक्ति लेवे साध।।7।।

73. महावीर स्वामी स्तुति

तर्ज : इन्हीं लोगों ने.

महावीर स्वामी-3 लगते प्यारे।
जिनराज हमारे।।टेर।।

माता त्रिशला के हैं जाये।
सिद्धारथ कुल उजियारे।।1।।

यौवन वय में विवाह रचाया।
यशोदा पीऊ बन प्यारे।।2।।

पुत्री प्रियदर्शना जन्मी प्यारी।
फिर संयम स्वीकारें।।3।।

उग्र तप कर केवल पाया।
देव हर्षित हुए सारे।।4।।

समोशरण की रचना करते।
चार तीर्थ स्थापे प्यारे।।5।।

चौदह सहस्त्र मुनि शिष्य प्रभु के।
शिष्या छत्तीस सहस्त्र सारे।।6।।

कर्म क्षय कर मोक्ष पधारे।
तोड़ भव बंधन सारे।।7।।

'मुनि धर्मेश' की यही तमन्ना।
टूटे बन्धन दुःखकारें।।8।।

74. मैं आया हूँ जिनराज

तर्ज : तेरे पूजन को भगवान-

मैं आया हूँ जिनराज, आज तेरे चरणों में।
अब पाने शिव सुखराज, आज तेरे चरणों में। टेर।।
गुण ज्योति पाकर के तेरी, आत्मज्योति जगी अब मेरी।
पाने मुक्ति का शुभ साज, आज तेरे चरणों में।।1।।
प्रगटे मुझमें ऐसी शक्ति, करुं देव गुरु धर्म की भक्ति
लेकर जिनवाणी का साज, आज तेरे चरणों में ।।2।।
भोगों से होवे विरक्ति, त्याग मार्ग में हो अनुरक्ति।
ऐसी रचकर धर्म समाज, आज तेरे चरणों में।।3।।

75. मैं अरिहन्त पद पा जाऊँ

तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर-

अरिहंत देव के चरणों में मैं नित-उठ शीष झुकाऊँ।
निज अन्तर ज्योति जगाऊँ।।
अपने अरिदल को परास्त कर, विजय पताका फहराऊँ।
मैं अरिहन्त पद् पा जाऊँ। टेर।।
राग-द्वेष दो मूल शत्रु हैं जिनकी संतति भारी।
अष्ट कर्म रूप यह देखो, कैसी है दु:खकारी-2।।
इनकी और संतति जो है, समझ उन्हें भगाऊँ।।1।। मैं. .... ..

पॉच नव दो और अठावीस चार शत-त्रय सारी।
दो पॉच कुल शत अठावन, पूरी है दुःखाकारी-2।।
पंचाश्रव पोषक कर्ता पर, संवर बॉध बंधाऊँ।।2।। मैं... ... .
यति धर्म को धारण करके, तप की आग जलाऊँ।
इन कर्मों की भस्मी करके, निरन्जन बन जाऊँ।।
सिद्ध गति को पाकर के, मैं आत्म 'धर्म' पा जाऊँ।।3।। मैं...

76. चौबीसी

तर्ज : घूड़लो घूमेला जी घुमेला.

तू सोच अरे नादान, अठा सूं जाणो है, थंने जाणो है।
तू भज ले जिन भगवान, अगर सुख पाणो है जी पाणो है।।टेर।।
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति पद्म हैं दुःख निकंदन।
धार ले आंरो ध्यान अठा सूं जाणो है थनै जाणो है।।1।।
सुपार्श्व चन्द्रप्रभ सुविधि शीतल जिन, श्रेयांस वासुपूज्य भज ले निशदिन।
गुणरत्नों की खान अठा सूं जाणो है थनै जाणो है।।2।।
विमल अनन्त धर्म शान्ति जिनेश्वर, कुंथुनाथ अरह अखिलेश्वर।
पाया मोक्ष निधान अठा सूं जाणो है थनै जाणो है।।3।।
मल्लिनाथ मुनि सुव्रत नमि अरिष्टनेम पारस महाज्ञानी।
महावीर भगवान, अठा सूं जाणो है थनै जाणो है।।4।।

चारों अनुयोगों में संचित है।
और आत्मबोध अनुरंजित है।।
यह स्याद्वादमय श्रेयकारी।।2।।

सम्यक् श्रद्धा से श्रवण करे।
सद्ज्ञान से उसको वरण करें।।
'धर्मेश' वरे मुक्तिप्यारी।।3।।

80. म्हारी आत्मा ने आप जगाई दो

तर्ज : म्हारी हथेल्यां रे बीच छाला.

म्हारी आत्मा ने आप जगाई दो म्हारां जिणवरजी।
मैं आयो थारे चरणां में।।
इण में ज्ञान रो दीप जलाई दो म्हारां जिणवरजी।
मैं आयो थांर चरणां में।।टेर।।

सम्यक्ज्ञान बिन आतो भव-भव भटकी।
अब केवट बण पार लगाई दो।।1।। म्हारां.........

भौतिक सुखां ने देख घणी ललचावे।
इण ने आध्यात्म रो आनन्द बताई दो।।2।। म्हारां.... ....

इन्द्रियाँ रा विषय री झट दास बण जावे।
इण में त्याग रो मार्ग बताई दो।।3।। म्हारां........

धर्म रा भ्रम में आ झट फंस जावे।
इण में ''धर्म'' रो मर्म बताई दो।।4।। म्हारां.... ....

81. जिनवर मुझ पर महर करो

तर्ज : घर आया मेरा परदेशी-

जिनवर मुझ पर महर करो
भवसागर से पार करो।।टेर।।

लख चौरासी में भटका मोह बंधन से फंस लटका।
अब तो इससे मुक्त करो।।1।। भव. .....

धर्म के अभिमुख हो जाऊँ, सम्यक्त्व रत्न को मैं पाऊँ।
ऐसी मुझ में ज्योति भरो।।2।। भव...... ..

सत्ता-सम्पत्ति नहीं चाहूँ श्रावक के गुण विकसाऊँ।
ऐसी मुझ में शक्ति भरो।।3।। भव....... .

संयमी बन भू-मण्डल विचरूं, पंडितमरण को वरण करूं।
मनोरथ यह पूर्ण करो।।4।। भव. ....

'धर्म'पे अर्पण हो जाऊँ, मुक्तबन सिद्ध गति पाऊँ।
आशा मेरी सफल करो।।5।। भव.. ......

82. म्हारी समकित शुद्ध बनाई दो

तर्ज : म्हारी हथेल्यां री बीच.

म्हांरी समकित शुद्ध बनाई दो म्हारां प्रभुजी-2
मैं नित उठ गुण गाऊँ जी।
सॉची श्रद्धा री ज्योत जगाई दो म्हारां प्रभु जी-2
मैं नित उठ गुण गाऊँ जी। ।टेर।।

ओ मिथ्यात्व रो भूत म्हारे लारे जब्बर लागो।
इण भूत सूं पिंड छुड़ाई दो म्हारां प्रभु जी।।1।। मै.........

शम संवेग निर्वेद गुण जागे।
अनुकम्पा आस्था बढ़ाई दो म्हारां प्रभु जी।।2।। मैं... ...

शंका कांक्षा वितिगिच्छा पर पासंड पसंसा।
तोसंस्तव आदि दोष दूर भगाई दो म्हारां प्रभु जी।।3।।मैं......

सुदेव गुरु 'धर्म' री भक्तिमैं बजाऊँ-2
कुदेव गुरु धर्म सूं बचाई जो म्हारां प्रभु जी।।4।। मै......

83. जिणवर सूं कर ले प्रीत

तर्ज : नखरालो देवरियो.

जिणवर सूं कर ले प्रीत प्रीत थारी मीत बणसी।
प्रीत री समझ ले रीत रीत थने पार करसी।।टेर।।

रीत-प्रीत री खीर नीर वत जो कोई है अपनावे।
जिनवर रे वचनो पे अर्पित होकर प्रीत निभावे।।
नहीं होवे मन शंकित प्रीत बेड़ों पार करसी।।1।।

ज्यूं पणिहारी कुम्भ न विसरे, करते अन्य से बात।
ऐसे ही जिनवर से प्रीति, जुड़ जाये दिन-रात।।
चाहे साधे जग व्यवहार, प्रीति खेवो पार करसी।।2।।

प्रभु प्रीति में तादात्म्य संबंध श्रेष्ठ बतलाया।
स्तुति और पूजा आदि सामान्य है गाया।।
'धर्मेश' होवेला बेड़ो पार प्रीत रो तार जुड़सी।।3।।

84. आया हूँ प्रभु शरण तुम्हारे

तर्ज : खड़ी नीम के नीचे-

आया हूँ प्रभु शरण तुम्हारे कर्म रोग निवृत्ति को।
दे दो ऐसी औषध प्रभुवर पा जाऊँ मैं मुक्ति को। टेर।।

नव घाटी के विकट मार्ग को पार कर मैं आया हूँ।
जन्म-मरण की महाव्यथा को भोग-भोग घबराया हूँ।।
छूटूं कैसे उन कष्टों से चाहूँ ऐसी युक्ति को।।1।।

क्रोध, मान, माया व लोभ ये चार कषाय है दुःखकारी।
पुनः पुनः कसने की मुझको रखाते हरदम तैयारी।।
कस न सके ये किंचित् मुझको, ऐसी सम्यक् शक्ति दो।।2।।

करके परास्त उनको अब भगवन् मैं भी तुमसा बन जाऊँ।
कर्म कलिमल धोकर भगवन् ज्योत में ज्योत समा जाऊँ।।
सुन लेना प्रभु 'मुनि धर्मेश 'की अन्तर्मन अभिव्यक्तिको।।3।।

85. हो श्रद्धा से पूर्ण अवनत

तर्ज : भावभीनी वंदना

हो श्रद्धा से पूर्ण अवनत् शीश अपना हम झुकायें।
पंच परमेष्ठी चरण में भाव अर्चन हम चढ़ाये।।टेर।।

जिसने घाती कर्म क्षय कर ज्ञान क्षितिज पर चरण धार।
मोक्ष मार्ग के प्रदाता देव अरिहन्त को मनायें।।1।।

कर्म अंजन से निरन्जन बनके मुक्तिको वरण कर।
अव्याबाधसुखमेंहैतन्मयउनसिद्धप्रभुकोमनसेध्याये।।2।।

धर्मसंघ के शास्ता बन संवारते प्रतिपल उसे।
अष्ट संपदा युक्त धर्माचार्य चरण शरण जायें।।3।।

ज्ञान सम्यक् दान देते अज्ञानता को दूर कर।
चरण-करण सत्तरी सम्पन्न उपाध्याय से ज्ञान पायें।।4।।

महाव्रतों की साधना जो कर रहे हो के सजग।
उन साधु वृन्द की उपासना कर 'धर्म 'संबल निज बढ़ायें।।5।।

86. जग में मंगल चार

तर्ज : रेशमी सलवार-

जग में मंगल चार मंगल मंगल है।
धर लो मन में ध्यान मंगल मंगल है।।टेर।।

अरिहन्त देव हैं मंगल श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल।
साधु-साध्वी मंगल और धर्म केवली मंगल।।
मंगल मंगल हैं।।1।।

ये चारों जग में उत्तम और चार ही शरण दाता।
जो इनकी शरण आता वह भवसागर तिर जाता।।
मंगल मंगल हैं।।2।।

ये चारों दुर्गति हर्ता और आनन्द मंगल कर्ता।
अजर-अमर अविनाशी और शाश्वत सुख का दाता।।
मंगल मंगल हैं।।3।।

'धर्मेश' सदा मन ध्यावें, वह परमानन्द को पावे।
और प्राप्त दुर्लभ नर भव को निश्चय सफल बनावें।।
मंगल मंगल हैं।।4।।

87. चौबीसी

तर्ज : पद्म प्रभु पावन नाम तिहारी.

चौबीसी जिन भरत क्षेत्र मझारो कर गया महाउपकारो। ।टेर।।
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन वन्दन बार हजारों।
सुमति पद्म सुपार्श्व चन्द्र प्रभु सम्यक्ज्ञान दातारो।।1।।
सुविधि शीतल श्रेयांस वासु पूज्य मिथ्यादृष्टि निवारो।
विमल अनन्त धर्म शान्ति जिनेश्वर समकित जोत उजारो।।2।।
कुंथु अरह मल्लि मुनि सुव्रत सुव्रत दो सुखकारो।
नमि अरिष्टनेमि प्रभु पारस वीर शासन सिणगारो।।3।।
चार तीर्थ री स्थापना करने पहुँच्या मोक्ष मझारो।
निरंजन निराकारी बनकर बन गया सिद्ध अविकारो।।4।।
'मुनि धर्मेश' मोक्ष हित साधन लीनों शरण तुम्हारो।
हिण्डौन वीर जयन्ती मनाई जोड़ी चौबीसी सुखकारो।।5।।

88. चौबीसी

तर्ज : इन्हीं लोगों ने.

चौबीस जिनवर-3 लागे प्यारा।
भवसागर खारा। ।टेर।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन।
सुमति पद्म सुखकारा।।
सुपार्श्व चंदा सुविधि शीतल जिन।
श्रेयांस वासु पूज्य सारा।।
विमल अनन्त धर्म शान्ति प्यारा।
कुंथू अरह अविकारा।।
मल्लि मुनि सुव्रत व नेमि।
रिष्ट नेम पारस वीरा।।
'मुनि धर्मेश' का अब इस जग से।
करा दो प्रभु निस्तारा।।

89. श्री हुक्म पूज्य ने ध्यावो रे

तर्ज : इम झूरे देव की राणी-

सब हिल-मिल ने गुण गावो।
श्री हुक्म पूज्य ने ध्यावो रे।।टेर।।

शहर टोडारायसिंह वासी
सेठ रतनचंद गुण राशी रे।।1।।

माता मोती री पुण्याई
ओ जायो पूत सुखदाई रे।।2।।

चपलोत वंश हरषायो।

जन-जन में आनन्द छायो रे।।3।।

भर यौवन में जद आया।

पूज्य लाल शरण में आया रे।।4।।

विनय कर ज्ञान बढ़ायो।

देख शिथिलाचार घबरायो रे।।5।।

उत्कृष्ट आचरण धारी।

कियो क्रियोद्धार वे भारी रे।।6।।

इक चादर सूं काम चलावें।

कुल तेरह द्रव्य ही खावे रे।।7।।

बेले बेले तप धारी।

इक्कीस वर्ष सुखकारी रे।।8।।

'मुनि धर्मेश' मन हर्षावे।

जय गीत गुरु रा गावें रे।।9।।

90. सब हिल-मिल मंगल गावां

तर्ज : इम झूरे देव की राणी-

सब हिल-मिल मंगल गावां जन्मोत्सव आज मनावां रे।टेर।।

जेठ सुदी बीज आ आई वा लाई हर्ष बधाई रे।।

माता सिणगारा जायो ओ पुत्ररत्न सवायो रे।।

सेठ मोड़ीलाल हर्षावे गोवर्धन नाम दिरावे रे।।

पर सब ही नानो केवे हिल-मिल ने लाड लडावे रे ।।
नानो मोटो जद होवे, गुरु गणपति दर्शन पावे रे ।।
विरक्त भाव उमड़ायो, संयम ले मन हर्षायो रे ।।
तप संयम जोर सवायो, संघनायक पाट बिठायो रे ।।
संघ गौरव खूब बढ़ायो, यश चहुँदिश में महकायो र ।।
लख प्रतिभा सब चकरावे, विरोधी शीश झुकावे रे ।।
पतितो ने गले लगाया, बांने धर्मपाल बनाया रे ।।
समता की लहर फैलाई, समीक्षण ध्यान बताई रे ।।
दीक्षा रो ठाठ लगायो, अनुशासन पाठ पढ़ायो रे ।।
गुरुदेव दीर्घायु होवो, जन-जन रा पातक धोवो रे ।।
आ मंगल भावना भावे, 'धर्मेश' सभा में गावे रे ।।

91. म्हारे भी सिर पर नाथ कोई

तर्ज : मैं तो ढुंढियो रे सहुजग मांय.

मैं तो सोच्यो रे मैं हूं जग रो नाथ, म्हारा पर कोई हाथ नहीं ।
आज भेद भरी रे खुली बात म्हारे भी सिर पर नाथ कोई । टेर ।।

कर श्रेणिक ने नमन शालिभद्र पहुँच्यां महल मझार ।
करणी मे है कसर म्हारे, कर रह्या मन में विचार ।।1 ।। म्हारे....

अब तो ऐसी करणी करके जाऊँ ऐसे स्थान ।
रंक राय रो भेद नही हैं, मिट जावे दुःख तमाम ।।2 ।। म्हारे ...

एक एक पत्नी ने समझाकर, करने लग्या तैयारी।
खबर पड़ी सुभद्रा ने जब, छूटे नयन अश्रुधारी।।3।। म्हारे ..
न्हावण बैठ्या धन्नाजी जद, चमक्या हृदय मझार।
बात सुण सुभद्रा री जद बोल पड़्या उसवार।।4।। म्हारे....
कायर थारो भाई सुभद्रा, ढोंग करे बेकार।
संयम लेणो धार्‌यो मन में फिर, कांई करणो विचार।।5।। म्हारे....
सुण सुभद्रा रे मन जाग्यो, तत्क्षण जोश अपार।
उणने कायर कहवो स्वामी, बत्तीस नार्‌या रो भरतार।।6।।म्हार
आपरे तो मैं आठ ही स्वामी, इण री ममता मार।
संयम लेवो तो शूरमां जाणूं, आपरी बात में सार।।7।। म्हारे...
सुण धन्नाजी तत्क्षण उठ ने, निकल पड़्या उसवार।
शालिभद्र रे द्वार पर आकर, कर रह्या ऐसी ललकार।।8।।म्हारे
रे कायर तू उतर नीचे, आ जा म्हारे लार।
संयम लेणो धार्‌यो मन में, क्यूं करे ढील बेकार।।9।। म्हारे . .
जीवन ओ क्षणभंगुर भाई, पल रो नहीं विश्वास।
'समयं गोयम मा पमायए' वीर वचन है खास।।10।। म्हारे
सुन शालिभद्र आया नीचे, हो गया धन्ना लार।
साला बहनोई री जोड़ी, आई वीर प्रभु चरनार।।11।। म्हारे.
संयम लेय ने धन्नाजी तो, पहुँच्या मोक्ष मझार।
शालिभद्रजी सर्वार्थ सिद्ध रा भोगे हैं सुख अपार।।12।। म्हारे....
'मुनि धर्मेश' आलनपुर में आयो शरखेकाल।
बैसाख सुदी दसमी ने देखो, जोड़ी है ढाल रसाल।।13।। म्हारे....

92. खम्मा-3 म्हारा ईश्वर मुनिराज ने

तर्ज : खम्मा खम्मा खम्मा-

खम्मा खम्मा खम्मा म्हारा ईश्वर मुनिराज ने
याद कर झूरे नर-नारी जीओ। टेर।।

उन्नीस सौ बहत्तर री चैत्र सुदी तीज ने।
देशनोक माहि जनम पायो जीओ।।

जोरावरमलजी पिता व माता।
हरकु तो हरक मनाया जीओ।।

सुराणा रो गोत्र ओ तो धन्य कहवायो।
भर यौवन मे वैराग्य पायो जीओ।।

जैन जवाहर चरण भेटियां।
तो भीनासर माहि आया जीओ।।

उन्नीसो निन्नाणू री मिगसर वद चौथ ने।
संयम ऊँचा भावां सूं धार्‌यो जीओ।।

शेर ज्यूं ऐ संयम लेय, शेर ज्यू पालियों
ऐ चौथा आरा री वानगी दिखाई जीओ।।

कैसा जब्बर त्याग ने ओ कैसो हो वैराग ओ तो।
याद म्हांने पल पल आवे जीओ।।

सादा जीवन उच्च विचार रो आदर्श।
ओ तो सारा संघ माहे सवायो जीओ।।

एक एक पत्नी ने समझाकर, करने लग्या तैयारी।
खबर पड़ी सुभद्रा ने जब, छूटे नयन अश्रुधारी।।3।। म्हारे...
न्हावण बैठ्या धन्नाजी जद, चमक्या हृदय मझार।
बात सुण सुभद्रा री जद बोल पड्या उसवार।।4।। म्हारे.....
कायर थारो भाई सुभद्रा, ढोंग करे बेकार।
संयम लेणो धार्‌यो मन में फिर, कांई करणो विचार।।5।। म्हारे.....
सुण सुभद्रा रे मन जाग्यो, तत्क्षण जोश अपार।
उणने कायर कहवो स्वामी, बत्तीस नार्यां रो भरतार।।6।। म्हार.
आपरे तो मैं आठ ही स्वामी, इण री ममता मार।
संयम लेवो तो शूरमां जाणूं, आपरी बात में सार।।7।। म्हारे..
सुण धन्नाजी तत्क्षण उठ ने, निकल पड्या उसवार।
शालिभद्र रे द्वार पर आकर, कर रह्या ऐसी ललकार।।8।। म्हारे..
रे कायर तू उतर नीचे, आ जा म्हारे लार।
सयम लेणो धार्‌यो मन में, क्यूं करे ढील बेकार।।9।। म्हारे .
जीवन ओ क्षणभंगुर भाई, पल रो नहीं विश्वास।
'समयं गोयम मा पमायए' वीर वचन है खास।।10।। म्हारे..
सुन शालिभद्र आया नीचे, हो गया धन्ना लार।
साला बहनोई री जोडी, आई वीर प्रभु चरनार।।11।। म्हारे.
सयम लेय ने धन्नाजी तो, पहुँच्या मोक्ष मझार।
शालिभद्रजी सर्वार्थ सिद्ध रा भोगे हैं सुख अपार।।12।। म्हारे.....
'मुनि धर्मेश' आलनपुर में आयो शेखेकाल।
[illegible], जोड़ी हैं ढाल रसाल।।13।। म्हारे.....

92. खम्मा-3 म्हारा ईश्वर मुनिराज ने

तर्ज : खम्मा खम्मा खम्मा.

खम्मा खम्मा खम्मा म्हारा ईश्वर मुनिराज ने
याद कर झूरे नर-नारी जीओ। टेर।।

उन्नीस सौ बहतर री चैत्र सुदी तीज ने।
देशनोक माहि जनम पायो जीओ।।

जोरावरमलजी पिता व माता।
हरकु तो हरक मनाया जीओ।।

सुराणा रो गोत्र ओ तो धन्य कहवायो।
भर यौवन में वैराग्य पायो जीओ।।

जैन जवाहर चरण भेटियां।
तो भीनासर माहि आया जीओ।।

उन्नीसो निन्नाणू री मिगसर बद चौथ ने।
संयम ऊँचा भावां सूं धार्यो जीओ।।

शेर ज्यूं ऐ संयम लेय, शेर ज्यूं पालियों
ऐ चौथा आरा री वानगी दिखाई जीओ।।

कैसा जब्बर त्याग ने ओ कैसो हो वैराग ओ तं
याद म्हांने पल पल आवे जीओ।।

सादा जीवन उच्च विचार रो आदर्श।
ओ तो सारा संघ माहे सवायो जीओ।।

धर्म के

गुरु भाईयाँ री तो जोड़ी जद-जद मिलती।
तो हृदय री कली कली खिलती जीओ।।
ईश्वर ईश्वर केवता ने घणां हर्षावता।
तो नाना गुरु आज मुर्झाया जीओ।।
लागे म्हाने आऊखा रो पूर्वाभास होयग्यो।
मना करता मरुधर सिधाया जीओ।।
मैं तो पूरा अभागा दर्शन बिन रेयग्या।
सेवा भी तो नहीं कर पाया जीओ।।
डी.जी.पी. त्रिपुटी आज घणी घबराई।
तो सुण समाचार बिलखाई जीओ।।
टप-टप आखियाँ सूं आँसुड़ा बहावे।
तो श्रद्धा रा सुमन चढ़ावे जीओ।।

93. धाय माता इन्द्र भगवान

तर्ज : लीला घोड़ा रा असवार-

म्हारी ममता मय धाय मात, म्हांने छोड़ चल्या थे नाथ।
सुणने सब घबराया जी मन में दुख सब पाया जी।।टेर।।
रूपचंदजी रा लाडला थे बृजाबाई अंगजात।
माडपुरा में जन्म लियो थे चौरड़िया कुल नाथ।।
आया गणेश गुरु चरणार, लीनो संयम रो शुभ भार।।1।।सुणने...

गुरुदेव और छोटा मोटा सन्ता री सेवा साधी।
मन री ममता मार ने सबने साता पूरी दीधी।।
दीनो सबने संयम साज, पायो संरक्षक रो ताज।।2।।सुण ने....
कालक्रूर तू ओ कांई करियो दया थनै नहीं आई।
संघ री ढाल धायमाता ने लेग्यो आज उठाई।।
फैल्या जद ए समाचार संघ ने मचग्यो हाहाकार।।3।।सुण ने..
डी.जी.पी. मुनि त्रिवेणी तो सुनकर अचरज पाया।
याद कर थारां उपकारां ने नयनों नीर बहाया।।
करजो श्रद्धांजलि स्वीकार, देवां टोंक नगर मझार।।4।। सुण ने....

94. पधारो कोटा गच्छ रा स्वाम

तर्ज : तेरे पूजन को भगवान-

पधारो कोटा गच्छ रा स्वाम आपरो स्वागत है।
कर रह्या मिलकर लोग तमाम, आपरो स्वागत है। टेर।।
क्रियोद्धारक हरजी स्वामी गोधा फरसराम पूज्य नामी।
हो गये लोकमन महाराम आपरो स्वागत है।।1।।
दौलतराम पूज्य गुणधारी महिमा जैन जगत् में भारी।
लाल पूज्य गुणधाम, आपरो स्वागत है।।2।।
उनके शिष्य हुक्मचंद स्वामी, सहयोगी दयाल हितकामी।
शिव पूज्य के गुरु अभिराम, आपरो स्वागत है।।3।।

उदय चौथ श्रीलाल जवाहर गणेश पूज्य हुए गुण रत्नाकर।
गुण गावें लोग तमाम आपरो स्वागत है।।4।।
श्रमण संस्कृति रक्षणमन भाया, नाना गुरु को पाट बिठाया।।
उनके पट्टधार राम, आपरो स्वागत है। ।।5।।
दिन-दिन हो शासन अभिवृद्धि बढ़ती जावे गुण समृद्धि।
'धर्मेश' बढ़ो अविराम आपरो स्वागत है।।6।।

95. आचार्य श्री राम

तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर-

आचार्य-प्रवर श्री राम मुनिवर, लगते सबको प्यारे।
है संघ के भाग्य सितारे।।
गुरुवर नाना के ये पट्टधर लगते मोहनगारे।
है संघ के भग्य सितारे।।टेर।।
देशाणे में जन्म लिया मॉ गवरा मन हर्षाई।
नेमचन्दजी के घर में तब भारी खुशियॉ छाई।।
नाम जयचंद रखकर मन में, हर्षित होते सारे।।1।।
मुनि अनाथी के जीवन से, अन्तर चेतना जागी।
दृढ संकल्प से तन की वेदना पूरी सब जब भागी।।
गुरुचरणों में आकर तब वे संयम व्रत को धारे।।2।।

विनय वेया वच्च में दत्त चित्त हो, ज्ञान निधान निज भरते।
गुरुवर की कसौटी पर जब, खरे आप उतरते।
युवाचार्य पद देकर गुरुवर निश्चिंतता मन धारे।।3।।
गौरव हैं हम सबको इन पर आशा इनसे भारी।
घोर तपस्वी निर्लेपी ये उच्च क्रिया के धारी।।
'धर्म' संघ यह बढ़े निरन्तर कामना करते सारे।।4।।

96. आचार्य राम पाटोत्सव

तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार की आई-

फाल्गुन की सुद तृतीया देखो, लाई हर्ष बधाई है।
राजतिलक का शुभ संदेशा अपने साथ में लाई है।टेर।।
प्रभु वीर की पाट परम्परा पे गुरुवर नाना राज रहे।
उसके ही संरक्षण हेतु प्रतिपल वे थे गाज रहे।।
वृद्धावस्था देख के अपनी मन में भावना आई है।।1।।
किसको स्थापित करना पाट पर इसका गहन परीक्षण कर।
शिष्य समूह में से श्रीराम का सभी तरह निरीक्षण कर।।
चतुर्विध संघ में यह घोषणा स्पष्ट कराई है।।2।।
चतुर्विध संघ ने हर्षित हो महोत्सव धूम मनाया था।
बीकाणे के राज प्रांगण मे भारी जन उमड़ाया था।।

गुरुवर नाना ने भाव तिलक कर, चादर निज ओढ़ाई है।।3।।

इसी दिवस तो गुरु गणेश ने भी तो यह पद पाया था।
पूज्य जवाहर ने जावद में, अपने पाट बिठाया था।
दादा पोते के राजतिलक की एक ही तिथि मन भाई है।।4।।
अभिवर्धित हो शासन प्रतिपल मंगल भावना भाते है।
हु शि उ चौ श्री ज ग नाना का यश गौरव चाहते हैं।।
'मुनि धर्मेश' राम यश पाओ, देता मंगल बधाई है।।5।।

97. सुधर्मा पाट महोत्सव

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की.

यह पाट महोत्सव आया है।
संघ में अति आनन्द छाया है।टेर।।
प्रभु वीर मोक्ष जब पाते हैं और सिद्धलोक में जाते हैं।
गौतम ने केवल पाया है।।1।। यह .. ..
अब तीर्थंकर का यह शासन, संभाले सुधर्मा यह आसन।
प्रभु ने ही खुद फरमाया है।।2।। यह.........
प्रभु वीर की आज्ञा सिर धर के, संघ चतुर्विध ने मिलकर के।
सुधर्मा को पाट बिठाया है।।3।। यह.........
आचार्य सुधर्मा की जय होवे, जिनशासन जग में यश पावे।
यह मंगल गान गुंजाया है।।4।। यह ....

जम्बू आदि आचार्य-प्रवर, इक्यासीवें पाट नाना पूज्यवर
बयासी पे राम सुहाया है।।5।। यह.. ...
चौमासा मन भाया, 'धर्मेशमुनि' दिल हर्षाया।
पाट महोत्सव आज मनाया है।।6।। यह.......

98. होली पर्व

तर्ज : फागण आयो रे-

होली आई रे-2 सब खेलो मन में हर्ष मनाई रे।।टेर।।
हिरण्य कश्यप ने अहं वृत्ति धार जब यह बात बताई रे।
धर्म कर्म भगवान जगत् मे चीज न कांई रे।।1।।
सबकुछ बस एकमात्र मैं सुख-दुःख दाता भाई रे।
जो सुख चाहे मानो तो दूं सब सुखदाई रे।।2।।
पर उसके सुत प्रहलाद ने, बात जब ठुकराई रे।
दिया भयंकर कष्ट शिखर से नीचे गिराई रे।।3।।
आखिर उसकी बहिन होलिका को रत्न कम्बल ओढ़ाई रे।।
बैठा गोद प्रहलाद को दी झट आग लगाई रे।।4।।
धर्म प्रभाव से प्रहलाद बच गया जली होलिका बाई रे।
तब से होली-दहन हिन्दूजन करते भाई रे।।5।।
वैदिक ग्रंथों की कथा है जो प्रचलित भाई रे।
जैन कथानक मे भी ऐसी घटना आई रे।।6।।

गुरुवर नाना ने भाव तिलक

इसी दिवस तो गुरु गणे

पूज्य जवाहर ने जावद

दादा पोते के राजतिलक व

अभिवर्धित हो शासन प्र

हु शि उ चो श्री ज ग न

'मुनि धर्मेश' राम यश पा

97 सुधर्मा

तर्ज : जय बोल

यह पाट महोत्सव आया ह

संघ मे अति आनन्द छाया

प्रभु वीर मोक्ष जब पाते ह

गौतम ने केवल पाया ह ।।

अब तीर्थंकर का यह शास

प्रभु ने ही खुद फरमाया ह

प्रभु वीर की आज्ञा सिर धार

सुधर्मा का पाट बिठाया ह

आचार्य सुधर्मा की जय हो

यह मंगल गान गजाया ह ।

भाम के गीत

वसन्तपुर के देवप्रिय ब्राह्मण घर यमुनाबाई रे।

सात पुत्र के ऊपर पुत्री होलिका जाई रे ।।7।।

लाड़-प्यार में बनी उद्दण्ड नहीं करत कोई मनाई रे

उज्जैनी के गोविन्द ब्राह्मण को दी जा परणाई रे ।।8

लेकिन उसने देखा उद्दण्डता दी पीहर पहुँचाई रे

भाइयो ने भी रखी न घर पर दी छिटकाई रे ।।9

व्यभिचारी बन जंगल मे अब महफिल उसने जमाई

नगरवासियों ने तंग आकर आग लगाई रे ।।10

आर्त-ध्यान मे मरकर बनते व्यंतर देव सुखदाई

क्रोधित होकर वसंतपुर मे तबाह मचाई रे ।।11

केवलज्ञानी महापुरुषो का आना हुआ सुखदाई

धर्मदेशना सुनकर मन मे ग्लानि आई रे ।।12

यदि आज के दिन मिलकर के सारे लोग लुगाई रे

होली दहन कर कीचड उछाले गाली बोलकर भाई ।।

तो यह उपद्रव छोडे हम सब पश्चात्ताप मन लाई रे

सुन अज्ञानी हर्षित होकर करे क्रिया दुखदाई ।।14

परज्ञानी जन 'धर्म' आराधन करते चित्त लगाई रे

'मुनि धर्मेश' कहे सोचो अब सब जैनी भाई रे ।।15

99. महावीर स्वामी रो शासन

तर्ज : नखराली देवरियो-

महावीर स्वामी रो शासन म्हांने लागे प्यारो।
लागे प्यारो घणो हितकारो।।टेर।।

चैत्र सुदी तेरस ने जन्मिया कुण्डलपुर रे मांही।
तीन लोक में इण अवसर पर भारी खुशियाँ छाई।।
सुर नर ने मोहणियो जन्मियों सुखकारो।।1।।

सिद्धारथ नृप राणी त्रिशला मन में अति हर्षावे।
उलट भाव सूं दान देवे जद लोग बधाई ने आवे।।
सुण-सुण ने उमड़ियो नर-नारियाँ रो दल सारो।।2।।

इन्द्र-इन्द्राणी आकर प्रभु ने मेरु शिखर ले जावे।
अभिषेक कर मंगल गावे जन्मोत्सव मनावे।।
देख देव संशय ने धुजायो मरु प्यारो।।3।।

महावीर वर्धमान नाम ओ सबने घणो सुहावे।
बाल क्रीड़ा ने देख-देख सब आनन्द मन में पावे।।
यौवन वय ने देखी कियो सब विचारो।।4।।

यशोदा सूं शादी कर भोगावली कर्म खपायो।
प्रियदर्शना पुत्री पाकर सारो कुल हर्षायो।।
मात-पिता वियोग सूं विरक्त हुओ मन आंरो।।5।।

तीस वर्ष री वय में प्रभुजी संयम पथ अपनायो।

दुष्कर तप सूं कर्म क्षय कर केवलज्ञान ने पायो।।
तीर्थ री स्थापना कर बणग्यो तारणहारो।।6।।

चंडकोशिया अर्जुन माली सा था जो हत्यारा।
उण सब रा तो कारज सार्‌या महर कर प्रभु म्हारा।।
'मुनि धर्मेश' भी तो लियो प्रभु शरण थारो।।17।।

100. महावीर जयन्ति

तर्ज : गाजे-गाजे जेठ-आषाढ़-

वीर वीर अति वीर महावीर जन्मया या चैत्र सुदी तेरस सुखदाई जीयो।
खम्मा खम्मा-2 महावीर भगवान ने।
मैं तो महावीर जयन्ति मनावां जी ओ
खम्मा खम्मा-2 महावीर भगवान ने।।टेर।।

हिंसा री जद आग धर्म नाम पर जलती।
और खून री नदिया बहती जी ओ।।
ऐसे समय में तो प्रभु जन्म आप लेय ने
करुणा री गंगा बहाई जीओ।।1।।

सांचा सुख खातिर मार्ग त्याग रो बतायो।
खुद त्यागी बण तप जब्बर ठाया जी ओ।।
करुणा कर गौशालक ने आप बचायो।
तो चंडकौशिक नाग ने समझायो जी ओ।।2।।

सगम शूल पाणि यक्ष कष्ट घणा दीना।
पर आप अनुकम्पा दिखलाई जी ओ।।
चन्दनबाला अर्जुन रा कारज सार्‌या।
ऐवन्ता री नांव तिराई जी ओ।।3।।

निन्हव बण केई आपने चूका बताया।
पर आप उणने स्पष्ट कराई जी ओ।।
सेव्यो नहीं प्रमाद मैं तो छद्‌मस्थपणे में
आचारांग साख सुखदाई जी ओ।।4।।

साधुमार्ग शुद्ध आप प्रभुजी बतायो।
तो नाना गुरु सबने समझायो जी ओ।
'मुनि धर्मेश' गुरु आज्ञा सूं चल आयो।
तो जन्म महोत्सव के सिंगा मनायो जी ओ।।5।।

101. वीर जयन्ति है आई

तर्ज : उड़ उड़ रे-

जग जाओ रे जग जाओ रे सब जैनी भाई वीर जयन्ति है आई।
गुण गाओ रे गुण गाओ रे सब हिल-मिल भाई वीर जयन्ति है आई। टेर।।

माता त्रिशला रो भाग्य सवायो सिद्धार्थ नृप मन हर्षायो।
त्रिभुवन में खुशियाँ छाई।।1।।

चैत्र सुदी तेरस सुखदाई इन्द्र-इन्द्राणी मिलकर आई।
जन्मोत्सव मनावे भाई।।2।।

यौवन वय में विवाह रचायो तीस वर्ष में संयम धार्यो।
तप कर केवल पायो भाई।।3।।

धर्म नाम पर पाखण्ड छायो प्रभुजी उण ने दूर हटायो।
धर्म अहिंसा बतलाई।।4।।

चौदह सहस्त्र मुनि सुखदाई छत्तीस हजार सतियाँ मन भाई।
श्रावक-श्राविका हुवा भाई।।5।।

'मुनि धर्मेश' हिण्डौन में आयो छब्बीस सौ जन्म मनायो।
ठाणा तीन सूं हर्षाई।।6।।

102. वीर कैवल्य दिवस

तर्ज : गाजे गाजे जेठ-

आई आई आई प्यारी आज देखो आई रे।
शुक्ला दशमी तो वैशाख री।।
पायो पायो केवलज्ञान वीर प्रभुजी पायो रे।
शुक्ला दशमी तो वैशाख रो।।टेर।।

दसवां स्वर्ग सूं चवकर आया जन्म कुन्डलपुर पाया रे।
जन्मोत्सव देव मनावियो।।1।।

माता त्रिशला सिद्धार्थ नृप मन हर्षाया रे।
पालन करियो अति कोड़ सूं।।2।।

मात-पिता वियोग हुवो जद संयम स्वीकार्यो रे।
तपस्या कीनी है प्रभु जोर री।।3।।

उपसर्ग परीषह सहता प्रभुजी चलकर आया रे।
सामक गाथापति खेत में।।4।।

शाल वृक्ष रे नीचे प्रभुजी ध्यान लगायो रे।
गोदुहासन जृंभक गॉव में।।5।।

वैशाख सुदी दसमी ने प्रभुजी केवलज्ञान ने पायो रे।
घाति कर्मों ने पूरा नाश कर।।6।।

चार तीर्थ री स्थापना करने साधुमार्ग बतायो रे।
'धर्मेश' आलनपुर दिवस मनावियो।।17।।

103. शीतला माता री सातम

तर्ज : घूंसी बाजे रे-

शीतला माता री सातम, आज देखो आई ओ।
बायां री टोली ने देख मति चकराई ओ।
देखो आई ओ बाबा देखो आई ओ।।टेर।।

सामायिक उपवास और ए करे खूब अठाई ओ।
जिनवाणी सुणवां रो लावो ले हर्षाई ओ।

मासखमण भी करे कोड़ सूं पूरो जोर लगाई ओ।
मगर देखा अज्ञानता आरीं मन में आई ओ।
पत्थर-पत्थर देव मनावे करे बोलमां आई ओ।
बेटा-बेटी धन वैभव री आश लगाई ओ।।
गधा री असवारी बैठी थारी शीतला माई ओ।
वा कांई आशा पूरे थांरी कुमति छाई ओ।
थे तो पूजा करने आवो नेवज विविध चढ़ाई ओ।
कुत्ताचंदजी जाय चाट दे धार चलाई ओ।।
समकित रत्न ओ पाय अमोलक, देवो क्यों छिटकाई ओ।
'मुनि धर्मेश' कहे क्यों थांरी मति भरमाई ओ।।

104. अक्षय तृतीया

तर्ज : उड़-उड़ रे-

आई आई रे-2 देखो अक्षय तृतीया।
ऋषभ री याद दिलावण ने।
आदि जिनेश्वर कियो पारणो।
महोत्सव आज मनावण ने। टेर।।

नाभि नृप मरुदेवी रा जाया आदि नृप आदि मुनिराया।
आदि जिन गुण गावण ने।।1।। ऋषभ........
एक संवत्सर बीतण आयो, अन्न जल प्रभुजी कुछ नहीं पायो।

इण तन ने टिकावण रे।।2।। ऋषभ.. ....
समता भाव में साधना करता भू-मंडल पर आप विचरतां।
चाल्या गजपुर जावण ने।।3।। ऋषभ.....
श्रेयांस कंवर दर्शन जद पायो जाति स्मरण सूं ध्यान लगायो।
उठ्यो इक्षुरस बहरावण ने।।4।। ऋषभ.. ......
प्रासुक लख प्रभु कर फैलायो पारणा सूं जद आनन्द आयो।
लाग्या देव गुण गावण ने।।5।। ऋषभ.........
वो दिन अक्षय तृतीया कहलायो मुनि धर्मेश रो मन हर्षायो।
मोक्ष रो आनन्द पावण ने।।6।। ऋषभ.....

105. रक्षाबन्धन

तर्ज : जय बोलो महावीर-

यह श्रमण संस्कृति आई है।
रक्षा का धागा लाई है।।टेर।।

ओ जैनों अब तुम जग जाओ।
संकल्प रक्षण का मन ठाओ।
यह प्रेरणा साथ में लाई है।।1।।

तुम्हीं तो मेरे रक्षक हो
क्यों बन रहे अब भक्षक हो
यह दर्द सुनाने आई है।।2

नहीं अन्यों से मैं घबराती।
जैनों की दशा लख थर्राती।
क्यों इनमें विकृति छाई है।।3।।

रक्षा का सूत्र यह बंधावाकर
रक्षा मेरी करना मिलकर।
'धर्मेश' भाव यह लाई है।।4।।

106. खम्मा-3 म्हारां आदेश्वर भगवान ने

तर्ज : तेजाजी.

खम्मा खम्मा खम्मा म्हारा आदेश्वर भगवान ने।
ए तो धर्म री आदि कीनी जीओ।।
खम्मा खम्मा खम्मा म्हारा ऋषभ भगवान ने।
ए तो धर्म री आदि कीनी जीओ।।टेर।।

मरुदेवी माता नाभिराजा रा ए नन्दन।
सुनन्दा सुमंगला राणी जीओ।।1।।

भरतादिक बाहुबली सौ-सौ नन्दन जाया।
तो ब्राह्मी सुंदरी पुत्री सती भारी जीओ।।2।।

भूखा मरता जुगलियां ने प्रभुजी बताया।
ए तो असि मसि कृषि कर्म भारी जीओ।।3।।

क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शुद्र वर्ण बनाया।
ए तो राज व्यवस्था करी सारी जीओ।।4।।

देखा-देखा जनता सारी हर्ष मनावे।
ए तो चरणां में शीश झुकावे जीओ।।5।।

माता मरुदेवी मन घणी हरसावे।
ए तो ऋषभ ने देख सुख पावे जीओ।।6।।

जीत व्यवहार साधन इन्द्र चरणों में आवे।
ए तो अवसर आयो संयम रो बतावे जीओ।।7।।

इन्द्र री बात सण माजी कने आवे।
ए तो संयम री बात सुणावे जीओ।।8।।

छोटी-छोटी बात रिखब मने कांई पूछे।
जचे जिया करो फरमावे जीओ।।9।।

माताजी सूं आज्ञा ले प्रभु नगरी बाहर आया।
ए तो राज सुख सब छिटकाया जीओ।।10।।

वस्त्र और आभूषण सब तज दीना।
ए तो मुष्टि सूं केश लोच कीना जीओ।।11।।

भोली माता मरुदेवी समझ न पावे।
वा तो आंख्यां सूं आसूड़ा ढलकावे जीओ।।12।।

ऋषभ ऋषभ करती पास दौड़ी आवे।
ए तो संयम लेई वन में सिधावे जीओ।।13।।

गांवा नगरां घूमे प्रभुजी घर-घर गोचरी जावे।
ए तो एषणिक आहार नहीं पावे जीओ।।14।।

प्रभुजी ने घर आता देख नर-नारी।
ए तो दौड़-दौड़ चरणों में आवे जीओ।।15।।
कोई लावे हीरा पन्ना माणक ने मोती।
कोई लावे हाथी घोड़ा पालकी जीओ।।16।।
कोई सुन्दर कन्याओं ने लाय उभी राखै।
प्रभु आहार बिन पाछा फिर जावे जीओ।।17।।
विचरत आया प्रभु गजपुर नगर में।
श्रेयांस कंवर सपनो पायो जीओ।।18।।
जाति स्मरण ज्ञान सूं सारी बात जानी।
झट प्रभुजी ने महलां में लायो जीओ।।19।।
आप्रासुक आहार देख प्रभु पाछा फिरता।
इक्षुरस घट दृष्टि आवे जीओ।।20।।
हाथ जोड़ प्रभुजी ने भावना भावे।
प्रभु अवसर देख अंजली फैलावे जीओ।।21।।
उल्ट भाव श्रेयांस इक्षुरस बहरावे।
तो देव-देवी मंगल गावे जीओ।।22।।
वैशाख सुदी तीज आ तो अक्षय पद पावे।
सब अक्षय तृतीया महोत्सव मनावे जीओ।।23।।
भायां बायां वर्षीतप दुष्कर ठाया।
ए तो मदरांतकम शहर मे आया जीओ।।24।।
दो हजार चालीस री साल जद आयो।
तो 'मुनि धर्मेश' गीत बनायो जीओ।।25।।

107. रक्षाबन्धान

तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार की आई-

रक्षा बन्धन का यह देखो, पर्व सुनहरा आया है।
रक्षा की गरिमा का सबको, पाठ पढ़ाने आया है।टेर।।
नमूची प्रधान से विष्णु मुनि ने धर्म संघ की रक्षा की।
रक्षासूत्र पा हुमायूं ने नागौर नृप को सहायता दी।
वैसे ही सब सीखो रक्षा करना प्रेरणा लाया है।।1।।
बहन से रक्षा बंधवा करके नारी रक्षा का संकल्प लो।
असहाय हो जो भी बहिनें उनके दुःख को तुम हर लो।
नारी रक्षा की गौरवता को बतलाने आया है।।2।।
ब्राह्मण से रक्षा बंधवाकर ब्रह्मतत्त्व का रक्षण कर।
शस्त्रों के रक्षा को बाधकर गौरव क्षत्रियपन का धार।
क्या कर्त्तव्य तुम्हारा सोचो यह चेताने आया है।।3।।
दवात, कलम और बही के रक्षा बांध वैश्य तूं बन्धन कर।
न्याय नीतिमय धनोपार्जन से ही हो जीवन सुखाकर।
ऐसे शुभ चिंतन का दाता पर्व आज यह आया है।।4।।
'मुनि धर्मेश' संघ संघपति के रक्षासूत्र का बन्धन कर।
असंयम से रक्षा मेरी होती रहे प्रतिपल सुखाकर।
ऐसी मंगलकामना अपने अन्तर मन में लाया है।।5।।

108. यह श्रमण संस्कृति आई है

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की.

यह श्रमण संस्कृति आई है।
बन बहिन राखी यह लाई है।।टेर।।

हे श्रमण श्रमणियों ध्यान धारो।
श्रमण धर्म की रक्षा करो।
पाखण्ड से यह घबराई है।।1।।

मिथ्यात्व दैत्य है मंडराया।
अज्ञान अंधेरा है छाया।
अनीति सिर मंडराई है।।2।।

श्रावक श्राविकाओं जग जाओ।
दुष्कर्म से मुझको छुड़वाओ।
यह दर्द दिखाने आई है।।3।।

जैनी बन मुझको लजवाते।
दुष्कर्मों से बाज नहीं आते।
दुर्गति मन में छाई है।।4।।

अब सब मिल आज संकल्प करो।
इस रक्षासूत्र को ग्रहण करो।
जो 'धर्म' बहिन यह लाई है।।5।।

109. चौमासा री चौदस

तर्ज : होली आई रे.

चौमासा री चौदस भायां आज देखो आई रे।
री गली-गली में खुशियाँ छाई रे।।टेर।।

संता रे चौमासा री आ पूज्यवर कृपा कराई रे।
सफल बणाणो कैसे इणने सुणल्यो भाई रे।।1।।

प्रातः रायसी प्रतिक्रमण ने प्रार्थना में आणो है।
छोटा-मोटा पास-पड़ौसी ने साथ में लाणो रे।।2।।

चदर, धोती और मुँहपत्ती, आसन भी तो लाणो है।
कार्यक्रम में सामायिक कर लाभ कमाणो है।।3।।

उपवास, बेला और तेला, अठाई, मासखमण तप करणोहै।
ज्ञान ध्यान जप तप आदरने लावो लेणो है।।4।।

रात्रिभोजन होटल रो भी खाणो त्याग करणो है।
शिष्टाचार व सभ्यता रो पाठ पढ़णो है।।5।।

मनमुटाव और वैर-विरोध ने दिल सूं दूर हटाणो है।
'मुनि धर्मेश' कहे चौमासो यूं सफल बणाणो है।।6।।

110. चातुर्मासिक विहार

तर्ज :

जावां जावां जावां मैं विहार करी ने जावा ओं।
चौमासी करीने......... शहर सूं। टेर।।

नाना गुरु री आज्ञा सूं मैं आया अठे थारै ओ।
मन में आनन्द अति पावियां।।
धर्म-ध्यान रो ठाठ......... माहे अनोखा लागो हो।
आज विदाई मांगा आप सूं।
म्हारे केणे सुणने सूं दोरो मन में लागो ओ।
क्षमा मांगा हां अन्तर भाव सूं।
अनुशासन में रहिजो सारा संघ गौरव बढ़ाई जो ओ।
भविष्य उज्ज्वल थांरो होवसी।
जातां जातां बात म्हारी ध्यान आप सब लेइजो ओ।
'धर्म' श्रद्धा ने गाढ़ी राखजो।।

111. आज तो चौमासो देखो उठणने आयो रे

तर्ज : सारी सारी रातें.

आज तो चौमासो देखो उठणने आयो रे।
उठणने आयो म्हारे विहार मन भायो रे।

हर्ष सवायो म्हांने हर्ष सवायो रे।।टेर।।

ुरुवर नाना री मैं आज्ञा सूं आयो।
ंघ री भक्ति देख मन हरणायो।
मन हरषायो घणो आनन्द छायो रे।।1।।

चार महिना तक पूरो लाभ उठायो।
छोटा-मोटा रे सब मन घणो भायो।।
मन घणो भायो ए तो यश पायो रे।।2।।

तीनों ही टेम सब लाभ उठावता।
फिर भी मैं तो सबने कैवता ही जावता।।
कैवता ही जाता थारो मनड़ो दुःखायो रे।।3।।

आज सब ही सूं क्षमायाचना चावां।
जाता ही जाता एक बात चेतावां।।
बात चेतावां संघहित मन भायो रे।।4।।

श्रमण संस्कृति रो रक्षण करजो।
साधु संता ने ढ़ीला मत था पटक जो।।
मत था पटक जो ढ़ीला 'धार्म' सुनायो रे।।5।।

112. कृष्ण जयन्ति

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की.

यह कृष्ण जयन्ति है आई।
अध्यात्म-प्रेरणा शुभ लाई। ।टेर।।

आत्मा को देवकी सम जानो।
मोहराज कंस सम तुम मानो।
है कर्म जेल यह दुखदाई।।1।। यह.........

समकित सुत कृष्ण है प्रगटाया।
मिथ्यात्व अंधतम विरलाया।
चहुँदिश में चाँदनी प्रगटाई।।2।। यह. ......

क्रोध कालिया को नाथा।
जरासंध मान फोड़ा माथा
यह पूतना माया चकराई।।3।। यह....... .

शिशुपाल लोभ भी शर्माया।
रुक्म कंवर शिक्षा पाया।
जगी 'धर्म' चेतना सुखदाई।।4।। यह....

113. गौपालक कहाँ गया

तर्ज : मन डोले मेरा.

न जलता, दिल धधकता कर दिवस आज का याद रे।
ह गौपाल कथा कहाँ गया। टेर।।

जिस भूमि पर घी-दूध की नदियाँ बहा जो करती।
उस भूमि की प्यारी जनता पानी बिन भी तरसती।।
किससे पूछें क्या हम सोचें क्यों हुवा यह बेहाल रे।। वह.... .
मोर-मुकुट कटि कांचली पहने वन में धेनु चराता।
राजघराने में पलकर भी गौ को लाड़ लड़ाता।
उस भारत में, जन-जन मन में, नहीं रहा गौ से प्यार र। वह . .
दूध-मलाई चाहते फिर भी गौ मन में नही भाती।
कत्लखानों को देख-देखकर छातीयों थर्राती।
क्या होगा, क्या नहीं होगा, यह भारत का भावी हाल रे।
पूज्यवर नाना यों फरमाते सुख पाना जो चाहो।
प्राणीमात्र की सेवा करके 'धर्म' की ज्योति जगाओ।
सुन कहना पीछे नहीं रहना, रख दिवस आज का याद रे।। वह ....

114. जैन धर्म का महापर्व यह

तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार की आई.

जैन धर्म का महापर्व यह आज पर्युषण आया है।
स्वागत कर लो अन्तर मन से भव्य प्रेरणा लाया है।।टेर।।
विभाव दशा में भ्रमित होकर अपने को ही भूल रहे ।
भौतिकता की चकाचौंध में मदमस्ती में डोल रहे।
स्वभाव दशा में रमण करो यह पर्व संदेशा लाया है।।1।।

सुख-दुःख की कर्ता व भोक्ता अपनी आत्मा खुद ही है
अपनी सृष्टि की निर्माता भी तो आत्मा खुद ही है
शाश्वत आत्मतत्व को समझो पर्व बताने आया है।।2।।

अरे जैनियों ! जाग उठो अब मोह नींद को तज आओ।
धर्म प्रेरणा पाकर के निज जीवन सफल बना जाओ।
सुन्दर अवसर हाथ में प्यारे जो कुछ आपके आया है।।3।।

115. आया आया यह पर्व पर्युषण

तर्ज : जाओ जाओ ए.

आया आया यह पर्व पर्युषण आत्मशान्ति दातार।।टेर।।

स्वागत करके करो आराधन समझ के इसका सार।
आहार शुद्धि का सबसे पहिले करलो मन विचार।।1।।

सहकार शुद्धि की भी आवश्यकता इसमें निश्चय जानो
संशय निवृत्त होने पर ही विकास आत्मा का मानो।।2।।
प्रामाणिक जीवन का होता व्यापार शुद्धि आधार।
वही धन शान्ति का दाता निश्चय लेवो धार।।3।।
जीवन की उन्नत दशा संस्कार शुद्धि से होती है।
इसके बिना मंदी पड़ जाती जीवन की यह ज्योति।।4।।
जीवन की उज्ज्वलता हेतु आचार शुद्धि अपनाओ।
नहीं तो सबकुछ खो बैठोगे इसका ध्यान लगाओ।।5।।
विचार शुद्धि बिन धर्म का टिकना मन में मुश्किल भाई।
धम्मो सुद्ध रस चिट्ठई यह सुक्ति आगम में आई।।6।।
परहेज बिना जैसे औषध का सार नहीं कुछ मिलता।
वैसे ही व्यवहार शुद्धि बिन कर्म रोग नहीं हटता।।7।।
आत्मशुद्धि हित क्षमायाचना अन्तर दिल से कर लो।
'धर्मेशमुनि' पर्युषण पर्व का आराधन सब कर लो।।8।।

116. कर लो रे स्वागत पर्वाधिराज

तर्ज : जाओ जाओ ए-

कर लो कर लो रे स्वागत सब मिल आया पर्वाधिराज।।टेर।।

सब पर्वों में पर्व पर्युषण परमशान्ति का दाता।
लोकोत्तर यह पर्व सुहाना सबका मन हर्षाता।।

करना चाहो सच्चा स्वागत तजो प्रदर्शन पाप।
संशय का है सांप भयंकर और बड़ों का संताप॥
धन का जाप भी पूरा बाधक और दुर्व्यसन भाप।
कुकर्मों की छाप से बचकर तजो अहं अभिशाप॥
अपना अन्तराव लोकन कर आत्मशुद्धि को कर लो
'मुनि धर्मेश' पर्व का स्वागत अन्तर मन से कर लो

117. पर्युषण आया है

तर्ज : कद आवोला-

जागो जागो रे जैनी सब आज, पर्युषण आया है।
कर लो कर लो रे स्वागत सब आज, पर्युषण आया है।टेर

आध्यात्मिक यह पर्व सुहाना सबके मन को भाय
आत्मशुद्धि की दिव्य अपने साथ में लाया।
उठो उठो रे प्रमाद निवार॥1॥ पर्युषण.... ..

विषय विकार री आसक्ति सूं अपने मन ने मोड़ो।
दान, शील, तप, भाव आराधन में इण ने थां जोड़ो।
पावो पावोला थां मोक्ष सुखाकार॥2॥ पर्युषण.... . ..

गुरुवर नाना री कृपा सूं योग मिल्यो सुखदाई।
'मुनि धर्मेश' प्रेरणा देवे......... मांही।
सुनो कानां री थे खिड़किया खोल॥3॥ पर्युषण

118. एक पर्व पर्युषण आवियो

तर्ज : कोयलड़ी सिद चाली-

रे पर्व पर्युषण आवियो ऐ लायो सदेशो खास।
चेतन राजा घर आओ।।टेर।।
ऐ थां बिन थांरो घर उजाड़ियो ऐ चौपट पड्या बीसों द्वार।।1।।
ऐ मोह राजा घेरो डालियो ले हाथ दुधारी तलवार।।2।।
ऐ चतुरंगिणी सेना उणरे साथ में, ऐ लारे अठाईस सरदार।।3।।
ऐ समकित सुता थारी लाड़ली, ऐ हरण री लायोमन आश।।4।।
ऐ अब तो दिखाओ पराक्रम आप रो, ऐ देवो थे उणने पछाड़।।5।।
ऐ करने सगाई 'धर्म' राज सूं ऐ मुक्तिसासरिये पहुँचाय।।6।।

119. पर्युषण पर्व आया है

तर्ज : महावीर स्वामी की सदा जय-

उठो अब जैनियों जागो पर्युषण पर्व आया है।
करो स्वागत हर्ष दिलधार पर्युषण पर्व आया है।टेर।।
तजो अब मोहनिद्रा को जगाओ ज्ञान की ज्योति।
सजाओ धर्म का जेवर, पर्युषण.........।।1।।
आरम्भ परिग्रह की ममता तज संवर वृत्ति को अपनाकर।
धार तप शील का साधन, पर्युषण.. ......।।2।।

करना चाहो सच्चा स्वागत तजो प्रदर्शन पाप।
संशय का है सांप भयंकर और बड़ों का संताप॥
धन का जाप भी पूरा बाधक और दुर्व्यसन भाप।
कुकर्मों की छाप से बचकर तजो अहं अभिशाप।।
अपना अन्तराव लोकन कर आत्मशुद्धि को कर लो
'मुनि धर्मेश' पर्व का स्वागत अन्तर मन से कर लो।

117. पर्युषण आया है

तर्ज : कद आवोला.

जागो जागो रे जैनी सब आज, पर्युषण आया है।
कर लो कर लो रे स्वागत सब आज, पर्युषण आया है। टेर

आध्यात्मिक यह पर्व सुहाना सबके मन को भाया
आत्मशुद्धि की दिव्य अपने साथ में लाया।
उठो उठो रे प्रमाद निवार।।1।। पर्युषण.........
विषय विकार री आसक्ति सूं अपने मन ने मोड़ो।
दान, शील, तप, भाव आराधन में इण ने थां जोड़ो।
पावो पावोला थां मोक्ष सुखकार।।2।। पर्युषण.. .....
गुरुवर नाना री कृपा सूं योग मिल्यो सुखदाई।
'मुनि धर्मेश' प्रेरणा देवे......... मांही।
सुनो कानां री थे खिडकिया खोल।।3।। पर्युषण

118. एक पर्व पर्युषण आवियो

तर्ज : कोयलड़ी स्दि चाली-

रे पर्व पर्युषण आवियो ऐ लायो संदेशो खास।
चेतन राजा घर आओ। टेर।।
ऐ थां बिन थांरो घर उजाड़ियो ऐ चौपट पड़्या बीसों द्वार।।1।।
ऐ मोह राजा घेरो डालियो ले हाथ दुधारी तलवार।।2।।
ऐ चतुरंगिणी सेना उणरे साथ में, ऐ लारे अठाईस सरदार।।3।।
ऐ समकित सुता थारी लाड़ली, ऐ हरण री लायोमन आश।।4।।
ऐ अब तो दिखाओ पराक्रम आप रो, ऐ देवो थे उणने पछाड़।।5।।
ऐ करने सगाई 'धर्म' राज सूं ऐ मुक्तिसासरिये पहुँचाय।।6।।

119. पर्युषण पर्व आया है

तर्ज : महावीर स्वामी की सदा जय-

उठो अब जैनियों जागो पर्युषण पर्व आया है।
करो स्वागत हर्ष दिलधार पर्युषण पर्व आया है। टेर।।
तजो अब मोहनिद्रा को जगाओ ज्ञान की ज्योति।
सजाओ धर्म का जेवर, पर्युषण.. .. ...।।1।।
आरम्भ परिग्रह की ममता तज संवर वृत्ति को अपनाकर।
धार तप शील का साधन, पर्युषण... ....।।2।।

लेवो दुष्कर्म से निवृत्ति करो सत्कर्म प्रवृत्ति।
जगाओ जोश अपने में, पर्युषण.........।।3।।
धर्म उपदेश संतों का, श्रवण कर मन में हर्षाओ।
बढ़ा गौरव जैनत्व का, पर्युषण.........।।4।।
परम आनन्द सब पाओ, 'मुनि धर्मेश' का कहना।
बात यह जान लो हितकर, पर्युषण.........।।5।।

120. आये मुनिवर महल मझार

तर्ज : प्यासे पंछी नील-

आज हुवा भाग्योदय मेरा छाया हर्ष अपार।
आये मुनिवर महल मझार।
तज सिंहासन धार उत्तरासन करें स्वागत सत्कार।
आये मुनिवर महल मझार।।टेर।।
विनीत भाव से सामने जाती विधियुक्त वंदन वहाँ करती।
फिर निज भोजन गृह में लाती उल्टट भाव से आहार बहराती।
द्वार तक पहुँचाकर बैठी सिंहासन जिस वार।। आये....
पुनः मुनिवर आते लखकर उठती वह सिंहासन तजकर।
वही आहार उनको बहराकर आती है वापिस जब अंदर।।
पुनः देखती मुनिवर आते अपने महल मझार।। आये....
उनको भी तो आहार बहराती पर शंकित हो अर्ज सुनाती।

समाधान पा हर्षित होती परिचय पाकर चिंतन करती।।
अतिमुक्तमुनि वचन याद कर शंकित हुई अपार। आये....
शंका आत्मविनाश है करती जल्दी कर लेना निवृत्ति।
ऐसा सोच वह जल्दी आती प्रभु से सत्य समाधान को पाती।
देख-देख निज लालों को वह, पाती आनन्द अपार।
अपने भाग्य खूब सरहावे, वंदन कर पुनः महल में आवे।
बार-बार जब याद सतावे, मोहनी मूरत सामने आवे।
गहन चिंतन में डूब देवकी, करती 'धर्म' विचार। आये....

121. गज सुकुमाल

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत.

गज सुकुमाल के जन्म से देवकी पाती सुख अपार।
हर्षित होते कृष्ण मुरार।।
स्नेह भाव से अभिवर्धित हो, आते यौवन मझार।
हर्षित होते कृष्ण मुरार। टेर।।

गज सुकुमाल का विवाह रचाना अन्तेउर को खूब सजाना।
श्रीकृष्ण ने दिल में ठाना उनके हर्ष का नहीं ठिकाना।।
योग्य कन्याओं का संग्रह करते अन्तेउर मझार।।1।।
रिष्टनेमि प्रभु द्वारिका आये, सुन दर्शन को मन उमड़ाये।
अपने पट्टहस्ती को सजाये, गज सुकुमाल को पास बिठाये।।
मध्य बाजार में आते हैं तब, होता हर्ष अपार।।2।।

सोमिल ब्राह्मण की एक बाला, सोमा का लख रूप निराला।
श्रीकृष्ण ने तब यों बोला, गजसुकुमाल के योग्य है बाला।।
याचना करके भेजो उसको अन्तःपुर मझार।।3।।
सुन सोमिल भी खुश हो जाता, अपनी पुत्री का भाग्य सराहता।
अन्तेपुर में उसे पहुँचाता और विवाह तैयारी करता।।
इधर श्रीकृष्ण चलकर पहुँचे, समवसरण मझार।।4।।
वंदन करके देशना सुनते, गजसुकुमाल विरक्त बन जाते।
आकर महल में आज्ञा चाहते सुनकर सब ही दुःखित होते।।
समझाने पर जब नहीं समझे तब, लाये चरण मझार।।5।।
शिष्य रूप में जब भेंट चढ़ाते, गजसुकुमाल मुनि बन जाते।
प्रभु चरणों में आकर नमते लक्ष्य सिद्धी की पृच्छा करते।।
बारहवीं भिक्षु प्रतिमा का प्रभु करते हैं विस्तार।।6।।
सुन महाकाल श्मशान में आते, एक चित्त हो ध्यान लगाते।
सोमिल ब्राह्मण जब वहाँ आते, देख पहचान के गुस्सा खाते।।
गीली मिट्टी की पाल बाँध सिर, डाले लाल अगार।।7।।
खिचड़ी सम सिर खद बद करता, गजसुकुमाल क्षमा दिल धरता।
शुद्ध भावो से श्रेणि चढ़ता, केवल वर कर मोक्ष में जाता।।
'मुनि धर्मेश' संयम लिया उसी दिन, हो गये भव से पार।।8।।

122. प्रभु नेम अन्तर्यामी

तर्ज : अम्बाजी के सामने-

प्रभु नेम अन्तर्यामी देवकी के मन की जानी।
बात प्रभु सारी हो बोले उसवारी हो। टेर।।

मुनियों की बात सुन संशय आया तेरे मन।
बात सुण म्हारी हो, बोले उसवारी हो।।

तेरे ही ये अंगजात संशय नहीं तिल मात।
बात साची सारी हो बोले उसवारी हो।।

मृत बन्ध्या सुलसा नार हरिणगमैषी की उसवार।
सेवा करे भारी हो बोले उसवारी हो।

खुश होकर देता साज, तेरे पुत्र कंसराज।
मारे दूष्टता धारी हो, बोले उसवारी हो।

अदृश्य शक्ति को धार, पुत्रों को हरण कर।
ले जाता सुखकारी हो, बोले उसवारी हो।।

तेरे पुत्र छहों प्यारे, पोषित हुए सुलसा द्वारे।।
संयम लेते धारी हो, बोले उसवारी हो।

ये ही तो वे अणगार, सुन छाया हर्ष अपार।
छूटे दुग्ध धारी हो, बोले उसवारी हो।

दर्शन कर सुख पाई, वंदन कर महलों में आई।
छाई चिंता भारी हो, बोले उसवारी हो।

देती खुद हो धिक्कार, कैसी मैं हूँ पापन नार।
बहे अश्रुधारी हो, बोले उसवारी हो।
आये जब श्रीकृष्ण, माता को करते नमन।
चिंतन मझारी हो, बोले उसवारी हो।
पूछे 'धर्म' सारी बात, करती क्यों माँ विलापात।
बोलो बात सारी हो, बोले उसवारी हो।

123. श्रीकृष्ण का आह्वान

तर्ज : धीरे चालो बिरज रा वासी-

आये आये श्रीकृष्ण आये प्रभु दर्शन कर हर्षाये रे। टेर।।
दे दीक्षा महल में जाते, पर गजसुख बिन घबराते रे।।1।।
सब सूना-सूना लगता, मुश्किल से समय कटता रे।।2।।
प्रातः जल्दी से उठते, और प्रभु दर्शन को जाते रे।।3।।
सबके दर्शन वहाँ पाते, पर गजसुख मुनि नहीं लखते रे।।4।।
तब पृच्छा प्रभु से करते, सुन प्रभुजी तब फरमाते रे।।5।।
जिस लक्ष से दीक्षा धारी, वरी सिद्धगति वे प्यारी रे।।6।।
जो उपसर्ग उन पर आया, मान साज समभाव मन लाया रे।।7।।
सुन श्रीकृष्ण अकुलाये, पूछे भविष्य मेरा बतलाये रे।।8।।
प्रभु कहते द्वारिका प्यारी, जल राख की होगी ढेरी रे।।9।।
द्वीपायन ऋषि को छेड़े, बन सुरा में उन्मत्त सारे रे।।10।।

वह अग्निकुमार देव बनकर, बदला ले इसे जलाकर रे ।।11।।
बलभद्र और तुम बचकर, पहुँचोगे पाण्डुवन भग कर रे ।।12।।
वहॉ कोरन्ट वृक्ष के नीचे, सोते बाण जरासंध खींचे रे ।।13।।
तुम वहीं मृत्यु को पाओ, और तीसरी पृथ्वी जाओ रे ।।14।।
तीर्थंकर बनोगे चलकर, अमम नाम से हितकर रे ।।15।।
भारत क्षेत्र में बारहवें भाई, अगली चौबीसी मांहीं रे ।।16।।
वहॉ मुक्ति वरोगे प्यारी, सुन हर्षित होते भारी रे ।।17।।
चल राजसभा में आते और 'धर्म' ढिंढ़ोरा पिटाते रे ।।18।।

124. अर्जुन माली का प्रकोप

तर्ज : ढोला ढोल मञ्जीरा बाजे रे.

भायां महोत्सव भारी आयो रे आयो रे।
राजगृही रे मायने जद आनन्द छायो रे।।टेर।।
अर्जुन बोल्यो बंधुमति ने प्रातः जल्दी सूं जाणो।
चाल साथ में बगीची सूं फूल अधिक चुण लाणो।
होसी फायदो मन रो चायो रे।।1।।
कर मतो वे दोनु जल्दी अपणे बगीचे आया।
छः गोठिला ललित गोष्ठी रा बात सुण हर्षाया।
देखी मौको हाथ सवायो रे।।2।।

मुद्‌गर पाणि यक्षालय में जाय छिप्या वे सारा।
अर्जुन माली बंधुमति दोनूं आय नमें तिणवारा।।
पकड़ अर्जुन ने बान्ध गिरायो रे।।23।।

बंधुमति संग भोगण लाग्यां भोग सभी क्रम बारी।
अर्जुन सोचे परम्परागत पूजा की बेकारी।।
पायो फल मैं ओ दुःखकारी रे।।4।।

इतने में तो बन्धन टूट्या तड़ातड उण बार।
हाथ उठायो मुद्‌गर भारी दीना सबने मार।।
अब तो प्रण ओ मन में ठायो रे।।5।।

छः पुरुष एक नारी री हत्या प्रतिदिन धारी।
आतंक छायो राजगृही में जनता डर गई सारी।।
जद श्रेणिक ऐलान करायो रे।।6।।

दरवाजा सब बंद कर दो कोई बाहर नहीं जावे।
छः मास बीतण लाग्यां जद वीर प्रभुजी आवे।
सुण ने धर्मभाव उमड़ायो रे।।7।।

125. अर्जुन की दीक्षा

तर्ज : मेरे मालिक के दरबार में-

मेरे जिनवर के दरबार में खुला खाता रे-2।।टेर।।
जैसी भावना लेकर जाता वह वैसा फल पाता।

राजा हो चाहे रंक वहाँ नहीं ऊँच-नीच का नाता ।।1 ।।

तुम भी चलना चाहो भाई चलो खुशी के साथ।
होगा बेड़ा पार तुम्हारा मानो निश्चय बात ।।2 ।।

सुनकर अर्जुन हर्षित होकर आया सुदर्शन लार।
प्रभु दर्शन कर वाणी सुण ने लेवे संयम धार ।।3 ।।

बेले-बेले तप करने का संकल्प लीना धार।
'मुनि धर्मेश' कहे अर्जुनमुनि की जय बोलो नर-नार ।।4 ।।

126. अर्जुन मुक्ति

तर्ज : ख्याल-

धन्य अर्जुन मुनिवर, समता दिल धारी तारी आत्मा। ।टेर ।।

बेले-बेले करे तपस्या, पारणे पे गोचरी पधारे।
राजगृही के सब नर-नारी, देख-देख धिक्कारे रे ।।1 ।।
कोई कहे मेरे बाप को मारा, कोई कहे पुत्र हत्यारा।
कोई कहे पत्नी को मारा, आ गया बण अणगारा रे ।।2 ।।
कोई मुक्का-लात मार, निकाले घर के बार।
कोई ठंडा-बासी टुकड़ा, दे देते हैं डार रे ।।3 ।।
मगर अर्जुनमुनि समताभाव से, करते मन विचार।

मैंने तो उन्हें जान से मारा ये करते केवल प्रहार रे।।4।।
करोड़ों का कर्जा कौड़ियों में करते हैं भरपाई।
कितने ये उपकारी मेरे समता मन में लाई रे।।5।।
कभी आहार नहीं पाया पूरा, कभी पाया नहीं पानी।
छः महीने में कर्म खपाकर, बन गये केवलज्ञानी रे।।6।।
आयुकर्म का पूर्ण क्षय कर, पहुँचे मोक्ष मझार।
'धर्मेशमुनि' गुण गावे उनके, धन्य अर्जुन अणगार रे।।7।।

127. भाई दूज

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत.

नन्दीवर्धन को बहिन सुदर्शना करती है मनुहार।
भैया देओ शोक निवार।
भाई वीर तो मोक्ष पधारे हो के भव से पार।
भैया देओ शोक निवार।।टेर।।

अनुनय करके घर ले जाती, कर मनुहार भोजन कराती।
भैया का विषाद मिटाती, मधुर वचन से धैर्य बंधाती।
जिससे नंदीवर्धन पाते, दिल मे शान्ति अपार।।1।।
चलकर महल में वहाँ से आते, प्रभु निर्वाण महोत्सव मनाते।
वंदीजन को भी छुड़वाते, जीवों को अभयदान दिलाते।
परमार्थ कार्यों में देते हैं वे, धन का खोल भंडार।।2।।

तब से भाई दूज मन भाई, सबके दिल में खुशी समाई।
भाई-बहिन की प्रीत सवाई, त्यौहार रूप में रहे मनाई।
'मुनि धर्मेश' यह भाई दूज का, आया आज त्यौहार।।3।।

128. लायो छे संदेशों पर्युषण

तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर-

भवों-भवों ना पुण्योदय थी नर भव मल्यो व्हालो।
हवे मुक्तिमार्ग मां चालो।
लायो छे संदेशों पर्युषण जैन धर्म नो आलो।
हवे मुक्तिमार्ग मां चालो।।टेर।।

वार अनन्ता चतुर्गति मां जनम-मरण दुःख पाम्या।
हवे मल्यो छे अवसर रूदो चेतावा ने आव्या।
जरा जागृत थई ने भाई तमे थानक मां सब हालो।।1।।

सामायिक प्रतिक्रमण ने स्वाध्याय तमे कुछ करी लो।
चउत्थं छट्ठं अट्ठं अठाई गमे जेवो तप वर लो।।
कर्म नो कचरो भस्म थाय पछी ज्ञान नो थसे उजालो।।2।।

दान, शील, तप भाव अने ज्ञान, दर्शन, चारित्र।
आराधन करवां थी आत्मा थई जासे पवित्र।।
'मुनि धर्मेश' कहे मौका नो मोटो लाभ कमालो।।3।।

129. संवत्सरी

तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर.

पर्व संवत्सरी आज सुनहरा कितना सुन्दर आया।
और भव्य प्रेरणा लाया।।
करो समीक्षण वर्षभर का, दिव्य संदेशा लाया।
और भव्य प्रेरणा लाया। टेर।।
कितने कार्य किये पापों के कितना पुण्य कमाया।
धर्माराधन सुव्रत साधना कितना मन को भाया।
देव, गुरु और धर्म सेवा में, कितना समय लगाया।।1
पर पीड़ा कितनी पहुँचाई, कितना क्लेश बढाया।
जैनी बनकर जैनत्व का, कितना लाभ उठाया।
लेखा-जोखा करो आज सब अनुपम अवसर आया।।2।।
त्रुटि का प्रतिक्रमण कर प्रायश्चित्त लो भारी।
क्षमायाचना सबसे कर लो, पूर्ण नम्रता धारी।
'मुनि धर्मेश' ने रायपुर में गीत सभा में गाया।।3।।

130. समीक्षण-ध्यान

तर्ज : खड़ी नीम के नीचे.

करके ध्यान समीक्षण चेतन अपना रूप निहार ले।
आया हाथ सुनहरा अवसर बाजी तूं तो मार ले। टेर।।
जो जनजीवन पाया तूने और साथ में जैनत्व।
जिसके माध्यम से पा सकता है तूं शाश्वत जिनत्व।।
मगर समीक्षण कर अपना तू क्या करता विचार ले।।1।।
सत्ता-सम्पत्ति के चक्कर में, क्यों जीवन को हार रहा।
पाप अठारह के सेवन से क्यों हीरा तूं लूटा रहा।
करके समीक्षण सत्य तथ्य का मोहासक्ति निवार ले।।2।।
भवसागर में गोते खाते काल अनन्त जो बीत गया।
पहुँच किनारे पर भी तू तो पुनः पुनः है डूब गया।
पुनः दुःख भोगेगा कितने इसको जरा विचार ले।।3।।
एक छलांग लगाकर प्यारे क्यों नहीं पार उतरता है।
ऐसा अवसर मिलेगा कब फिर क्यों गफलत तू करता है।
मत चूके यह मौका चेतन 'धर्म' ध्यान तू धार ले।।4।।

131. मौन एकादशी

तर्ज : जय बोलो महावीर.

यह मौन एकादशी आई है।
रहो मौन प्रेरणा लाई है।।टेर।।

है मौन साधना में महाशक्ति, पा सकते वचन की सिद्धी।
करें बारह वर्ष जो भाई है।।1।। यह ....

यदि पूर्ण मौन रखो अच्छा, नहीं तो कटुवचनों से बचो।
रखना अपने को सदाई है।।2।। यह.. ......

इतना भी विवेक जो नहीं रखता, नहीं पा सकता वह सफलता।
किसी भी क्षेत्र के मांही है।।3।। यह. ... ...

है वचन विवेक में जो शक्ति, विपदा कैसे घटती-बढ़ती।
दृष्टान्त पढ़ो सुखदाई है।।4।। यह... ...

आनन्द साड़ी सेन्टर मांही 'धर्मेशमुनि' ने मनाई।
बजरिया कथा सुनाई है।।5।। यह . ....

132. होवे उन्नत विचार

तर्ज : होवे धर्म प्रचार.

होवे उन्नत विचार, मानव जीवन में।
तुम तजो अशुद्ध व्यवहार, मानव जीवन में।।टेर।।
दुर्व्यसनों से पाओ मुक्ति, धर्म में हो अन्तर अनुरक्ति।
पालो शुद्ध आचार, मानव जीवन में।।1।।
हिंसा झूठ चोरी को त्यागो पर नारी का मुँह मत ताको।
तृष्णा दूर निवार, मानव जीवन में।।2।।
खान-पान की हो मर्यादा, वेशभूषा व भोजन सादा।
और मन में शुद्ध विचार, मानव जीवन में।।3।।
देश 'धर्म' और जाति के खातिर, तन, मन, धन सब कर दे हाजिर।
बन करके उदार मानव जीवन में।।4।।

133. स्वाध्याय वही जो जीवन में

तर्ज : नवकार मन्त्र है महामन्त्र.

स्वाध्याय वही जो जीवन में स्वरूप रमणता विकसावे।
अपना जीवन अध्याय खोल अपने में अपने को पावे।।टेर।।
चाहे वाचन हो या पृच्छन हो, चाहे ज्ञान का ही पर्यटन हो।
चाहे धर्मकथा का श्रवण हो, चाहे खुद के मुँह से कथन हो।

अनुप्रेक्षा उसमें एक ही हो, हम स्व के दर्शन पा जावे।।1।।
उसके बिना चाहे कितने ही तुम शास्त्र पढ़-पढ़ थक जाओ।
मस्तिष्क को टेपरिकॉर्ड बना, रट-रट के मर-पच जाओ।
जब तक स्व चिंतन जगे नहीं, स्वाध्याय नहीं वह बन पावे।।2।।
जो गाय घास को खाती है फिर बैठ जुगाली करती है।
खूब चबाकर के ही तो वह उसके सार को पाती है।
नही तो खल भाग वह बनकर के ज्यों का त्यों सार निकल जावे।।3।।
पढ़ो लिखो और सुनो जो कुछ भी बस एक ही लक्ष्य रखो मन म।
स्वरूप रमण करना सीखो बस जीवन के हर क्षण क्षण में।
सब दुष्प्रवृत्तियॉं तज करके बस 'धर्म' वृत्ति को अपनावें।।4।।

134. धर्म का मर्म

तर्ज : कान्हा आवो तो.

जरा सोचो तो सही जरा सोचो तो सही।
धर्म धर्म सब बोल रह्या पर मर्म न जाणो कांई।टेर।।

देव, गुरु और धर्म री जय सब बोलण ने तैयार।
मान बढ़ाई स्वार्थ तक ही जाणो इण रो सार।।1

थोड़ी-सी खामी पड़ता ही मुँह ने लेवो फेर।
स्वार्थ पूरो होवे तो थां बेचो टक्के सेर।।2।।

जन्त्र-मन्त्र टाणा-टूणा मे थां झट भरमाओ।
या सगे संबंधी री उलझन में अनुशासन छिटकाओ।।3।।
नन्दनवन सम 'धर्म' संघ ओ मिल्यो पुण्य रे लार।
इण रो गौरव रखनो सबने, मन में निश्चय धार।।4।।

135. श्रावकजी जरा ध्यान धरो

तर्ज : चोखा लाया लंगड़ा आम.

थांने फरमायो है जिन जी तमाम श्रावकजी जरा ध्यान धरो।
थांने तीर्थ में दियो मोटो स्थान श्रावकजी जरा ध्यान धरो।।टेर।।
श्रद्धावान होय ने थां डिगमिग डोलो हो।
विवेक सूं करो नहीं काम।।1।। श्रावकजी.........
कल्याणकारी प्रवृत्ति में लारे खिसक जावो हो।
आगे रेवो पाप रे काम।।2।। श्रावकजी.........
तत्वज्ञान में तो थांरी रुचि नहीं जागे है।
गपोड़ा मेलो हो बिना काम।।3।। श्रावकजी........
दान देता मन में थां घणा घबराओ हो।
शील में नहीं सेंठा परिणाम।।4।। श्रावकजी.........
तप नाम सुणियां थां दूरा-दूरा भागो हो।
भाव कियां शुद्ध रेसी तिण ठाम।।5।। श्रावकजी.......
दहेज रा लोभी बण बहुआं ने जलाओ हो।

खान-पान बिगाड़्यो तमाम।।6।। श्रावकजी.........

पन्द्रह ही कर्मादान रुच-रुच सेवो हो

व्यसन ने मानो विश्राम।।7।। श्रावकजी.........

सामायिक प्रतिक्रमण याद नही आवे है।

सुधरेला थांणो कैसे काम।।8।। श्रावकजी..... ...

'मुनि धर्मेश' कहे मौको हाथ आयो है।

चेतोला तो पासो शिवधाम।।9।। श्रावकजी.......

136. त्याग वृत्ति लो दिल धारी

तर्ज : घर आया मेरा परदेशी.

जो सुख चाहो नर-नारी, त्याग वृत्ति लो दिल धारी।।टेर।।

त्याग ही देता शान्ति है, भोग में बड़ी अशान्ति है।

अनुभव कर लो सब भारी, त्याग वृत्ति लो दिल धारी।।1।।

जो भोजन हम खाते हैं, त्याग से ही सुख पाते हैं।

खाली भोग वृत्ति दुखकारी, त्याग वृत्ति लो दिल धारी।।2।।

धन का त्याग ही धन लाता, संग्रह वाला नहीं पाता।

लाभ कुछ भी हितकारी, त्याग वृत्ति लो दिल धारी।।3।।

त्याग बीज का जब करता कृषक फसल उससे पाता।

त्याग खेल में भी सुखकारी, त्याग वृत्ति लो दिल धारी।।4।।

इसीलिए तो ज्ञानीजन, त्याग की प्रेरणा दे हरदम।
त्याग की महिमा है भारी, त्याग वृत्ति लो दिल धारी।।5।।
त्यागी के ही गुण गाते, चरणों में उनके झुकते।
'धर्म' भाव जगे हितकारी, त्याग वृत्ति लो दिल धारी।।6।।

137. रे चेतन तू चेत जरा ओ

तर्ज : ब्याव बीनणी-

रे चेतन तू चेत जरा ओ अवसर आयो अनमोलो।
आर्य क्षेत्र उत्तम कुल सागे मानव तन रो ओ चोलो।।टेर।।
धर्म-ध्यान री करणी करने जो तू लाभ उठावे लो।
भवसागर सूं पार होयने सिद्ध-बुद्ध बण जावे लो।।
मौका रो ओ लाभ उठा ले बण मत जाई जे तू भोलो।।1।।
हाट-हवेली कुटुम्ब कबीलो कोई नहीं साथ निभावे लो।
सुख री घड़ियाँ में तो सारो कुटुम्ब दौड़ ने आवे लो।।
कोई नहीं हैं पूछण वालो दुःख रो आसी जद झोलो।।2।।
जिणने अपनो समझे वो भी परायो बण जावे लो।
मौत आया सूं थारे तन रे, वो ही आग लगावे लो।।
माल-मसाला खावण खातिर, आवेला बण-बण टोलो।।3।।
जैसा कर्म कमावे लो तू वैसा ही फल पावे लो।
बिण समय तूं रोय रोय ने, मन रो मन पछतावेलो।।
धर्म री बातां याद आवेला जद मन उठेला होलो।।4।।

138. सुसराजी ने आज जमाई
तर्ज : डोकर बैठी सोचे मन में.

सुसराजी ने आज जमाई जम ज्यूं नाच नचावे।
तो प्रेम कियां रह पावे।।
नई नई फरमाईस रो जो कोई अंत नहीं जद आवे।
तो प्रेम कियां रह पावे।।टेर।।

नहीं ताकत घर री होतां भी इज्जत राखणो चावे।
एक एक सूं सुन्दर चीजां दहेज मांय दिलावे।
फिर भी जमाई और सगां रो मूंडो सूज्यो जावे।।1।।

कार चाहिजे स्कूटर चाहिजे टी.वी. वीडियो मांगे।
रेवण ने एक सुन्दर बंगलो वो भी चाहिजे सागे।
फोन फ्रीज आदि सुख-सुविधा बेटी साथ मन भावे।।2।।

इतरो करतां-करतां यदि कोई कमी थोड़ी रह जावे।
बेटी ने ला छोड़े पीहरिये वापस नहीं ले जावे।।
सास ससुरा देख सांग ओ मन रा मन पछतावे।।3।।

लड़की भी इण बेईज्जती सूं आत्महत्या कर लेवे।
फिर तो रंडवो बण ने ताना अठी उठी रा सहवे।।
पर नहीं सोचे अपने मन क्यों पर धन आश लगावे।।4।।

खुद रे घर में बीते ऐसी जद मालुम पड़ जावे।
इतरो यदि मन चिंतन कर ले कैसो आनन्द आवे।।
'मुनि धर्मेश' कहे सूई रे लोरे डोरो आवे।।5।।

139. जब पावे समकित सार चेतन सुखकार

तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश-

जब पावे समकित सार चेतन सुखकार, वही दिन प्यारा।
घटे जनम-मरण दुःखकारा।।टेर।।

समकित बिन जाते हैं सारे निष्फल उत्तम भव भी प्यारे।
नहीं कर सकता वह भव बंधन छुटकारा।।1।। घटे.........

है मुक्तिमहल की नींव यही, और प्रथम सीढ़ी भी उसे कही।
इसके बिन सारा क्रिया-काण्ड निःसारा।।2।। घटे.........

श्रद्धा शुद्ध इस बिन नहीं होती, सद्ज्ञान की ज्योति भी नहीं जगती।
नहीं मिल सकता इस बिन मुक्ति का द्वारा।।3।। घटे.........

एक बार स्पर्श यदि हो जावे तो मुक्ति वह निश्चय पावे।
हो जावे उसका परित्त सदा संसारा।।4।। घटे.........

फिर जो कुछ 'धर्म' क्रिया करता, सकाम-निर्जरा वह करता।
हो जाता उसका भव से दूर किनारा।।5।। घटे.........

140. पाया-पाया मानव तन ध्यान धर ले

तर्ज : अरे परदेशी कुछ काम कर ले.

पाया पाया मानव तन ध्यान धर ले।
कैसे होवे सार्थक ज्ञान कर ले।।टेर।।

आहार निन्द्रा भय और मैथुन संज्ञा चार है।
पशु योनि में भी होता इनका संचार है।।
फंस मत मन का अज्ञान हर ले।।1।।

स्वार्थ की भावना से भरा संसार है।
भौतिक सुखों मे भैया कुछ नहीं सार है।।
जीवन में कुछ सद्ज्ञान भर ले।।2।।

पुण्यवान देह पाके खाली हाथ जायेगा।
याद रख आगे वहाँ जाके पछतायेगा।।
'धर्मेश' बात यह नादान सुन ले।।3।।

141. पाणी में लागी लाय

तर्ज : चांद चढ्यो गिरनार.

पाणी में लागी लाय अचरज सुण आवे जी सुण आवे।
म्हारा हियो हिलोरा खाय मनड़ो दुःख पावे जी दुःख पावे।टेर।।
ऐ जैनी नाम धराय अनरथ कर रह्या जी कर रह्या।

ऐ भक्षा भक्ष रो भान सब ही भूल रह्या जी भूल रह्या।।
दुर्व्यसनों में फंस आज गौरव घटवावे जी घटवावे।।1।।पाणी में.

ऐ स्मग्लरा में आज नम्बर आगे है जी आगे है।
मिलावट में भी नाम आंरो सागै है जी सागै है।।
धर्मादा रो तो आज पैसो गटकावे जी गटकावे।।2।।पाणी में.

ऐ पन्द्रह कर्मादान सारा, अपनाया जी अपनाया।
है कौन सो ऐसो काम, जिण ने तज पाया जी तज पाया।।
थे सोचो अपने आप 'धर्म' थानै चेतावे जी चेतावे।।3।।पाणी में.

142. मिथ्यात्व दशा ने ही देखो

तर्ज : कलदार रूपइया चाँदी का.

मिथ्यात्व दशा ने ही देखो, भव-भव में हमें रुलाया है।
इसके कारण ही सत्य तथ्य नहीं समझ हमें कुछ आया है।टेर।।

मदिरा में उन्मत्त व्यक्ति ज्यों बेसुध हो अपलाप करता है।
जो वस्तु जैसी है वैसी नहीं देख समझ वो सकता है।।
ऐसे ही इस चेतन को इसने मतिभ्रम बनाया है।।1।।

सुख पाना चाहता है चेतन दुःख से वह अति घबराता है।
पर सच्चा सुख क्या होता है वह नहीं समझ उसे कुछ आता ह।

दुःख में सुखानुभूति कर गिंडोलावत् भरमाया है।।2।।
या फिर सुख-दुःख को पर निमित्त मान भटकता है।
कस्तुरी मृगवत् भ्रमित बन, बस दौड़ धूप वह करता है।।
मृग तृष्णावत् मति भ्रम बन सुखाभास वह भरमाया है।।3।।
नहीं धर्म अधर्म को जान सके नहीं देव गुरु को पहचान सके।
कर 'धर्म' क्रिया का आराधन वह कैसे मुक्तिपाय सके।।
बिन आंक की शून्यों की जोड़ लगा कहो रिजल्ट किसने पाया है।।4।।

143. वही साधुमार्गी रे

तर्ज : अम्बाजी के सामने-

अनादि अनंत सिद्ध जग में सुप्रसिद्ध।
सत्य का अनुरागी रे वही साधुमार्गी रे।।टेर।।

महामंत्र नवकार साधुजी के पद चार।
श्रेष्ठ वीतरागी रे वही साधुमार्गी रे।।1।।

उनका बताया मग्ग, उसी पर धारे पग।
सच्चा वह सौभागी रे, वही साधुमार्गी रे।।2।।

देव अरिहन्त सिद्ध, गुरु निर्ग्रन्थ शुद्ध।
धर्म का रागी रे, वही साधुमार्गी रे।।3।।

गुण का पुजारी बन, करे समकित जतन।
जो बड़भागी रे, वही साधुमार्गी रे।।4।।

आरम्भ परिग्रह तज संयम का साज सज।
आडम्बर दे त्यागी रे वही साधुमार्गी रे।।5।।
संघ संघपति पर, रखे श्रद्धा दृढ़तर।
बने नहीं बागी रे, वही साधुमार्गी रे।।6।।
नन्दनवन सम प्यारा 'धर्म' संघ सुखकारा।
पावे महाभागी रे वही साधुमार्गी रे।।7।।

144. बाजे काल रो धड़ाको

तर्ज : तेजा-

बाजे-बाजे काल रो धड़ाको चेतन भारी रे।
चेत सको तो जल्दी चेत जो।।टेर।।
काला-काला केशां ने ओ धोला कर चेतावे ओ।
काला कर्म करना छोड़ दो।।1।।
तीखा-तीखा दॉत पाड़ थांने ओ चेतावे ओ।
तीक्ष्ण कर्म करना छोड़ दो।।2।।
आंख्यां ऊपर हमलो करने साफ-साफ चेतावो ओ।
मोह दृष्टि सूं मन मोड़ लो।।3।।
कानां री खिड़कियॉ कमजोर पूरी कीनी ओ।
फिर भी चेतनजी नहीं चेतिया।।4।।
धोला केशा ने काला कर नवां दांत बंधाया ओ
आख्यां पर ऐनक मोटो धारियो।।5।।

कान में मशीन डाली पर नहीं हिये विचारी ओ।
कालचंदजी जद कोपिया।।6।।
करयो करयो जब्बर प्रहार ओ तो भारी ओ।
देह सूं खेंची ने बारे काढियो।।7।।
नरक तिर्यंच रा दुःखड़ा देख उठे थां घबराया ओ।
विन 'धर्म' कुण साथ दे।।8।।

145. सूतो क्यूं तू चेतन अब

तर्ज : अरे परदेशी-

सूतो क्यूं तू चेतन अब जाग जानी रे।
हुओ है प्रभात नीद त्याग देनी रे।।टेर।।
मोहनिन्द्रा में तू तो सोयो दिन-रात है।
सोच-सोच मानव भव आयो थारे हाथ है।।
इण रो तो सार कुछ काढ़ लेनी रे।।1।।
धन परिजन थारां कांई साथ जावेला।
कालचंदजी जद थने लेवण ने आवेला।।
ज्ञानी बन बात ने विचार लेनी रे।।2।।
स्वजन स्नेही थारां हिल मिल आवेला।
श्मशान भूमि लाय थने वे सुलावेला।।
राख कर देवेला वे सोच लेनी रे।।3।।

बाप दादा थांरा ने तू खुद ही जलाय दिया।
कांई वारे साथे तू ले जावतां ने देखिया।।
थारी बारी आसी काले कांई कोनी रे।।4।।

फेर सोच किणरे खातिर दौड़-धूप मचावे है।
धर्म कमाई में तू घाटो क्यों लगावे है।
'धर्मेश' री आ सीख मान लेनी रे।।5।।

146. म्हांने मिलसी खूब सहारो

तर्ज : डीकर बैठी सोचे मन-

माता-पिता तो सोचे मोटो हो रह्यो बेटो म्हारो।
म्हांने मिलसी खूब सहारो।।
इण रे खातिर रात दिवस वे कर रह्या परपंच सारो।
म्हांने मिलसी खूब सहारो।।टेर।।

पत्थर पत्थर देव मनावे भीख मांग ने खावे।
सब ही दुःखड़ा सहन करे पर सुत ने लाड़ लड़ावे।।
खरी कमाई रो पैसो भी खर्चे उण रे लारै।।1।।

मोटा होता ही तो बहू रा सपना मन संजोवे।
बड़ी-बड़ी आशा में उणने लाड़ कोड़ परणावे।
मगर बिनणी घर आता ही हो जावे वश में प्यारो।।2।।

पछे तो बस माय बाप री किणने बात सुहावे।
एक कहता ही तो वो पाछो उल्टी चार सुणावै।।
बात बात में धमकावे मैं हो जासूं ला न्यारो।।3।।

मात-पिता रे सुख-दुःख री तो चिंता मन नहीं लावे
श्रीमती रो माथो दुःखतां चिंता में घुल जावे।
दौड़म-दौड़ लगावे जैसे हैं चपरासी पूरो।।4।

घर-घर री आ दशा देखने 'मुनि धर्मेश' सुणावे।
विनय विवेक री शिक्षा बिन ओ सारो जग दुःख पावे।।
जो सुख चाहो मानो शिक्षा होसी जीवन सोरो।।5।।

147. मानव जीवन जो यह पाया

तर्ज : धरती धोरां री-

मानव जीवन जो यह पाया, दुर्लभ इसको है बतलाया।
देखो शास्त्र शास्त्र में गाया, केवलज्ञानी ने।।टेर।।

लक्ष चौरासी गोते खाया, तब यह पुण्य खजाना पाया।
इसको सार्थक कर फरमाया, केवलज्ञानी ने।।1।।

इसके महत्त्व को पहचान, करले आत्म का कल्याण।
वो ही सच्चा है इंसान केवलज्ञानी ने।।2।।
खाने-पीने में जो खोवे, फिर वो भवों भवों में रोवे।

उसकी मुक्ति दुर्लभ होवे, केवलज्ञानी ने ।।3।।

झूठी जग की मोह और माया, क्यों तू विषयों में लुभाया।
तज दे सुन्दर अवसर आया, केवलज्ञानी ने ।।4।।

कर ले 'धर्म' ध्यान निष्काम, यह है गुरु नाना फरमान।
आगम वचनों के प्रमाण, केवलज्ञानी ने ।।5।।

148. श्रावक हृदय धारो रे

तर्ज : होली आई रे...

सत्पुरुषां री शिक्षा ने थां, श्रावक हृदय धारो रे।
श्रावक पण रा गौरव ने थां हृदय विचारो रे।टेर।।
शास्त्र श्रवण कर जिन वचनां रे ऊपर श्रद्धा धारो रे।
जो भी काम करो पेला विवेक विचारो रे ।।1।।
कल्याणकारी प्रवृत्ति ने, जीवन में उतारो रे।
जिण सूं होवेला जग में, उद्धार थांरो रे ।।2।।
अशुद्ध खाणो, पीणो और कमाणो तज दो सारो रे।
फैशन और प्रदर्शन तज ने, ममता मारो रे ।।3।।
दहेज-तिलक री आशा ने थां मन सूं दूर निवारो रे।
मृत्यभोज आदि कुरीति ने जड़ सूं उखाड़ो रे ।।4।।
साधर्मी भाई बण ने जद गुरु दर्शन ने जावो रे।
बठे जंवाई जैसा बण मत रॉब जमावो रे ।।5।।

संवर सामायिक प्रतिक्रमण कर व्रत-नियम स्वीकारो रे।
'मुनि धर्मेश' कहे जद होसी सफल जमारो रे।।6।।

149. सुन सुन रे म्हारां अन्तर मनवा

तर्ज : उड़ उड़ रे-

सुन सुन रे-3 म्हारां अन्तर मनवा।
जिनवाणी ने तू सुन रे। टेर।।
जिनवाणी है शिव सुख दानी, बाकी सब चौरासी कहानी।
यह निश्चय तू कर मनवा।।1।।
महा पुण्योदय तेरा आया, आर्य-क्षेत्र उत्तम कुल पाया।
इसका लाभ उठा ले मनवा।।2।।
अर्जुन जैसा भी हत्यारा, रोहिणेय सा डाकू सारा।
सुनकर बन गया ज्ञानी मनवा।।3।।
तू भी श्रवण कर ज्ञान जगा ले, कर विज्ञान तू निर्णय कर ले।
हेय उपादेय रो मनवा।।14।।
हेय तत्व को त्याग दे मन से, उपादेय को धार ले दिल से।
मोक्ष में साधक बाधक मनवा।।5।।
'मुनि धर्मेश' की बात मान ले, संवर वृत्ति तू अपना ले।
मोक्ष प्राप्त तू कर ले मनवा।।6।।

150. शिविर

तर्ज : धीरे चलो बिरज रा वासी-

आओ आओ शिविर में भाई।
सब हिल मिल मन हर्षाई रे। टेर।।

शिक्षा जिन धर्म की पाई।
बनो सच्चे जैन तुम भाई रे।।1।।

विवेक ज्योति जगाई।
डरो पाप से मन में सदाई रे।।2।।

रमण अन्तर मन मांही।
लो आतम गुण विकसाई रे।।3।।

नमस्कार मन्त्र गिनो भाई।
प्रभु प्रार्थना करो हर्षाई रे।।4।।

बड़ों को शीष नमाई।
आओ समता भवन के मांही रे।।5।।

पंच अभिगम युक्त वहाँ जाई।
करो 'धर्म' ध्यान सुखदाई रे।।6।।

151. स्वाध्याय शिविर सुखदाई रे

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की.

स्वाध्याय शिविर यह सुखाकारी।
लग रहा आज यहाँ श्रेयकारी।।टेर।।

दस बोल दुर्लभ है बतलाये।
महापुण्य से हमने है पाये।
सार्थक करना है हितकारी।।

स्वाध्याय शिक्षण यहाँ लेना है।
तत्वों का निर्णय करना है।
षट् आवश्यक क्रिया दिल धारी।।

वांचन पृच्छन और परियट्टन।
अनुप्रेक्षा धर्मकथा कथन।
करना कैसे सीखों भारी।।

स्वयं त्याग वृत्ति अपनावें।
औरों को प्रेरणा दे पावें।
यह ट्रैनिंग लेना है प्यारी।।

जो संत-सतियों से वंचित है।
उनको करना अनुरंजित है।
कर 'धर्म' दलाली हितकारी।।

152. तप ज्योति दिल जगाना

तर्ज : वरदान मांगता हूँ-

वरदान मांगता हूँ तप ज्योति दिल जगाना।
मैं कर सकूं तपस्या, वह शक्ति मुझको देना। ।टेर।।

तप नाम से ही मन में कंपन छूटता है।
पर देख तपस्वियों को संबल जागता है।।
चाहूँ कर अभिनन्दन तप भाव दिल बढ़ाना।।1।।

है नाज आज हमको गौरव बढ़ाया संघ का।
लख शौर्यता तुम्हारी हर्षित मन सबका।।
करके तुम्हारा स्वागत चाहूँ पूरी हो तमन्ना।।2।।

कर्मों का लक्षय होकर घट का भगे अंधेरा।
सम्यक् भाव का अब उदित होवे सवेरा।।
'धर्मेशमुनि' चाहता, तप शक्ति तुम से पाना।।3।।

153. मौसम तपस्या रो

तर्ज : महीनो गर्मी री-

मौसम तपस्या रो, वारे मौसम तपस्या रो।
ओ आयो कैसो अलबेलो रे। ।टेर।।

मौसम रा मेवा तो लागे सबने घंणा प्यारा रे।
आता ही बाजार बीच में झूमे सारा रे।।1।।

वैसे ही इण चौमासा में तप रो मौसम आयो रे।
ज्ञान, दर्शन, चारित्र साथे तप सवायो रे।।2।।
ऐ मेवा है आत्मा रा खावो बायां भायां रे।
सांचो सुख ओ मिलसी इण सूं प्रभु फरमाया रे।।3।।
तन तो थोड़ो दुर्बल होसी, आत्मा उज्ज्वल बणसी रे।
'मुनि धर्मेश' कहे मोक्ष भी थानें इण सूं मिलसी रे।।4।।

154. अरे ब्रह्मचारियों सुन लो

तर्ज : श्री महावीर स्वामी की.

अरे ब्रह्मचारियो सुन लो श्री जिनराज का कहना।
पालना है अतिदुष्कर बिना नवबाड़ के सुनना।।टेर।।

स्त्री, पशु व पंडग हो, नहीं वहाँ रात्रि में रहना।
चूहे को बिल्ली के संग रह पड़े जीवन को ज्यों खोना।।1।।
स्त्री कथा को भी प्यारे, भूल कभी तू मत करना।
नींबू इमली के हेतु को, समझ बचते ही तुम रहना।।2।।
स्त्री बैठी हो वह आसन, घड़ी दो पहले मत छूना।
उसे घी अग्नि हेतु से, ध्यान में तुम ले लेना।।3।।
रूप वैभव भी नारी का, कभी भर दृष्टि मत लखना।
कच्ची आँखो से सूर्य को देख पड़ेगा ज्यों रोना।।4।।

विषय विकार की बातें, आड में रह भी मत सुनना।
मेघ मयूर सम्बन्ध से शिक्षा तुम भी तो ले लेना।।5।।
पूर्व के कामभोगों को कभी भी याद मत करना।
पड़े जिनरक्ष ज्यों रोना, बात यह साफ सुन लेना।।6।।
सरस आहार का सेवन प्रतिदिन भूल मत करना।
सन्निपातिक रोगी सम पड़ेगा फिर पछताना।।7।।
रुक्ष आहार भी ज्यादा नहीं लीमिट के करना।
लीटर में डेढ़ लीटर भर देख लो बाहर तब बहना।।8।।
साज-सज्जा से तुम तन को, कभी न यार चमकाना।
प्रदर्शन कर हीरे का पड़े ज्यों हाथ से खोना।।9।।
'मुनि धर्मेश' आगम के वचन को ध्यान में लेना।
पाल ब्रह्मचर्य को अच्छा भव से तुम पार हो जाना।।10।।

155. कांई सुणावां

तर्ज : प्रभु भज ले.

बोलो कांई सुणावां रे भाया किणने सुणावां।
ओ जिनवाणी रो सार, बोलो कैसे सुणावां।।टेर।।

संत-सती आया गॉव में जद, बायां भायां आया।
दो बहरा, दो नैन सुख, दो ऊंगे बैठा भायां।।1।।

दो ने खांसी दमो ऊपड़े, अठी बठी ने थूकै।
मूंडे सूं तो लारा टपके, कमर गोडा दुःखे।।2।।

सुणवां रा तो पूरा रसिया, तत्वज्ञान नहीं जाणे।
थोड़ा-घंणा जाणे तो वे, बात आपरी ताणे।।3।।

युवक तो व्यसन में डूब्या, युवतियाँ फैशन मांही।
टी.वी. आगे टेम गंवायो, बात बतावां कांई।।4।।

'मुनि धर्मेश' कहे जागो युवकों, मौको हाथ में आयो।
जिनवाणी रो सार समझ लो, जैन धर्म थां पायो।।5।।

156. मरण का स्मरण

तर्ज : थने जाणो जाणो रे भाई निश्चय.

मने मरणो मरणो मरणो रे भाई, निश्चय पड़सी मरणो।
मने निश्चय पड़सी मरणो रे भाई, ओहीज नाम सुमरणो।।टेर।।

इण सुमिरण सूं पाप कर्म सब, याद नहीं मन आवे।
इण सुमिरण सूं धर्म भावना, दिन-दिन बढ़ती जावै।।
ओ तो सुख शान्ति रो झरणो रे भाई ओहीज.. .. ...।।1।।

दशरथ रे मन इण सुमिरण सूं विरक्तभाव उमड़ायो।
गौतम बुद्ध ने इण सुमिरण सूं आतम बोध प्रगटायो।।
ओ तो भवां-भवां रो शरणो रे भाई ओहीज. . .. ।।2।।

'मुनि धर्मेश' कहे इण सुमिरण ने कर देख लो भाई।
कैसो चमत्कार है इण में देखो खुद अजमाई।।
ओ तो आनन्द मंगल करणो रे भाई ओहीज ....।।3।।

157. जड़मति थां जड़ ज्यूं बुद्धि थांरी

तर्ज : पद्म प्रभु पावन नाम तिहारी-

जड़मति थां जड़ ज्यूं बुद्धि थांरी, अकल गई क्यूं मारी। ।टेर।।

अनन्त जीव भवसागर तिरिया, शुद्ध अवलंबन धारी।
च्चार तीर्थ चउ शरण जग में पंच परमेष्ठी भारी।।1।।

भाव निक्षेप संयक्त है सब, चेतन गुण भंडारी।
अनन्त तीर्थंकरांरी आ वाणी, क्यूं थे दीनी विसारी।।2।।

निरंजन निराकार बणजो, सिद्धगति वरी प्यारी।
वांरो जड़ आकार बनाकर, बेहूदी वृत्ति धारी।।3।।

देवी-देवता रे नाम सूं, हिंसक वृत्ति ने दिल धारी।
भैंसा बकरा री बलि देवे, धूप दीप कर भारी।।4।।

बांने तो मिथ्यात्वी केवो, सोचो हृदय मझारी।
थांमै वांमै फर्क कांई है ? तोलो ज्ञान विचारी।।5।।

अहिंसा परमो धर्म री तो जय बोलो सब मिल भारी।
छः काया री हिंसा करता, लाज न आवे लिगारी।।6।।

संसार निमित्त जो होवे हिंसा, पाप जाणे समकित धारी।
छूटे वो दिन धन्य होसी, ऐसो मनोरथ भारी।।7।।

वंदन पूजन आदि निमित्त, हिंसा करे दुःखकारी।
बोधि दुर्लभ आचारांग में, उणने बतायो भारी।।8।।

159. ओ मिनख जमारो पाय

तर्ज : घुड़लो घूमेला।

ओस मिनख जमारो पाय, लावो ले लीजो जी ले लीजो।
नहीं मिलसी बारम्बार, लावो ले लीजो जी ले लीजो। टेर।।

हीरा रत्ना सूं अनमोलो, मिल्यो है ओ नर तन चोलो।
कर लो मन विचार, लावो.........।।1।।
मिनख पणां री लाज राख जो, दारू मांस मत खाई जो पीजो।
मत निरखजो पर री नार, लावो.........।।2।।
पर धन धूल बराबर जाणो, नहीं तो पड़सी नरक में जाणो।
देसी परमाधामी मार, लावो.........।।3।।
सादो खाणो सादो रहणो, मीठा वचन जीभ से कहणो।
ओ मिनख जमारा सो सार, लावो.........।।4।।
दीन-दुःखी री सेवा करणी, पीर पराई ने परि हरणी।
'धर्म' भाव दिल धार, लावो.........।।5।।

160. प्रदर्शन का पाप

तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश।

यह प्रदर्शन का पाप, बना अभिशाप समाज में भारी।
कैसी फैली बीमारी। टेर।।

धन के मद में बेभान बने, करते प्रदर्शन हैं जितने।
प्रतिस्पर्धा की छोड़ते वे चिनगारी, कैसी फैली बीमारी।।1।।
एक दहेज तिलक प्रदर्शन ने ज्वाला धधकाई जन मन में।
मर रही बेचारी बहू-बेटियाँ प्यारी, कैसी फैली बीमारी।।2।।
नित्य नये जेवर और वस्त्रों का, प्रदर्शन करते हैं इनका।
धर्मस्थान में आकर भी नर-नारी, कैसी फैली बीमारी।।3।।
क्या खान-पान का प्रदर्शन, क्या वेशभूषा का आकर्षण।
कर रहा जीवन की कैसी देखो ख्वारी, कैसी फैली बीमारी।।4।।
'मुनि धर्मेश' कहे जैनी जागो, इस प्रदर्शन को सब त्यागो।
पावेंगे शान्ति तब ही सब तुम प्यारी, कैसी फैली बीमारी।।5।।

161. तपस्या रा गुण सब गाओ

तर्ज : धीरे चालो बिरज रा वासी-

तपस्या रा गुण सब गाओ।
तपस्वियों रो मान बढ़ावो रे।।टेर।।

तप कर प्रभु ज्योति जगाई।
तप करके मुक्तिपाई रे।।1।।

तप मेल कनक रो धोवे।
तप सूं वो कुन्दन होवे रे।।2।।

तप कर्म रो कचरो जलावे।
तप आत्मशुद्धि करावे रे।।3।।

तप महोत्सव आज है भारी।
गुण गावो नर और नारी रे।।4।।

'मुनि धर्मेश' रो मन हर्षायो।
ओ गीत सभा में गायो रे।।5।।

162. कर्म का फल

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत-

कोई सुखी है कोई दुःखी है दुनिया में नर-नार।
कैसा चित्र विचित्र संसार।।
समझ नहीं आता है कुछ भी इसका कौन दातार
कैसा चित्र विचित्र संसार।टेर।।

एक महल में सुख से सोता एक झौंपड़ा भी नहीं पाता।
छप्पन भोग एक लगाता, भूखा एक पड़ा है रोता।।
कोई नहीं पूछता उसको, देते सब धिक्कार।।1।।

एक को सब ही आदर देते, एक को पास न आने देते।
एक को ऊँचे तख्त बिठाते, एक को उससे नीचे गिराते।।
पाता नहीं कहीं वह आदर, होता तिरस्कार।।2।।

प्रभु वीर ने यों फरमाया, सारी है यह कर्म की माया।
जैसा बीज बोया है जिसने, वैसा ही उसने फल पाया।।
'मुनि धर्मेश' कहे नर-नारी, सुनकर करो विचार।।3।।

जिन धर्म को हमने पाया है, जैनी का लेबल लगाया है।
तो समझो इसका महत्त्व हृदय मझारी, शिविर की महिमा भारी।।3।।
दुर्व्यसनों को अब तजना है, तत्वज्ञान खजाना भरना है।
कर सामायिक प्रतिक्रमण हितकारी, शिविर की महिमा भारी।।4।।
जिन धर्म को जग में फैलाना है, अहिंसा का नाद गूंजाना है।
'धर्मेश' करो सब शिविर में तैयारी, शिविर की महिमा भारी।।5।।

166. विद्या पढ़ने का क्या सार

तर्ज : जरा सामने तो आओ-

जरा मन में विचारो भैया, विद्या पढ़ने का बोलो क्या सार है ?
पढ़-लिखकर बने होशियार तो क्या करने का बोलो विचार है।टेर।।

खाने-पीने और कमाने में ही यदि होशियार बने।
ऐशो-आराम में हो गये तन्मय तो इससे क्या काम बने।।
विद्या बनेगी केवल भार है, नहीं होवेगा इससे उद्धार है।।1।।

जैसे चन्दन भार वहन कर खर खुशबू नहीं ले पाता।
टेप रिकॉर्ड भी ज्ञान निधान भर पंडित नहीं वह बन जाता।।
जब तक न सुधरे व्यवहार है, वह पढ़ा-लिखा मूर्ख सरदार है।।2।।

'धर्म' समाज व राष्ट्र की जो नर, पढ-लिख सेवा कर लेता।
सद्गुण की सौरभ से सुरभित, निज जीवन को कर देता।
पाता जग में वो जय-जयकार है, करता जग से वो बेडा पार है।।3।।

167. हाथ में घड़ी

तर्ज : रेशमी सलवार कुर्ता-

बांधी हाथ में घड़ी जो तुमने प्यारी है।
पर शिक्षा इससे बोलो क्या दिल धारी है।।टेर।।
अंग्रेजी में वाच कहलाती, संदेश यह सबको सुनाती।
करो वाच वर्ड एण्ड ऐक्शन करेक्टर हार्ड बताती।।
कर टिक-टिक भारी है।।1।।
जो पाया दुर्लभ नर तन, महा पुण्योदय से प्यारा है।
पल-पल करते यह घटता जा रहा है सारा।।
कहती विचारी है।।2।।
अब टिक-टिक इसकी सुनकर, कुछ होश में आ जा पगले।
जो करना हो शुभ कर ले और 'धर्म' खजाना भर ले।
मंगलकारी है।।3।।

168. युवकों जागो

तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश-

है युवकों तुम पर नाज, संघ को आज बड़ा ही भारीं।
तुम जग उठ करो तैयारी।।टेर।।

सब व्यसन फैशन को तज आओ, और एकसूत्र में बंध जाओ।
अनुशासनबद्ध हो करो क्रान्ति अब जारी।।1।।
स्वच्छन्द वृत्ति जो पनप रही, अन्ध श्रद्धा जो है भनक रही।
ले ज्ञान मशाल अब ज्योति जगाओ भारी।।2।।
कर गौण सत्ता व सम्पत्ति को, गुण कर्म से परख व्यक्ति को।
करो समता समाज की रचना मंगलकारी।।3।।
आडम्बर वृत्ति को तजकर, स्वाध्याय साधना सेवा कर।
गुरु नाना की लो सूत्र त्रयी तुम धारी।।4।।
हो संघ संघपति पर सारा, अर्पण यह तन मन धन प्यारा।
लख प्रतिद्वन्दी भी चमकें हृदय मझारी।।5।।
गुरु नाना की शीतल छाया संघनायक राम मन को भाया।
'धर्मेशमुनि' कहे शपथ आज लो धारी।।6।।

169. सुन्दर अवसर आया है

तर्ज : मीठे-मीठे कामभोग में.

रे चेतन ! तू चेत जरा यह, सुन्दर अवसर आया है।
इसको सफल बना ले मौका, तेरे हाथ जो आया है।।टेर।।

तीस चोर रूपी ये मुहूर्त तुझे लूटना चाहते हैं।
जो पुण्यवानी लेकर आया उसे खोसना चाहते है।।
सावधान हो जा रे पगले, सद्गुरु ने चेताया है।।1।।

तीसों को निज मित्र बना ले, तो तू शिव सुख पायेगा।
यदि एक को भी मित्र बनाया, तो घर तेरा बच जायेगा।।
सामायिक है इसका साधन, 'धर्मेश' ने आज बताया है।।2।।

170. अवसर अनमोलो

तर्ज : जीवन लाखीणो.

लख चौरासी गोता खायो जद ओ हीरो हाथ में आयो।।टेर।।
अब तो काम करो सवायो।
अवसर अनमोलो हो हो अवसर अनमोलो।।1।।

समकित रत्न मिल्यो महान् कर लो देव, गुरु पहचान।
ले ओ धर्म रो मर्म पहचान।।2।।

तीन मनोरथ मन में धार कर लो श्रावक व्रत अंगीकार।
चौदह नियम प्रतिदिन धार।।3।।

प्रतिपल सोचो हृदय मझार, आरम्भ परिग्रह तज दुःखकार।
ले सूं संयम व्रत सुखकार।।4।।

अन्त समय धारूं संथारो वो दिन धन्य बनेला म्हांरो।
पाऊं जन्म-मरण छुटकारो।।5।।

ऐसो कर ने दृढ़ विचार, सम्यक् पुरुषार्थ लो धार।
'मुनि धर्मेश' कहे हितकार।।6।।

171. कर लो आत्म का उत्थान

तर्ज : ले ली शान्ति प्रभु को नाम-

कर लो आत्म रो उत्थान, ओ हैं जिनवाणी फरमान।
पायो नर तन ओ महान् इण री शक्ति लो पहचान। टेर।।

ऋषभादि चौबीस तीर्थंकर या चौबीस अवतार।
सब ही नर तन पाकर ही तो कीनो निज उद्धार।।
ओ ही सत्य तथ्य है जान।।1।।

जीव शिव नर नारायण और जन जिनेन्द्र बण जावे।
आश्रव वृत्ति तज संवृत्त हो कर्म रो कचरो जलावे।।
वो तो बण जावे भगवान।।2।।

मुँह में मिर्ची डाल जाये कोई मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे।
राम, कृष्ण, महावीर, ईशु या अल्लाह ने पुकारे।।
मुँह मीठो नहीं हो जान।।3।।

सम्यक् ज्ञान क्रिया बिन भाई देव गुरु ने ध्यावे।
'मुनि धर्मेश' कहे धर्म नाम पर मर मिट भी यदि जावे।।
नहीं होय सके कल्याण।।4।।

172. शिविर में सब आ जाओ

तर्ज : ओ प्यारे परदेशी पंछी-

आओ प्यारे बच्चों सब मिल, शिविर में सब आ जाओ।
जो मिला अवकाश है तुमको उसका लाभ यह उठाओ। टेर।।

महापुण्य का उदय हमार मुनिवर (......) यहाँ पधारे हैं।
धर्म-ध्यान की प्रेरणा देने कष्ट उठाये सारे हैं।
इनके चरणों में आकर के धर्म रंग में रंग जाओ।।1।।
बिन सत्संग के बच्चे देखो, आज बिगड़ते जाते हैं।
दुर्व्यसनों में फंसकर अपना, जीवन व्यर्थ गंवाते हैं।।
लड़ते और झगड़ते प्रतिदिन, उनसे प्रेरणा पा जाओ।।2।।
इस शिविर में शिक्षा लेकर, जीवन सफल बनाना है।
तत्वबोध पाकर के सच्चे, जैनी बन दिखलाना है।।
सच्ची धर्म प्रेरणा पाकर, जीवन अपना सरसाओ।।3।।

173. यह शिविर बड़ा सुखकारी है

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी-

यह शिविर बड़ा सुखकारी है।
लग रहा यहाँ पर भारी है।।टेर।।
सब बच्चे-बच्ची आ जाओ।
मुँहपत्ती आसन ले आओ।
चादर, पूंजनी प्यारी है।।1।।
प्रतिक्रमण, सामायिक करना है।
और मौन में ज्यादा रहना है।।
तत्वज्ञान पाना सुखकारी है।।2।।

नहीं गंदी बातें करना है
नहीं पाउच साथ में लाना है।
तजना बुरी आदत सारी है।।3।

प्रातः उठ महामन्त्र गिनना है।
फिर बड़ों को प्रणाम भी करना है।।
जय जिनेन्द्र बोलना भारी है।।4।।

समय पर सोना-उठना है।
कार्यक्रम समय पर करना है।।
लेना 'धर्म' प्रेरणा प्यारी है।।5।।

174. देव गुरु धर्म तीनों शरण महान् है

तर्ज : डगमग डगमग.

देव गुरु धर्म तीनों शरण महान् है।
मंगल व उत्तम तीनों नाव के समान है।।टेर।।

फूटी और पत्थर की नावड़ी जो होती है।
वैठने वालों को मझधार में डुबोती है।।
कुदेव गुरु धर्म ऐसी नाव के समान है।।1।।

तिरना हो यदि तो ज्ञान से विचारो जी।
स्वरूप समझकर इन्हें स्वीकारो जी।।
तब ही तो पावोगे तुम निर्वाण है।।2।।

देव अरिहन्त गुरु निर्ग्रन्थ धार लो।
केवली भाषित धर्म शुद्ध स्वीकार लो।।
'मुनि धर्मेश' होगा तब ही कल्याण है।।3।।

175. भावना भवनाशिनी

तर्ज : हरि गीतिका-

भावना भवनाशिनी है भावशुद्धि कीजिए।
भाव बिन निष्फल क्रिया सब बात यह सुन लीजिए।।टेर।।

नाम स्थापना द्रव्य भाव निक्षेप जो यह चार है।
भाव बिन निक्षेप तीनों होते जो बेकार है।।1।।

शुभ भाव से ही पुण्य बंध और पाप अशुभ भाव से।
राजऋषि प्रसन्नचन्द्र दृष्टान्त सुन लो चाव से।।2।।

तन्दुलमच्छ ने भाव से ही नरक का बंधन किया।
भाव से ही नागश्री ने जीवन का पतन किया।।3।।

दान, शील, तप शुद्धि होती भावना की शुद्धि से।
जिन नाम भी तो बंधाता हैं भावना की वृद्धि से।।4।।

'धर्मेशमुनि' कहे भावना शुद्ध होवे ऐसी साधना।
करते रहो सजग बनकर मोक्ष की हो चाहना।।5।।

176. सुख चाहता तू नादान

तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश.

सुख चाहता तू नादान तो सुन बात लगाकर ध्यान अरे अज्ञानी।
तू सुन ले प्रभुजी की वाणी। टेर।।

तेरा कर्म ही सुख-दुःख का दाता तू खुद ही इसका निर्माता।
इस सत्य तथ्य को समझ बात ले मानी।।1।।

आकड़ले से आम नहीं मिलता, धतूरे से संतरा नहीं फलता।
वैसे ही दुष्कर्म से सुख पा नहीं सकता है प्राणी।।2।।

चाहे किसी तीर्थ में जा न्हाले, चाहे किसी देव को तू ध्याले।
नहीं मिल सकती है मुक्ति तज नादानी।।3।।

यदि सच्चा सुख तुझे पाना है, दुष्कर्म से बचते जाना है।
यह बात 'धर्म' की मान बन जा ज्ञानी।।4।।

177. ले लो ले लो रे सुदेव गुरु धर्म शरणा

तर्ज : सोते सोते ही निकल गई सारी.

ले लो रे ले लो रे सुदेव गुरु धर्म शरणा।
धर्म शरणा रे यदि चाहो तिरना। टेर।।

कुदेव गुरु और धर्म को ध्याते काल अनादि से भटके।
नरक गति में जाकर खाये परमाधामी के झटके।।

अब तो आया मौका हाथ कर लो अपना निरणा।।1।।
रागी-द्वेषी देवों को तज अरिहन्त सिद्ध को ध्यावो।
आरम्भ परिग्रह धारी गुरु तज निर्ग्रथ गुरु अपनाओ।।
सद्ज्ञान का तो पाओ अब अमृत झरणा।।2।।
हिंसा में अधर्म मान अहिंसा धर्म अपनाओ।
निर्वद्य भक्ति कर इनकी भवसागर तिर जाओ।
चाहो शाश्वत सुख का राज मोक्ष गति वरना।।3।।
मंत्र-तंत्र की सिद्धि में भ्रमित बनो मत भाई।
कर्म सिद्धांत पे श्रद्धा रखो शुद्ध समकित है पाई।
तज आश्रव के सब काम संवर करणी करना।।4।।
'मुनि धर्मेश' कहे यह मौका, दुर्लभ हाथ में आया।
ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की साधना कर लो भाया।।
कर लो कर्मो का अब नाश भवसागर तरना।।5।।

178. भरत चक्रवर्ती के सोलह स्वप्न

तर्ज : आते आते हैं-

आते-आते है भरत चक्रवर्ती प्रभु ऋषभ चरणार।।टेर।।

हाथ जोड़कर बोले प्रभु मुझे दिखे स्वप्न क्रमवार।
विनीत भाव से वंदन करके बैठे चरण मझार।।1।।
पहले स्वप्न में सिंह तेवीस थे एक-एक के लार।

प्रभुवर कहते तेईस तीर्थंकर और हो भरत मझार।।2।।
दूजे स्वप्न में सिंह के पीछे हिरण देखो सुखकार।
प्रभुजी कहते चौबीसवें जिन के हिरण सम अणगार।।3।।
एक अश्व को गज पर बैठा देखा तृतीय मझार।
चमत्कार विद्या में पड़ मुनि पतित होंगे दुःखकार।।4।।
चौथे स्वप्न में बकरी खाती देखी सूखे पात।
अनावृष्टि से अन्नाभाव में अभक्ष मनुष्य है खात।।5।।
हस्ती पीठ पर कपि को बैठा देखा पंचम मझार।
बोले प्रभुजी दुराचारी करें राज्य का संचार।।6।।
छठे स्वप्न में कौए ने दिया एक हंस को मार।
प्रभु फरमाते कुसाधु लगे सुसाधु के लार।।7।।
प्रेत नृत्य करते हुए देखे सप्तम स्वप्न मझार।
राक्षसी वृत्ति की करे उपासना प्रभुवर कहे अणगार।।8।।
मध्य भाग सूखा सरवर का गीली दिस देखी वार।
आर्यावर्त्त में घटे सभ्यता प्रभुजी करे उच्चार।।9।।
नवमे स्वप्न में रत्न राशि पर जमीं धूल अपार।
प्रभुजी कहते रत्नत्रयी पर मिथ्या रज दुःखकार।।10।।
कुत्तों की पूजा होती देखी दसमें स्वप्न मझार।
कुदेव गुरु और धर्म की पूजा पंचम आरे दुःखकार।।11।।
ग्यारहवें स्वप्न में जवान बैल निज भार फैंक कर भागे।
प्रभुजी कहते युवक साधु बन धर्म छोडेंगे आगे।।12।।

बारहवें स्वप्न में दो बैलों को देखा कंधा मिलाते।
प्रभुजी कहते धर्म हेतु नहीं मौज-शौक मनाते।।13।।
तेरहवें स्वप्न में धुंधा चन्द्र पे छाई देखी अपार।
आत्मभाव की कमी हो निरन्तर प्रभुजी करे उच्चार।।14।।
मेघाच्छादित सूर्य को देखा चौदहवें स्वप्न मझार।
बोले प्रभुजी पंचम आरे में सर्वज्ञ न होवे लिगार।।15।।
छायाहीन एक वृक्ष को देखा पन्द्रहवें स्वप्न में नाथ।
धर्मी व्यक्ति तृष्णावश हो छोड़े सत्य का साथ।।16।।
स्वप्न सोलहवें में देखा एक सूखी पत्ती का ढ़ेर।
प्रभुजी कहते जड़ी-बूंटी का होवेगा सब ढ़ेर।।17।।
सुनकर भरत चक्रवर्तीजी चमके अपने हृदय मझार।
'धर्म' भावना जगती मन में, विरक्त बने सरवकार।।18।।

179. कर्मप्रकृति

तर्ज : हरि गीतिका.

चिदानन्द चैतन्य तेरा शुद्ध स्वरूप पहचान ले।
अक्षय अनन्त और अव्याबाध सुखमय जिसे तू जान ले।।
फिर भी इस संसार में तू दुःखित बन क्यों भटक रहा।
कारण क्या है सोच तू क्यों चतुर्गति में लटक रहा।।1।।
प्रभु वीर ने निज ज्ञान में कारण कर्म को जानकर।
स्पष्ट बतलाया जगत् को बात सुन ले ध्यान धर।।

जैसे मकड़ी जाल रच खुद उसमें ही फंस जाती है।
वैसे ही इस कर्मजाल में आत्मा धंस जाती है।।2।।
मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद व कणाय अशुभ योग से।
कर्म का यह जाल रचती सद्ज्ञान के वियोग से।।
जो स्पष्ट, बद्ध, निधत, निकाचित चार तरह से फैलता।
और आत्मा के निज गुणों को अष्ट रूप से घेरता।।3।।
ज्ञान-दर्शनावरण और वेद मोहनीय जानिये।
आयु नाम गोत्र अन्तराय केशत अठावन भेद कुल मानिये।।
मत्सर वृत्ति प्रदोष दृष्टि निन्हव वृत्ति धारण करें।
ज्ञान में अन्तराय देकर ज्ञान-दर्शनावरण करें।।4।।
मति श्रुत अवधि मनःपर्यय केवलज्ञान को।
ज्ञानावरणीय कर्म करता आच्छादित है ज्ञान को।।
चक्षु अचक्षु अवधि केवलदर्शन की जो शक्ति है।
दर्शनावरण कर्म प्रभाव से भ्रान्त होता व्यक्ति है।।5।।
निद्रा निद्रा-निद्रा प्रचला प्रचला-प्रचला सत्यानगृद्धि।
ये पॉच ही मिल मलिन करती आत्मा की सद्बुद्धि।।
दुःख, शोक, ताप, आक्रन्दन, वध वेदना स्व-पर को द।
असाता वेदनीय कर्म बांध खुद असाता को भोगता है।।6।।
प्राणानुकम्पी सराग संयमी शुचि योग क्षमाधारी बन।
साता वेदनीय बांध करके साता पावे जन्म-जन्म।।
केवली श्रुत धर्मसंघ की निंदा जो प्रतिपल करे।
तीव्र कपाय उन्मत बन तीव्र परिणाम जो चित्त धरे।।7।।

महामोहनीय कर्म बंधाकर आत्मा फल भोगती।
मिथ्यात्व मिश्र सम्यक्त्व मोह दर्शन गुण को ढांकती।।
अनन्तानुबंधी अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी संज्वलन।
क्रोध मान माया लोभ चारित्र गुण का करे हनन।।8।।
हास्य भय रति अरति शोक व जुगुप्सा।
वेदत्रयी के उदय भाव से रुक जाती सर्वज्ञ दशा।।
महारंभ परिग्रही मद्य-मास भक्षी पंचेन्द्रिय वध जो करे।
नरकायु बांध नरक गति में जा वो गिरे।।9।।
मायावी तिर्यंचायु बांध तिर्यंच गति में जायेगा।
अल्पारंभ परिग्रही मृदु स्वभावी मनुष्य तन को पायेगा।।
सराग संयम संयमा-संयम बाल तप को धारता।
अकाम निर्जरा करने वाला देवायु को बांधता।।10।।
शुभाशुभ योग वृत्ति से सम विषम परिणामी बन।
शुभाशुभ ही नामकर्म का जीव करता है चयन।।
जिसका शत त्रय रूप में फल मिलता है इस जीव को।
चार गति में जिससे पहचानते सब उसको।।11।।
चार गति शरीर जाति पाँच-पॉच से जानिये।
उपांग तीन बंधन पन्द्रह संहनन संस्थान छः छः मानिये।।
पॉच संघातन चार आनुपूर्वी दो विहायोगति खास है।
चौदह ये जो पिंड प्रकृति भेद पचहत्तर तास है।।12।।
अगुरु लघु निर्माण आतप उद्योत पराघात है।
उपघात उच्छ्वास जिन प्रत्येक प्रकृति आठ है।।
त्रस बादर पर्याप्त प्रत्येक शुभ सुभग यो मानिये।

आदेय सुस्वर यश दश ये त्रसदशक की जानिये ।।13।।
स्थावर सूक्ष्म अपर्याप्त साधारण अस्थिर अशुभ दुःखकार है।
दुर्भग दुस्वर अनादेय अपयश स्थावर दशक बेकार है।।
गुणग्राही मद का त्यागी बन संघ भक्ति जो दिल से करे।
उच्च गौत्र का बंधकर नहीं नीच गौत्र को वो वरे।।14।।
दान में अन्तराय देकर दानान्तराय को बाँधता।
लाभ में बेभान बन लाभान्तराय को पामता।।
भोगोपभोग पुरुषार्थ में जो अन्य के बाधक बने।
भोगोपभोग वीर्यान्तराय कर्म को वह नर चुने।।15।।
शत अठावन प्रकृति कुल आठ कर्म की जानिये।
बंध योग्य उनमें से कुल एक सौ बीस ही मानिये।।
उदय और उदीरणा शत बावीस की ही होती है।
एक सौ अड़चास पूरी सत्ता में कुल रहती है।।16।।
करके इनका ज्ञान कर्मग्रन्थ पढ़ते जाईये।
कर्मकाण्ड आदि को पढ़कर ज्ञान गहरा पाईये।।
फिर सोचिये निज मन मे कैसा कर्म का यह जाल है।
फस के बैठा हूँ मैं इसमें किसका यह कमाल है।।17।।
प्रभु वीर कहते खुद ही चेतन इसका रचनाकार है।
छूटना भी इससे चेतन तेरा ही अधिकार है।।
बस ज्ञान इसका प्राप्त कर पुरुषार्थ को धारण करो।
करके दृढ़ संकल्प मन में संयम पथ पर चरण धरो।।18।।
आश्रव वृत्ति का त्याग कर संवर वृत्ति अपनाईये।
महाव्रती अणुव्रती बन जीवन को साधते जाईये।।

बारह भेदे तप से इनकी निर्जरा कर लीजिये।
पूर्ण क्षय करके जल्दी मोक्ष पद पा लीजिये।।19।।
फिर जन्म-मरण के दुःखों से पूर्ण मुक्त बन जायेंगे।
लोकाग्र पर स्थित होके शाश्वत सुख को वहाँ पायेंगे।।
'धर्मेशमुनि' की कामना भी एक यही खाश है।
पावे इससे शीघ्र मुक्ति एक मन की आश है।।20।।

180. विद्यार्थी जीवन सुखकारी

तर्ज : जय बोलो महावीर.

विद्यार्थी जीवन सुखकारी।
है श्वेत वस्त्र सम उज्ज्वल भारी।।टेर।।

जैसा रंगना है रंग सकते।
सद्‌गुण या दुर्गुण भर सकते।
कर लो निर्णय तुम हितकारी।।1।।

तुम में महावीर की शक्ति है।
श्रीराम कृष्ण-सी ज्योति है।
प्रगटाओ उसको श्रेयकारी।।2।।

भारत के भाग्य विधाता तुम।
अपने जीवन निर्माता तुम।
भविष्य की आशा तुम भारी।।3।।

इस शक्ति का सदुपयोग करो।
मानव जीवन का मोल करो।
तज दुर्व्यसनों की बीमारी।।4।।

प्रातः उठ प्रभु का ध्यान धरो।
फिर मात-पिता को प्रणाम करो।
पा 'धर्म' आशीष जीओ मंगलकारी।।5।।

181. षड् आवश्यक आराधना

प्रभु वीर ने बतलाई है कैसी सुन्दर साधना।
आत्मशुद्धि में परम सहायक षडावश्यक आराधना।टेर।।

प्रथम आवश्यक सामायिक का कैसा मंगलकारी है।
विषमता की ज्वालाओ को शमन करे बनवारी है।।
ज्ञान सहित आराधन कर लो बने शुद्ध मन भावना।।1।।

चउवीसत्थव है द्वितीयावश्यक दर्शन विशुद्धि का भारी।
चौवीस तीर्थंकर की स्तुति से होती सम्यक्त्व शुद्ध प्यारी।।
तीर्थंकर पद पाने को हो यदि अन्तरमन कामना।।2।।

तृतीय आवश्यक वंदन करता नीच गोत्र का क्षय भारी।
उच्च गोत्र सौभाग्य प्रदाता इस भव पर भव श्रेयकारी।।

गुणीजनों को विधियुक्त कर वंदन मन हरषावना।।3।।

प्रतिक्रमण चौथा आवश्यक है व्रत शुद्धि का हितकारी।
प्रमादवश हो मिथ्यात्व आदि पर स्थान वरे हो दुःखकारी।।
मिथ्या दुष्कृत देकर कर लो व्रतों की परिपालना।।4।।

पंचम आवश्यक कायोत्सर्ग का व्रत का पुष्टिकारक है।
प्रत्याख्यान छठा आवश्यक जो अशुभ वृत्ति निवारक है।।
'धर्म' प्रेरणा पाकर कर लो भव्यों ! भव्य आराधना।।5।।

182. ले जिनवाणी आधार

तर्ज : जब तुम्हीं चले-

ले जिनवाणी आधार, समझ लो सार बड़ा हितकारी।
है बहुत बड़ा श्रेयकारी।।टेर।।
क्रिया ही कर्मबंध हेतु है, विवेक धर्म का सेतु है।
परिणा में बंध होता है उसका भारी।।1।।
प्रति श्वासोच्छवास में परिस्पंदन, होता है आत्मा में हर क्षण।
वही क्रिया कर्म हेतु है दुःखकारी।।2।।
या या क्रिया सा सा फलवती इसमें संशय नहीं कुछ रत्ती।
पर पारिमाणिक तरतमता न्यारी।।3।।

जैसी तीव्रता मन्दता होती वैसा कर्म बंधाता।
शुभाशुभ फल आता उससे भारी।।4।।
विवेक सजग बन जो रहता, वह महापाप से बच जाता।
कर 'धर्म' उपार्जन पाता शान्ति प्यारी।।5।।

183. उत्थान पतन का हेतु

तर्ज : कलदार रूपईया चाँदी का.

उत्थान पतन का हेतु भी अपने को अपना तुम जानो।
सुख-दुःख का कर्ता-भोक्ता भी अपने को अपना तुम मानो।।टेर।
आत्मा ही कर्म की कर्ता है आत्मा ही उसकी भोक्ता है।
आत्मा ही मित्र व शत्रु है इसमें संशय तुम मत मानो।।1।।
निश्चय में देव गुरु भी तो अपना यह आत्मा खुद ही है।
निज धर्म स्वभाव रमणता है बाकी तो निमित्त तुम जानो।।2।
नन्दनवन भी यह आत्मा है और कामधेनु यह चेतन है।
वैतरणी कुटशामली भी इसको ही बेशक तुम मानो।।3।।
विभाव दशा में भ्रमित बन चेतन बस सुख-दुःख पाता है।
स्वभाव दशा में रमण करो यह बात 'धर्म' की तुम मानो।।4।

184. भोला आत्मा रो मैल तूं उतार लेनी रे

तर्ज : भोला आत्मा रे दाग लगाईजे मती-

भोला आत्मा रो मैल तूं उतार लेनी रे।
थारां शुद्ध स्वरूप ने निखार लेनी रे। टेर।।

आत्मा में भरियो है ज्ञान रो खजानो।
कर पुरुषार्थ इणने उघाड़ लेनी रे।।1।।

शाश्वत सुख रो निधान थारी आत्मा।
अन्तर्मुखी बन तूं निहार लेनी रे।।2।।

आत्मा ही शत्रु थारो आत्मा ही मित्र है।
वैर भाव पर सूं निवार लेनी रे।।3।।

अज्ञान दशा में तूं ही मैल चढ़ायो।
तो मौको आयो इणने उतार लेनी रे।।4।।

दुर्लभ नर तन हाथ में ओ आयो।
धर्माराधन चित्त धार लेनी रे।।5।।

'मुनि धर्मेश' कहे जाग रे चेतनिया।
तू जल्दी सूं बाजी अपनी मार लेनी रे।।6।।

185. रहनेमि–राजुल संवाद

तर्ज : तेजाजी.

रहनेमि– उठो–उठो–उठो थे राजुल बनड़ी प्यारी ओ।
संताप छोड़ी ने सिणगार साज लो।।टेर।।

राजुल– किणरे लारे सिणगार सजाऊं रहनेमि ओ।
नेम नगीना तज चालिया।।टेर।।

रहनेमि– भोली राजुल नेम लारे क्यूं तू पागल बण रही ए।
थारो गौरव कांई राखियो।।

राजुल– रहनेमि मैं अबला नारी म्हारो कुण सहाई रे।
किण रे चरण री शरण आदरूं।।

रहनेमि– नेम नगीना काला कायरा तोरण चढ़ छिटकाई रे।
मनड़ा सूं प्रीति तो वांरी तोड़ दो।।

राजुल– वांरी प्रीति तोड़ अब मैं किण सूं स्नेह लगाऊँ रे।
इण भव में कुण साज दे।।

रहनेमि– चिंता छोड़ राजुल ऊबो रहनेमि मैं सामो ए।
वरमाला तो गल डाल दे।।

राजुल– एक भाई तो तेल चढ़ी ने अधविच में छिटकाई रे।
कांई भरोसो करूं आपरो।।

रहनेमि- ओ मत बोल राजुल केवे सो मैं कर दिखलाऊँ रे।
चाहे परीक्षा कर देख ले।।

राजुल- ऐसी बात है तो हाथ सूं खीर बणाय पिलावो ओ।
जद जाणूं मैं थांरी प्रीतड़ी।।

रहनेमि- ले आ राजुल कनक कचोले खीर बणाय मैं लायो ए।
पी ले तू प्रीति रो रस घोल ने।।

राजुल- खीर पीय ने वमन करी कटोरो भर झट दीधो हो।
साची प्रीति हो इण ने पीय लो।।

रहनेमि- देख भड़क रहनेमि बोल्यो मति गई कांई मारी है।
काग श्वान ज्यूं मने जाणियो।।

राजुल- वमन कियो रो चाटे वो तो काक श्वान कहलावे ओ।
ज्ञानी बनी ने विचार लो।।

रहनेमि- पायो-पायो राजुल अब तो 'धर्म' बोध में पायो ए।
संयम लेई ने मुक्तिजाव सूं।।

186. इन्द्र चन्द्र गिरी ऊपर ऊबा

तर्ज : होली आई रे-

इन्द्र चन्द्र गिरी ऊपर ऊबा भरत बाहुबली भाई रे।
प्रतिमा वांरी शिक्षा दे सबने सुखदाई रे।।

मद ने त्याग दो मद ने त्याग दो।
ओ मद बड़ो ही हैं दुःखादाई रे।।टेर।।

सहस्त्र मुनियों री वैयावच्च कर बाहुबल भल पायो रे।
भरत चक्रवर्ती ने भी दो बार हरायो रे।।1।।
तीजी बार मुष्टि प्रहार में इन्द्र आय चेतायो रे।
प्रतिबोधित बन तत्क्षण सिर रो लोच करायो रे।।2।।
संयम ले प्रभु ऋषभ चरण में जावण रो मन भायो रे।
पर लघु बांधव ने वंदन सूं मन शर्मायो रे।।3।।
केवलज्ञान ने पावण खातिर वन में ध्यान लगायो रे।
घोर तपस्या धारी पण नहीं मद छिटकायो रे।।4।।
ब्राह्मी सुन्दरी दोनूं बहनां आय जद चेतायो रे।
बोध पाय ने नमन हित जद, चरण बढ़ायो रे।।5।।
घनघाती कर्मों ने क्षय कर, तत्क्षण केवल पायो रे।
मद ने त्याग बण्यो वीतरागी, मोक्ष सिधायो रे।।6।।
दो हजार बयालीस रो ओ, पोष मास मन भायो रे।
'धर्मेशमुनि' सुद आठम ने, बाहुबलजी आयो रे।।7।।
नाना गुरु री दीक्षा जयन्ती रो, महोत्सव मनायो रे।
चारु कीर्ति भट्टारक रो, स्नेह सवायो रे।।8।।

187. सुणतां सुणतां आ ऊमर

तर्ज : तेजा.

सुणतां सुणतां सुणतां आ ऊमर बीती थांरी रे।
कांई सुणवां रो सार काढ़ियो।।टेर।।

आठ वर्ष का सुणवां लाग्या साठ वर्ष रा होग्या रे।
तो भी मन में नहीं ज्ञान विचारियो।।1।।

मुंडा रा सब दांत पड़ग्या कान थांरा रुजग्या रे।
केश तो काला रा धोला हो गया।।2।।

आंख्या री भी ज्योत मंदी आ तो थांरी पड़गी रे।
फेर भी भोगा सूं नहीं धापिया।।3।।

त्याग-तप री भावना थारे मन में नहीं जागी रे।
झूठी मोह माया में थां राचिया।।4।।

हाट हवेली कुटुम्ब कबीलो धन धरती आ सारी रे।
कुण ले जासी कुण ले गया।।5।।

किण रे खातिर कूड़ कपट ने सेवो मन में सोचो रे।
ओ ही तो सत्गुरु थांने केरया।।6।।

हेय वस्तु ने त्यागे और उपादेय ने धारे रे।
वे ही सुणवां रो सार पाविया।।7।।

'मुनि धर्मेश' कहे श्रोता सब मन में जरा विचारो रे।
कुछ तो उतारो जीवन मांय ने।।8।।

188. अरे भाई इतना तो ज्ञान कर लो

तर्ज : इक परदेशी मेरा.

अरे भाई इतना तो ज्ञान कर ले।
पाया-पाया नरतन ध्यान धार ले। टेर।।

चार गति चौरासी ही लक्ष जीव योनि में।
जा-जा पाया दुःख फिर आया मानव योनि में।।
इसका तो मन में सन्मान कर ले।।1।।

आहार निद्रा भय और मैथुन संज्ञा चार है।
पशु योनि में भी होता इसका संचार है।।
फंस मत मन का अज्ञान हर ले।।2।।

चार अंगों ने इसे दुर्लभ बतलाया है।
देवताओं को भी वल्लभ ऐसा फरमाया है।।
वीतराग वचनों का मान कर ले।।3।।

स्वार्थ की भावना से भरा संसार है।
भौतिक सुखों में भैया नहीं कुछ सार है।।
जीवन मे कुछ सद्ज्ञान भर ले।।4।।

पुण्यवान देह पाके खाली हाथ जायेगा।
याद रख आगे वहाँ फिर दुःख पायेगा।।
'धर्मेश' बात तू नादान सुन ले।।5।।

189. पूर्वाग्रह छोड़े

तर्ज : नगरी-नगरी, द्वारे-द्वारे-

जीवन को संस्कारित करना यदि चाहो देवाणुप्पियां।
पूर्वाग्रह की वासना दिल से तज आओ देवाणुप्पियां। टेर।।
जैसे कठिन मलिन वस्त्रों पर रंग चढ़ाना होता है।
दुर्गन्ध युक्त भोजन में मधु पय भी विकृत हो जाता है।।
वैसे ही दुर्वासना युत मन होता है देवाणुप्पियां।।1।। जीवन.........
जीर्ण वस्त्र तज कर ही नये वस्त्र धारण कर सकते हैं।
हाथ के वासी को तज कर ही ताजा को खा सकते हैं।
वैसे ही सद्गुण की सौरभ पा सकते देवाणुप्पियां।।2।। जीवन.....
गंदी नाली का कीड़ा ज्यों गुलाब बाग में भी जाता।
साथ में गंदगी ले जाने से गुलाब सुगंध नहीं ले पाता।।
'मुनि धर्मेश' कहे वैसे ही करो चिंतन देवाणुप्पियां।।3।। जीवन....

190. चल दक्षिण से हम आये

तर्ज : प्यासे पंछी नील-

अरुणोदय शुभ आज हुआ हम गुरु दर्शन को पाये।
चल दक्षिण से हम आये।।
नव वर्षों के बाद आज हम शुभ अवसर यह पाये।
चल दक्षिण से हम आये। टेर।।
इन्द्रपुरी से दक्षिण यात्रा प्रारम्भ हुई हमारी।

आज सम्पन्न यह हुई यहीं पर मंगलमय सुखकारी।।
गुरुदेव के दर्शन कर हम आनन्द अति ही पाये।।1।। चल.....

दक्षिण की पावन भूमि में विचरण करते भारी।
उनकी भाव-भक्ति को लखकर जगी भावना प्यारी।।
गुरुदेव के चरण पड़े तो धान्य धरा बन जाये।।2।। चल.......

इन्ही भावों को संजोते वर्ष सात गुजारे।
मेहनत कर-कर हारे फिर भी नाथ नहीं पधारे।।
दर्शन की मन जगी पिपासा आज सफलता पाये।।3।। चल .....

आपके तो गुरुदेव शिष्य ये एक-एक से नामी।
हम अल्पज्ञों के तो आप एक जीवन धन हो स्वामी।।
चरण-शरण में आश्रय देओ यही भावना भाये।।4।। चल...

गुरु भाई-बहिनों के दर्श कर मुर्झा मन विकसाया।
इनकी गुणमय सौरभ को पा अन्तर्मन मुस्काया।।
'धर्म' गौतम प्रशम तीनों हम स्वागत कर हर्षाये।।5।।चल.........

191. यह विद्या का आलय सुन्दर

तर्ज : देख तेरे संसार की.

यह विद्या का आलय सुन्दर कैसा है सुखकार।
कर लो मन में जरा विचार।।
आते है यहाँ आप रोज क्यों सोचो हृदय मझार।
कर लो मन में जरा विचार।।टेर।।

अनपढ़ भी तो खाते-पीते, धन कमाते मौज उड़ाते।
यही काम पढ़-लिखकर भी करते तो क्या उसका लाभ कमाते।।
विनय, विवेक और सदाचार का, पावें नहीं संस्कार।।1।।कर लो.

बी.ए.एम.ए. भी पढ़ जाते, पर एन की डिग्री नहीं पाते।
वे पढ़-लिख मूर्ख कहलाते शिक्षा को बदनाम कराते।।
ऐसी विद्या पढ़कर के भी पाते नहीं कुछ सार।।2।। कर लो.

दुर्व्यसनों में वे फंस जाते, गुण्डागर्दी में नाम कमाते।
हड़तालें हर बात में करते तोड़-फोड़ कर लूट मचाते।।
ऐसे विद्यार्थियों से तो तबाह हुई सरकार।।3।। कर लो.

पढ़ना तो सार्थक वो करते जो जीवन आदर्श बनाते।
सदाचार संयम अपनाते देश धर्म का नाम बढ़ाते।।
सत्यं शिवं सुन्दरं जिसका हो जीवन व्यवहार।।4।। कर लो.

विद्यार्थी है फोटोग्राफी शिक्षक जीवन की टू कॉपी।
इसमें संशय नहीं कदापि ढ़ील न करना आप जरा भी।।
'मुनि धर्मेश' की बात का चिंतन, करें आप इस वार।।5।।कर लो.

192. सदा समीक्षण ध्यान धारो

तर्ज : घर आया मेरा परदेशी.

शुद्ध भावों में रमण करो।
सदा समीक्षण ध्यान धारो।।टेर।।

दान, शील, तप आराधन भाव ही फल का है साधन।
इस पर गहन विचार करो, सदा समीक्षण ध्यान धारो।।1।।
प्राणीमात्र से मित्रता धार, गुणीजन लख प्रमोद से भर।
कलिष्टजनों पर महर करो, सदा समीक्षण ध्यान धारो।।2।।
मध्यस्थ भाव विपरीतों पर, ये चार भावना है सुखकर।
भाकर परमानन्द वरो, सदा समीक्षण ध्यान धारो।।3।।
दानवी मानवी दैविक जान आध्यात्मिकी की भी पहचान।
भावना ही है घोर करो सदा समीक्षण ध्यान धारो।।4।।
अनित्य भावना भरत ने भा अशरण भावना अनाथी ध्या।
विरक्तबने अनुसरण करो, सदा समीक्षण ध्यान धारो।।5।।
अशुचि भावना को भाकर सनत् चक्री त्यागी बनकर।
निकल पड़े चिंतन करो, सदा समीक्षण ध्यान धारो।।6।।
नमिराज एकत्व भाव लाई अन्यत्व भाव मृगा पुत्र भाई।
करी साधना याद करो सदा समीक्षण ध्यान धारो।।7।।
आश्रव साधना समुद्रपाल संवर भावना हरिकेश चांडाल।
भाई शिक्षा ग्रहण करो, सदा समीक्षण ध्यान धारो।।8।।
निर्जरा भावना अर्जुन भाई, शिवराज लोक स्वरूप ध्यायी।
संयम लेने हित मुनिवरों, सदा समीक्षण ध्यान धारो।।9।।
ऋषभदेव सुत अठानवें दुर्लभ बोध भावना भावे।
तिर गये जग से नित सुमरो, सदा समीक्षण ध्यान धारो।।10।।

धर्म भावना धर्मरुचि भाकर करणी की ऊँची।
केसी इस पर ध्यान धरो, सदा समीक्षण ध्यान धरो।।11।।
'धर्मेश' श्यामपुरा मांहि, भावना पद रचा सुखदाई।
भाकर जीवन सफल करो, सदा समीक्षण ध्यान धरो।।12।।

193. सम्यक्त्व पराक्रम

तर्ज : मुदड़ी.

चेतन सम्यक् पराक्रम धार पार हो जावसी रे।
नहीं तो चौरासी चक्कर में गोता खावसी रे।।टेर।।

आर्य क्षेत्र उत्तम कुल मांही मनुष्य जन्म मिल्यो सुखदाई।
पॉचों इन्द्रिय पूर्ण पाई दीर्घायु भी साथ में भाई।।
धर्म श्रवण को फल तू साथ में पावसी रे।।1।।
यदि संवेग धार निर्वेदी बणसी धर्म श्रद्धा दृढ़ धारण करसी।
गुरु साधर्मी सेवा आदर सी आलोचना निंदा गृहा चित्त धरसी।।
सामायिक चउवित्सव वंदन प्रतिक्रमण ने धारसी रे।।2।।
फिर कायोत्सर्ग करके भाई प्रत्याख्यान लेकर सुखदाई।
थव थुई मंगल मनाई काल प्रतिलेखान चितलाई।।
प्रायश्चित्त लेकर क्षमा मांग ले तो तिर जावसी रे।।3।।
स्वाध्याय वाचना प्रतिपृच्छना पर्यटन अनुप्रेक्षा करना।
धर्म कथा और श्रुत आराधना।।

तप संयम वोदाण से सुख शैया पावसी रे ।।4।।
अप्रतिबद्ध विहारी बनकर विविक्त शैयासन धारण कर।
विनिवर्तन साधना को कर संयोग उपाधि आहार को तजकर।।
कषाय योग शरीर सहाय भक्तसद्भाव तू त्यागसी रे।।5।।
प्रतिरूपताधारी बनकर वैय्यावच्च गुण को अपना कर।
सर्वगुण सम्पन्नता पाकर वीतरागता उत्पन्न कर।।
क्षमा निर्लोभ मृदुता ऋजुता गुण अपनावसी रे।।6।।
भाव करण जोग सत्यता मन वच काय गोपनीयता।
तन तीनों में समाधिवंतता ज्ञान दर्शन चारित्र सम्पन्नता।।
पाँचों इन्द्रिय निग्रह चार कषाय ने जीतसी रे।।7।।
तो राग-द्वेष मिथ्या दर्शन पर विजय पताका को फहराकर।
शैलेषी अवस्था को पाकर निष्कर्म दशा को अपनाकर।।
'मुनि धर्मेश' अष्ट गुण प्रगटाकर सिद्ध गति पावसी रे।।8।।

194. बच्चों की प्रार्थना

तर्ज : हे प्रभो आनन्द दाता.

हे प्रभो हम बालकों को ऐसी शक्ति दीजिये।
पढ़-लिख होशियार होवें ऐसी बुद्धि दीजिये।।टेर।।
जिस देश जाति धर्म कुल में जन्म हमने हैं लिया।
उसका गौरव बढ़े निरन्तर ऐसी भक्ति दीजिये।।1।।

पितु को नमन कर आशीष उनका हम ग्रहें।
रहे दुर्व्यसनों से ऐसी युक्ति दीजिये।।2।।

दुःखी को देखकर करुणा हृदय में बह चले।
ी सेवा धर्म माने ऐसी दीप्ति दीजिये।।3।।

195. आवश्यक आराधना

तर्ज : देख तेरे संसार की.

जैनियों कान लगाकर वीर प्रभु फरमान ।।टेर।।
आवश्यक आराधन ही है सहज मुक्ति सोपान।।
चाहे शाश्वत सुख निधान।।टेर।।

न अंजन भोजन व मंजन व्यायाम भ्रमण है तन का साधन।
का नियमित करता सेवन उसका रहता निरोगी तन।।
न जीने का आनन्द वह पाता है इंसान।।1।।

आत्मिक निरोगता भाई, जब तक नहीं पावे सुखदाई।
धन परिजन सारे भाई, लगते पूरे हैं दुःखदाई।।
त्मशान्ति यदि पाना चाहो, सुनो लगाकर ध्यान।।2।।

आवश्यक आराधन कर लो, अनन्त शक्ति को तुम वर लो।
ने मन में निश्चय कर लो, जीवन को आनन्द से भर लो।।
दनी चौक दिल्ली में करता, मुनि 'धर्मेश' आह्वान।।3।।

196. आवश्यक आराधना

तर्ज : खड़ी नीम के नीचे.

शाश्वत सुख की सिद्धि में जो सहज सहयोगी साधना।
प्रभु वीर ने बतलाई यह षट् आवश्यक आराधना-2।।टेर।।
पहला आवश्यक सामायिक का समता गुण विकसाता है
उसी से चेतन चउविस्तव की भूमिका पर आता है।
गुणीजन का गुण कीर्तिन कर वंदन की जगे कामना।।1।

फिर ही प्रतिक्रमण करके व्रत अतिचार शुद्धि वरता
कायोत्सर्ग से प्रायश्चित्त कर प्रत्याख्यान से शुद्ध बनता।
'मुनि धर्मेश' चाँदनी चौक दिल्ली में देता प्रेरणा।2।।

197. विधि शुद्धि विवेक बिन क्रिया

तर्ज : जरा सामने तो.

जरा मन में विचारो भैया, ऐसी क्रिया करने में क्या सार है।
नहीं विधि शुद्धि का विवेक हो, वह क्रिया होती निस्सार है।टेर।।
हलवा दाल का भी हो यदि पर विधि से नही तैयार हुवा।
इधर बाजरे का दलिया जो सुविधि से तैयार हुवा।।
बोलो कौन-सा खाना हितकार है।।1।।

औषध कितनी हो कीमती हो पर विधि से लेने का ध्यान नहीं।
वैसे ही परहेज का भी तो जिसको कुछ भी भान नहीं।।

क्या औषध सेवन का सार है।।2।।

औषध चाहे साधारण भी हो पर विधि शुद्धि विवेक रहे।
साथ में परहेज के पालन में भी पूरा सजग रहे।।
वही रोगमुक्त बनेगा बीमार है।।3।।

इसी तरह से क्रिया हो छोटी पर विधि शुद्धि का ध्यान धरो।
'मुनि धर्मेश' कहे आत्मा निरोगता का तुम निश्चय लाभ वरो।।
दिल्ली चाँदनी चौक मझार है।।4।।

198. सामायिक की साधना

तर्ज : खड़ी नीम के नीचे-

शाश्वत सुख प्रदायक है यह सामायिक की साधना।
वीर प्रभु ने बतलाई है कर लो तुम आराधना-2।।टेर।।

द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव की शुद्धि को चित्त में लाकर।
और व्यवहार सजगता को भी साथ में अपनाकर।।
करण और योगों से सावद्य वृत्ति को हैं त्यागना।।1।।

द्रव्य शुद्धि में सामायिक के साधन अल्पारंभी हो।
प्रमाणोपेत शुद्ध स्वच्छ श्वेत और सात्विकता के हामी हो।।
निर्वद्य साधना में सहायक बन करे नियन्त्रित वासना।।2।।

क्षेत्र शुद्धि में ऐसा स्थल जो छः काय आरम्भ से निवृत्त हो।
भौतिक राग-रंग से रहित आध्यात्म सौरभ से सुरभित हो।।

जगे मन में किंचित् जहाँ पर भौतिक सुख की वासना।।3।।

काल शुद्धि से स्व-पर मन में विषय भावना नहीं आवे।
अपने आश्रित प्राणियों में भी समता का रस भर जावे।।
ऐसे काल में सामायिक की नहीं होगी विराधना।।4।।

भाव शुद्धि में मन, वच, तन के बत्तीस दोषों को तज करके।
स्वाध्याय ध्यान जप योग साधकर समकित गुण विकसा करके।।
विधि सहित ही लेना और विधि सहित ही पालना।।5।।

प्राणीमात्र से मैत्री भाव, गुणीजन लख प्रमोद प्रगटे।
कलिष्ट जनों पर कृपा भाव माध्यस्थ भाव विपरीतों पर उलटे।।
'मुनि धर्मेश' व्यवहार बने ऐसा सफल बनेगी साधना।।6।।

199. त्रेषट श्लाघ्य पुरुष

तर्ज : जाओ जाओ रे-2.

पाये-पाये जो अष्ट सिद्धि व नव निधि भंडार।टेर।।

त्रेषट श्लाघ्य पुरुष हुए जो भरत क्षेत्र मझार।
चौवीस तीर्थंकर बारह चक्री बलदेव नव लार।।1।।

वासुदेव प्रतिवासुदेव ये नव-नव भी हितकार।
माता इकसठ पिता बावन ही थे जिनके सुखकार।।2।।

इनमें से चौवीस तीर्थंकर दस चक्री ही जान।
आठ बलदेव ही वरते शाश्वत सुख निधान।।3।।

बाकी तो संसार में देखो धर्म ध्यान विसराय।
सत्तासम्पत्ति में बन आसक्तजन्म-मरण दुःखपाय।।4।।

इसीलिये कुछ सोचो मन में सुन्दर अवसर आया।
'मुनि धर्मेश' भीम चौमासे गीत गाय सुनाया।।5।।

200. बेटी की विदाई

तर्ज : धरती धोरां री-

मैं तो देव आज विदाई पर नहीं सही जावे जुदाई।
देवां विदाई हो हो।।टेर।।

रखजे सास श्वसुर की काण सबही बड़ों को सम्मान।
पति ने परमेश्वर सम जाण।।1।।

व्रत और नियम दृढ़ता धार करजे अतिथि सत्कार।
पर सूं हसा ठसी निवार।।2।।

भोजन में माता सम बणजे सेवा दासी वणने करजे।
दुःख में मंत्री बणने रहीजे।।3।।

शैया में रम्भा सम रहीजे दोनों कुल री इज्जत रखजे।
आ तूं शिक्षा दिल में धरजे।।4।।

घर री बात न बारे करजे ऊँची-नीची सब सहीजे।
सॉची 'धर्म' पॅत्नी कहीजे।।5।।

201. बेटी की सास को भोलावन

तर्ज : पल्लो लटके.

मैं तो हॉ मैं तो सौंपा मारी लाड़ली ने सोरी राखीजो।
इण ने दीजो मति गाल सगीजी (ब्याणजी)सोरी राखीजो। टेर ।।
घणा कोडसूं पाल-पोष ने इण ने मोटी कीनी।
नहीं करायो काम कदी ने गाल कदी नहीं दीनी ।।
थे भी मत कराई जो काम ।।1 ।।

टी.वी. पिक्चर री शौकीन है इण ने देखण दीजो।
इणरा मन में जो भी कोड हो पूरा करण था दीजो ।।
म्हारी बात इतरी मान मति रोकिजो ।।2 ।।

बेटी ने भी शिक्षा देवे मत तू दब ने रहीजे।
द्वार पीहर रो खुल्लो थारो जचे जद आजाइजे ।।
'मुनि धर्मेश' कहे ऐसी शिक्षा भूल कदे मत दीजो ।।3 ।।

202. हरियाली अमावस

तर्ज : कभी प्यासे को पानी.

यदि मन में हरियाली छाई नहीं।
तो बाहर की हरियाली से क्या फायदा ।।
हरियाली अमावश हमने मनाई।

र मर्म न समझा तो क्या फायदा।।टेर।।

हरियाली अमावस शिक्षा हमें दे रही।
मैंने सर्वस्व लुटाके यह पाया खजाना।।
तुम भी दान शील तप भाव से साधो।
तो पावोगे तुम भी यही फायदा।।1।।

सड़े गले विचारों की अमावस की।
काली घटा जो दिल में छा रही।।
सम्यग्ज्ञान का दीप जलाओगे।
तो पावोगे तुम भी यह फायदा।।2।।

प्रकृति का हर कण है बोध भरा।
जो प्रतिक्षण प्रेरणा देता हमें।।
'मुनि धर्मेश' कहे नहीं लेवे कोई।
तो दिवस मनाने से क्या फायदा।।3।।

203. प्रभु ऋषभ दीक्षा जयंती

तर्ज : आओ-2 रे.

धारे धारे हैं ऋषभ जिनेश्वर देखो दीक्षा आज।।टेर।।

माँ मरुदेवी पिता नाभि के नन्दन जो सुखकार।।
सुनंदा सुमंगला राणी सुत सौ थे श्रेयकार।।1।।

ब्राह्मी सुन्दरी सुता दो प्यारी सर्व कला निधान।
भोगभूमि में कर्मभूमि की शिक्षा दी हित जान।।2।।

लोकान्तिक देवों की अर्ज सुनकर चरण मझार।
माँ मरुदेवी से संयम की अर्ज करे सुखकार।।3।।

माता कहती बेटा ऋषभ तूं करता सब हितकार।
फिर क्या पूछे बात-बात में कर ले जो श्रेयकार।।4।।

तब प्रभु ऋषभ बैठ पालकी आये वनिता बाहर।
वस्त्राभूषण सब तज करके करे लोच जिसवार।।5।।

माँ मरुदेवी देख विलख पड़ी इन्द्र करे उच्चार।
तब एक मुष्ठि रख प्रभुजी लेते देव दुष्य वस्त्र धार।।6।।

सव्वं अकरणिज्ज जोगं पच्चक्खामि की ले प्रतिज्ञा धार।
उग्र विहार कर देते जब माँ करती दुःख अपार।।7।।

समझाकर भरतेश्वर दादी को लाते महल मझार।
'मुनि धर्मेश' ने महोत्सव मनाया ब्यावर में सुखकार।।8।।

204. जय जैन धर्म की बोलो सा

तर्ज : जय बोलो महावीर.

जय जैन धर्म की बोलो सा पुण्यवानी के पट खोलो सा।।टेर।।

भव भव का पुण्य उदय आया जब जाकर जैन धर्म पाया।
इसकी महिमा को तोलो सा।।1।।

जिनेन्द्र देव ने फरमाया इसलिये जैन धर्म कहलाया।
इसको समझ अपना तोलो सा।।2।।
यह राग-द्वेष ही दुःख दाता जो जीते पावे सुख साता।
इस अनमोल वचन को झेलो सा।।3।।
जो भी जन इसको अपनावे वह सच्चा जैनी बन जावे।
नहीं जात-पात रो रोलो सा।।4।।
निज कर्म ही सुख-दुःख का दाता सुदेव गुरु पर रखकर आस्ता।
'धर्मेश' कर्म मल धो लो सा।।5।।

205. देवकी रानी का झुरना

तर्ज : धीरे चलो.

यों कहती देवकी रानी नैनों में बरस रहा पानी।।टेर।।
मैंने सोचा मन मांही, मारे कंस सुत दुःखदाई रे।।1।।
तुझे सौंपा यशोदा को जाई जीवित रहा वहाँ सुखदाई रे।।2।।
पर रहस्य खुला आज भारी, वे छः ही जीवित इसवारी रे।।3।।
मुनि बनकर साधना करते, आज महल पधारे विचरते रे।।4।।
उन्हें देख संशय मन आया, जा प्रभु चरणों में मिटाया रे।।5।।
कर दर्शन मन हरषाई, मन चिंतन कर दुःख पाई रे।।6।।
मैंने सात-सात नन्दन जाये, पर एक न गोद खिलाये।।7।।
इस बात का दुःख मन भारी, हो रहा कृष्णमुरारी रे।।8।।

सुन कृष्ण आश्वासन देता जा तेला का तप करता रे।।9।।
जब पुत्र एक जन्मता तब गजसुख नाम है रखता।।10।।
'मुनि धर्मेश' ने गीत बनाया और वल्लभनगर में गाया।।11।।

206. गुणियों को वंदन

तर्ज : रेशमी सलवार-

कर गुणियों को तुम वंदन बनो सब ज्ञानी जी।
यों कहती देखो साफ श्री जिनवाणीजी।।टेर।।

नकली असली फूलों का कर निर्णय भंवर मंडराता।
मिट्टी आदि के फल को नही पक्षी भी है खाता।।
वात लो मानी जी।।1।।

नवकार मंत्र में गुणियों को ही है नमन वताया।
नहीं व्यक्तिभेष को वंदन ज्ञानी ने फरमाया।।
सत्य लो जानी जी।।2।।

पासत्था उसन्ना कुशीला संसत्ता अपछंदा।
इन पॉचों को वंदन से नहीं कटता कर्म का फंदा।।
जान सुज्ञानी जी।।3।।

जो भक्तिभाव से वंदन गुणियों को नित उठ करते।
'धर्मेश' कर्म की निर्जरा वे ही भविजन करते।।
वांधा पुण्यवानीजी।।4।।

207. पर्युषण पर्व

तर्ज : धीरे चलो बिरज रा वासी.

सब सहज सरल बन जाओ, पर्युषण पर्व मनाओ रे। टेर।।
यह पर्व संदेशा लाया, सुनो सब ही बायां भायां रे।।1।।
संवत्सर का लेखा करना, निज दोषों को पकड़ना रे।।2।।
फिर आलोचना उनकी करना कर निंदा गर्हा तजना रे।।3।।
मिच्छामि दुक्कडं देना, फिर प्रायश्चित्त भी लेना रे।।4।।
सर्व जीवराशि खमाना, और नम्र बन झुक जाना रे।।5।।
श्रावण प्रतिपदा भाई, पचासवें दिन सुखदाई रे।।6।।
प्रभु वीर ने खुद मनाई, यह रीत वहाँ से आई रे।।7।।
'मुनि धर्मेश' आज चेतावे, पर्युषण पर्व मनावे ने।।8।।

208. थोड़ा लाजो रे

तर्ज : डंको बाजे-2.

थोड़ा लाजो रे थोड़ा लाजो रे दुष्कर्म करता निज मन में। टेर।।
दुर्लभ मानव तन ओ पायो, जैन धर्म सवायो रे।।1।।
नश्वर तन, धन और यौवन, क्षणभंगुर बतलायो रे।।2।।
करके याद रावण मणिरथ को, दुष्कर्म छिटकाओ रे।।3।।
राम कृष्ण महावीर याद कर 'धर्म' पथ अपनाओ रे।।4।।

209. श्रावक का वचन व्यवहार

तर्ज : घुड़लो घूमेला जी-

जब करो वचन व्यवहार, श्रावकजी ध्यान धरो जी ध्यान धरो।
थे जिनवाणी उर धार।।टेर।।
पहली बात तो थोड़ा बोलो, दूजो काम पड़िया ही बोलो।
मीठो और रसदार।।1।।
अवसर देखकर ही बोलो, अहंकार रहित मुँह खोलो।
मर्म वचन निवार।।2।।
सूत्र सिद्धान्त न्याय नीति पर, सब जीवों को जो हो हितकर।
करके गहन विचार।।3।।
नाना गुरु दीक्षा दिवस पर, सैक्टर पाँच उदयपुर अंदर।
'धर्मेश' कहे सुखकार।।4।।

210. सब बातों का मूल

तर्ज : धरती धोरां री-

कहती जिनवाणी ओऽहो कहती जिनवाणी।।टेर।।
पहले मूल बात लो जानी फिर तुम करो क्रिया बन ज्ञानी।
यह है मुक्ति की निशानी।।1।।
सब रसों का मूल है पानी, सब पापों का लोभ लो मानी।

कलह का मूल हंसी लो जानी।।2।।
रोग का मूल अजीर्ण मानी, मरण मूल स्नेह लो जानी।
इसको तजते हैं वो ज्ञानी।।3।।
धर्म का मूल दया सुखदाई, विनय गुण विकसाता भाई।
कहता 'मुनि धर्मेश' सभा में गाई।।4।।

211. पार्श्व जयन्ति

तर्ज : जय बोलो जय बोलो.

गुण गाओ गुण गाओ पार्श्व प्रभु के गुण गाओ।
तिर जाओ-2 भवसागर से तिर जाओ।।टेर।।

अश्वसेन नृप के सुत प्यारे, वामादे के नयन सितारे।
जन्म लिया सुखकार।।1।।
पौष बदी दसमी सुखकारी, वाराणसी में छाई भारी।
खुशियाँ अपरम्पार।।2।।
तीन ज्ञान को लेकर आये, कमठ तापस को देख बताये।
जलता नाग दुःखकार।।3।।
बाहर निकाल महामंत्र सुनाया, श्रद्धा से वह मृत्यु पाया।
बना धरणेन्द्र सुखकार।।4।।
तीस वर्ष में संयम धारा, कमठ उपसर्ग देवे दुःखकारा।
लेवे समता धार।।5।।

वर्ष चौरासी तप कर भारी, केवलज्ञान वरा सुखकारी।
तीर्थ स्थापे चार।।6।।
पारसनाथ जयन्ति आई ,'मुनि धर्मेश' ने आज मनाई।
मंगलम् में सुखकार।।7।।

212. उपकार से मुक्ति

तर्ज : होवे धर्म प्रचार-

जो पाता आशीर्वाद मात-पितु-गुरुजन का।
वह पाता सुख अपार, मात पितु गुरुजन का।। टेर।।

जिन्होंने महाकष्ट उठाकर नौ-नौ महीने गर्भ में रखकर।
फिरी उठाकर भार।।1।।
फिर जन्म देकर सही वेदना, नहीं जागृत थी अपनी चेतना।
बाल्यावस्था मझार।।2।।
भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी से, रखा बचाकर हमको उससे।
निज तन की चिंता निवार।।3।।
मेहनत से जो भी धन पाया, खर्च पिता ने हमें पढाया।
फिर रचा विवाह सुखकार।।4।।
सब तरह से योग्य बनाकर अपना धन वैभव लुटाकर।
हर्षित हुए अपार।।5।।
अब सोचो कर्त्तव्य तुम्हारा सुपुत्र कुपुत्र के नाते सारा।
'धर्मेश' हृदय मझार।।6।।

213. पूज्य गणेश पुण्यतिथि

तर्ज : कद आवोला सांवरिया.

आवो-आवो हो म्हांने घणा याद गणेश गुरुवरजी।
थांने सुमरा दिवस ने रात।टेर।।

वल्लभनगर में जन्म लियो था मारु कुल रे मांही।
सायबलालजी इन्द्राबाई रे मन खुशियाँ छाई।।
वे तो गणेश दियो प्यारो नाम।।1।।

यौवन वय में कमलाबाई से विवाह रचायो भारी।
केशरीमलजी केसरबाई री सुता थी जो प्यारी।।
पर काल क्रूर विकराल।।2।।

सारा कुटुम्ब ने ग्रसित कर्‌यो वो विरक्तभाव उमड़्यो।
पूज्य जवाहर वाणी सुनने संयम लियो सुखदायो।।
मोती मुनि रो शिष्यत्व धार।।3।।

लख प्रतिभा गुरु हुक्मगच्छ रो आचार्य बणायो।
सादड़ी सम्मेलन में सब मिल उपाचार्य बणायो।।
दे संचालन रो भार।।4।।

बढ़तो स्वच्छन्द आचरण लखकर पदवी दी छिटकाई।
साधुमार्ग री स्थापना करने शांतक्रान्ति विकसाई।।
नाना गुरु ने दे उत्तराधिकार।।5।।

कर संथारो उच्च भाव सूं स्वर्ग में जाय विराज्या।
माघ बदी द्वितीया रो ओ दिन याद दिलावे ताजा।।
गावे 'धर्मेश' गुण श्रद्धा धार।।6।।

महालाभ हो = महानिर्जरा महापर्यवसान हो, ऐसे काम क्या हैं?

1 ज्ञान की अपेक्षा

1 एक भी जिन वचन सुने तो महाला हो,
2 एक भी गाथा पद कंठस्थ करें,
3 एक भी पद दुहरावे,
4 सुनी हुई धर्मकथा दूसरों को सुनावे,
5 धर्म कथा सुननेवालों को प्रभावना दे,
6 एक बार भी उत्तम स्वप्न देखें,
7 एक बार भी जातिस्मरण ज्ञान हो,

2 दर्शन की अपेक्षा

1 एक बार भी सत दर्शन करें,
2 एक बार साधु को वदन करें,
3 एक बार भी श्रावक को जय जिनेन्द्र कहे,
4 एक बार भी नवकार मंत्र गिने,
5 एक भी माला फेरे,
6 एक बार भी अहत आदि का गुणगान करे,
7 एक भी स्वधर्मी की वैयावत्त्व करें,
8 एक बार भी संतों को अपने घर उतारे धर्मस्थान दे।

3 चारित्र की अपेक्षा

1 वारह व्रतों में स एक भी व्रत लें,
2 एक भी सामायिक करें,
3 एक यार भी सवर करें,
4 एक यार भी 14 नियम धारे,
5 एक यार भी सुपात्र दान दे,
6 एक रात्रि भी शील पाले,
7 एक जीव को भी अभयदान दे,
8 एक भी व्यसन छोड़ें,

4 तप की अपेक्षा

1 एक भी रात्रि भोजन छोड़े,
2. एक भी नवकारसी करें,
3 एक यार भी बिआसना करें,
4 1 घण्टा भी चौविहार करें,
5 एक यार भी थाली धोकर पीये,
6 एक यार भी सचित आहार का त्याग करें,
7 रात्रि को सागारी संथारा करें,
8 एक यार भी प्रतिक्रमण करें;
9 एक यार भी कायोत्सर्ग करें।

5 भावना की अपेक्षा

1 अनित्यादि 12 भावना भावे,
2 मैत्री आदि 4 भावना भावे,
3 संवेग वैराग्य के भाव रखें,
[illegible]न मनोरथ का चिन्तन करें,
5 स्वधर्मी सघ में मध्यस्थ रहे,
6 स्व संतति दीक्षा ल ऐसा भाव रखे,
7 भवोभव जैन धर्म मिले ऐसी भावना करें,
8 भविष्य के लिए पच्चक्खाण संग्रह करें।